



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 314]

नई दिल्ली, मंगलवार, सितम्बर 18, 2018/भाद्र 27, 1940

No. 314]

NEW DELHI, TUESDAY, SEPTEMBER 18, 2018/BHADRA 27, 1940

वाणिज्य विभाग

(वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय)

(व्यापार उपचार महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 18 सितंबर, 2018

अंतिम जांच परिणाम

**विषय:** चीन जनवादी गणराज्य के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "70 ली काउंट से कम के फ्लेक्स यार्न" के आयातों से संबंधित पाटन-रोधी शुल्क की जांच।

**फा.सं. 6/3/2018-डीजीएडी.**—यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथा संशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटन-रोधी शुल्क का आकलन और संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे पाटन-रोधी नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए।

- और यतः मेसर्स जया श्री टैक्सटाइल्स, जो कि मेसर्स ग्रासिम इंडस्ट्रीज लिमिटेड की एक यूनिट है (जो कि पहले आदित्य बिड़ला नुवो लिमिटेड की जया श्री टैक्सटाइल्स नामक एक यूनिट थी) (जिसे आगे 'आवेदक' अथवा 'घरेलू उद्योग' कहा गया है) ने वर्तमान मामले में अधिनियम और नियमावली के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे 'प्राधिकारी' भी कहा गया है), व्यापार उपचार महानिदेशालय (पूर्ववर्ती पाटन-रोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय) के समक्ष एक आवदेन-पत्र प्रस्तुत किया है, जिसमें उसने चीन जनवादी गणराज्य (जिसे आगे 'संबद्ध देश' कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 70 ली काउंट से कम के फ्लेक्स यार्न (जिसे आगे 'संबद्ध वस्तु' अथवा 'विचाराधीन उत्पाद' कहा गया है) के पाटित आयातों से संबंधित पाटन-रोधी शुल्क की जांच शुरू करने और उस पर उपयुक्त शुल्क लगाने का अनुरोध किया है।
- और यतः आवदेक द्वारा प्रस्तुत प्रथम दृष्टया साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी ने भारत के राजपत्र असाधारण में प्रकाशित दिनांक 7 फरवरी, 2018 की अधिसूचना संख्या 6/3/2018-डीजीएडी द्वारा एक सार्वजनिक अधिसूचना जारी की थी, जिसके द्वारा उपरोक्त नियमावली के उप-नियम 5 के अनुसार पाटन-रोधी जांच शुरू की गई थी, ताकि संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से

निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के कथित पाटन की मौजूदगी, उसकी मात्रा और प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटन-रोधी शुल्क की ऐसी राशि की सिफारिश की जा सके जिसे यदि लगाया जाए तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिये पर्याप्त होगी।

#### क. प्रक्रिया

4. प्राधिकारी द्वारा उपरोक्त जांच शुरू करने के लिए अधिसूचित सार्वजनिक सूचना जारी करने के बाद इस जांच में निम्नोक्त वर्णित क्रिया-विधि का अनुसरण किया गया है:
  - (i) प्राधिकारी ने उपरोक्त नियमाली के नियम 5 के उप-नियम (5) के अनुसार जांच की कार्रवाई शुरू करने से पहले पाटन-रोधी आवेदन-पत्र प्राप्त होने के बारे में भारत में संबद्ध देश के दूतावास को सूचित किया था।
  - (ii) प्राधिकारी ने जांच शुरू करने संबंधी अधिसूचना की एक प्रति भारत में संबद्ध देश के दूतावास, संबद्ध देश से ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों, भारत में ज्ञात आयातकों, अन्य भारतीय उत्पादकों और घरेलू उद्योग को, आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पत्रों के अनुसार भेजी थी और उनसे अनुरोध किया था कि वे जांच शुरू करने संबंधी अधिसूचना की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने लिखित विचारों से अवगत करा दें।
  - (iii) प्राधिकारी ने उपरोक्त नियमावली के नियम 6 (3) के अनुसार आवेदन-पत्र के अगोपनीय वृत्तान्त की एक प्रति ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों और संबद्ध देश के दूतावास को और भारत में आयातकों/प्रयोक्ताओं को भेजी थी।
  - (iv) भारत में संबद्ध देश के दूतावास से यह भी अनुरोध किया गया था कि वह संबद्ध देश से निर्यातकों/उत्पादकों को यह सलाह दें कि वे निर्धारित समय-सीमा के भीतर प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत कर दें। उत्पादकों/निर्यातकों को भेजे गए पत्र और प्रश्नावली की प्रति भी, संबद्ध देश से ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों के नामों और पत्रों की प्रति के साथ दूतावास को भेजी गई थी।
  - (v) नियमावली के नियम 6 (4) के अनुसार प्राधिकारी ने संबद्ध सूचना मंगाने के लिए निम्नलिखित ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को निर्यातक की प्रश्नावली भेजी थी:-
    - (क) झेझियांग गोल्डन ईगल कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
    - (ख) हेल्लोंगजियांग यानशोऊजिजिया फ्लेक्स टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
    - (ग) हुआओ एक्सिंग इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
    - (घ) टोंगलिंग वर्ल्डबेस्ट रेमी कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
    - (ङ) होंगझोऊ शांगलू सिल्क कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
  - (vi) उपरोक्त अधिसूचना के प्रत्युत्तर में निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों ने प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं:-
    - (क) ग्रेट इस्टर्न टेक्सटाईल्स (टोंगलिंग) कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
    - (ख) निंगबो बिन बे ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
    - (ग) जिक्सिंग सनसाईन लिनन टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
    - (घ) चांगझाऊ मेल्युन फ्लेक्स टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
    - (ङ) टुंग गा लिनन एंड कॉटन (चांगझाऊ) कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
    - (च) हुआओ एक्सियांग इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
    - (छ) झेझियांग एक्सियांग फ्लेक्स टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
    - (ज) झेझियांग गोल्डन ईगल स्पन सिल्क कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
    - (झ) झेझियांग गोल्डन ईगल यिली लिनन टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
    - (ञ) झेझियांग जिन्युयान फ्लेक्स कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
    - (ट) झेझियांग किंगडम लिनन कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
    - (ठ) हांगझाऊ शांगलू सिल्क कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
    - (ड) जियांगसू जिन्युयान फ्लेक्स कंपनी लिमिटेड, चीन जनवादी गणराज्य
  - (vii) चीन जनवादी गणराज्य में ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को तथा साथ ही भारत में चीन जनवादी गणराज्य के दूतावास को बाजार अर्थव्यवस्था निरूपण (एमईटी) की प्रश्नावली भेजी थी और उनसे अनुरोध किया था कि वे निर्धारित समय-सीमा के भीतर

प्राधिकारी को संबद्ध सूचना प्रदान करें। तथापि, चीन से किसी भी प्रतिवादी उत्पादक/निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था निरूपण (एमईटी) का दावा नहीं किया है।

- (viii) प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 6 (4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने के लिए भारत में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को आयातक की प्रश्नावलियां भेजी थीं:-
- |  |   |
|--|---|
| (क) बॉम्बे रेयन फैशन्स लिमिटेड, महाराष्ट्र   | (ख) सियाराम सिल्क मिल्स लिमिटेड, महाराष्ट्र                 |
| (ग) रेमण्ड लक्सरी कॉटन्स लिमिटेड, महाराष्ट्र | (घ) श्री दामोदर यार्न मेन्युफैक्चरिंग प्राईवेट लिमिटेड, दमन |
| (ङ) भारत विजय मिल्स, गुजरात                  |   |
- (ix) जांच शुरू करने संबंधी सूचना का निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ताओं/उपभोक्ताओं ने प्रत्युत्तर दिया है और प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं तथा याचिकादाता के आरोपों और जांच शुरू करने के संबंध में विस्तार से उत्तर दिए हैं:-
- |  |   |
|--|---|
| (क) टेक्सवेंचर्स एलएलपी  | (ख) कोटेक्स इंडस्ट्रीज प्राईवेट लिमिटेड |
| (ग) सिल्वर लाइन फैशन फैब्रिक्स लिमिटेड   | (घ) उज्जवल टेक्सटाईल्स                  |
| (ङ) मेसर्स त्रिजेश कापेरिशन त्रिजेश नेचुरल फाईबर एंड फैब्रिक्स (इंडिया) प्राईवेट लिमिटेड | (च) मेसर्स विराट फैशन                   |
| (छ) डब्ल्यूएफबी बेयर्ड एंड कंपनी (इंडिया) प्राईवेट लिमिटेड                               |   |
- (x) उपरोक्त नामित आयातकों के अतिरिक्त निम्नलिखित आयातकों ने चाईना चेम्बर ऑफ कामर्स ऑफ इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट ऑफ टेक्सटाईल एंड अपरेल के साथ निर्धारित समय-सीमा के भीतर याचिका और जांच शुरू किए जाने पर व्यापक आपत्ति व्यक्त की है:-
- |   |
|---|
| (क) के.के.पी. फाईन लिनन प्राईवेट लिमिटेड  |
| (ख) जगदम्बा टेक्सटाईल्स प्राईवेट लिमिटेड  |
| (ग) अनन्तनाथ सिल्क मिल्स प्राईवेट लिमिटेड |
- (xi) उपरोक्त के अतिरिक्त निम्नलिखित हितबद्ध पक्षकारों ने प्राधिकारी द्वारा निर्धारित समय-सीमा के भीतर जांच शुरू करने संबंधी अधिसूचना के प्रत्युत्तर में पत्र प्रस्तुत किए हैं:-
- |  |
|--|
| (क) लिन्यान टेक्सटाईल्स                                    |
| (ख) एल चम्पडानी इंडस्ट्रीज लिमिटेड                         |
| (ग) जैनवाटिल इम्पलेक्स                                     |
| (घ) डब्ल्यूएफबी बेयर्ड एंड कंपनी (इंडिया) प्राईवेट लिमिटेड |
- (xii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों के अगोपनीय वृत्तान्त को एक सावर्जनिक फाईल के रूप में उपलब्ध कराया है, जो कि हितबद्ध पक्षकारों की जांच के लिए खुला रखा गया है।
- (xiii) घरेलू उद्योग सहित हितबद्ध पक्षकारों से पीसीएन-वार सूचना मंगाने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी ने दिनांक 22.05.2018 की अधिसूचना द्वारा पीसीएन अधिसूचित किया था, ताकि उचित तुलना की जा सके।
- (xiv) वाणिज्य आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से अनुरोध किया गया था कि वह विगत तीन वर्षों के लिए संबद्ध वस्तुओं के कारोबार-वार आयात के आंकड़े प्रदान करें, जो कि प्राधिकारी को प्राप्त हो गए थे। प्राधिकारी ने कारोबार की विधिवत् जांच करने के बाद आयातों की मात्रा का परिकलन और आवश्यक विश्लेषण करने के लिए डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों पर विश्वास किया है।
- (xv) सामान्यतया स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों (जीएएपी) और पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-3 के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की लागत और उन्हें निर्मित करने और बेचने की लागत के आधार पर क्षति रहित कीमत का आकलन किया गया है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कमतर पाटन-रोधी शुल्क, घरेलू उद्योग की क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।

- (xvi) प्राधिकारी ने नियम 6 (6) के प्रावधान के अनुसार हितबद्ध पक्षकारों को अपने मौखिक विचार व्यक्त करने का अवसर प्रदान करने के लिए 5 जून, 2018 को एक सार्वजनिक सुनवाई की थी, जिसमें घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने भाग लिया था। ऐसे सभी हितबद्ध पक्षकारों से, जिन्होंने इस मौखिक सुनवाई में अपने विचार मौखिक रूप से व्यक्त किए थे, अनुरोध किया गया था कि वे मौखिक रूप से व्यक्त किए गए अपने विचारों को लिखित रूप में भी प्रस्तुत करें। पक्षकारों को यह भी सलाह दी गई थी कि वे प्रतिवादी पक्षकारों द्वारा किए गए लिखित निवेदनों को प्राप्त करें और उसके बाद उन पर अपने प्रत्युत्तर प्रदान करें।
- (xvii) जितना आवश्यक समझा गया था, घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त सूचना का सत्यापन किया गया था और ऐसी सत्यापित सूचना पर विश्वास किया गया है।
- (xviii) संबद्ध देशों में उत्पादकों और निर्यातकों का भी सत्यापन किया गया था और कुछ निर्यातकों का सत्यापन, निदेशालय में सूचना मंगा कर कार्यालय में अध्ययन करके भी किया गया था।
- (xix) वर्तमान समीक्षा जांच के लिए जांच अवधि अक्टूबर, 2016 से सितंबर, 2017 तक (12 महीनों) की है। क्षति विश्लेषण के परिप्रेक्ष्य में प्रवृत्तियों की जांच में वर्ष 2014-15, 2015-16, 2016-17 और जांच अवधि को भी शामिल किया गया है।
- (xx) जांच की कार्यवाई के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए और प्रासंगिक पाए गए निवेदनों का निदान, प्राधिकारी द्वारा इस अंतिम जांच परिणाम में किया गया है।
- (xxi) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना की गोपनीयता के दावों की उनकी पर्याप्तता के संदर्भ में जांच की गई है। प्राधिकारी ने संतुष्ट होने पर जहां कहीं भी उचित था, गोपनीयता के ऐसे दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना को गोपनीय समझा है और उसे अन्य पक्षकारों के समक्ष प्रकट नहीं किया है। जहां कहीं भी संभव हुआ है, वहां गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले हितबद्ध पक्षकारों को निदेश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना का अगोपनीय वृत्तान्त भी प्रस्तुत करें।
- (xxii) 13.08.2018 को एक प्रकटन विवरण जारी किया गया था, जिसमें निर्दिष्ट प्राधिकारी के विचाराधीन अत्यावश्यक तथ्य निहित थे। ऐसे प्रकटन विवरण पर अपनी टिप्पणियां, यदि कोई हैं, प्रस्तुत करने के लिए दिनांक 21.08.2018 तक का समय दिया गया था। प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त प्रकटन पश्चात टिप्पणियों पर उपयुक्त रूप से विचार कर लिया है।
- (xxiii) किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा इस दस्तावेज में प्रस्तुत \*\*\*सूचना, अंतिम जांच परिणाम में नकारात्मक संख्या/सीमा निर्दिष्ट करती है।
- (xxiv) प्राधिकारी द्वारा जांच अवधि के लिए अपनाई गई औसत विनिमय दर, 1 अमरीकी डालर = 66.70 रूपए है।

#### **ख. विचाराधीन उत्पाद और "समान वस्तु"**

##### **घरेलू उद्योग के विचार**

5. घरेलू उद्योग के विचार निम्नानुसार हैं:-

- (i) वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद, "70 ली काउंट (42 एनएम) से कम के फ्लेक्स यार्न" है और उससे अधिक ली काउंट को विशेष रूप से विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर रखा गया है।
- (ii) फ्लेक्स यार्न 100% लिनन यार्न है। यह एक सेल्युलॉसिक फाईबर है, जिसकी अत्यधिक कंडक्टिविटी होती है जो कि प्राकृतिक रूप से एंटीमिरोबियल, एंटीफंगल गुणक्षमता युक्त होता है। यार्न फ्लेक्स फाईबर से निर्मित यार्न को फ्लेक्स यार्न/लिनन यार्न कहा जाता है। वर्तमान याचिका के प्रयोजनार्थ कपास, हेम्प, पटसन और रेमी जैसे अन्य सभी प्राकृतिक सेल्युलॉसिक फाईबर, विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर हैं। यदि विचाराधीन उत्पाद को लिनन/फ्लेक्स यार्न के रूप में वर्णित किया जाता है, तो इसे सीमा-शुल्क और बाजार की शब्दावली में अच्छी तरह से समझा जाएगा।
- (iii) फ्लेक्स यार्न का उपयोग फ्लेक्स फैब्रिक बनाने के लिए किया जाता है। फ्लेक्स फैब्रिक को वर्दियों, सूटों, सेपेरेटरों, स्कर्टों, जेकेटों, पेंटों, ब्लाऊजों, कमीजों, बच्चों के पहने जाने वाले कपड़ों जैसे अपेरल और परदों, ड्रेपरों, अपहोल्स्ट्री, बिस्तरों की चादरों, मेजपोशों शीटों, डिश टॉवलों आदि जैसे गृह वस्त्रों के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

- (iv) चीन जनवादी गणराज्य से निर्यातित और भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। वर्तमान मामले में घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देश से आयातित वस्तुएं भौतिक और रसायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्यों और उपयोगों, उत्पाद विनिर्देशनों, वितरण और विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण आदि जैसी अनिवार्य उत्पाद विशेषताओं की दृष्टि से तुलनीय है। उपभोक्ता इन दोनों वस्तुओं को एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त कर सकते हैं और कर रहे हैं। ये दोनों वस्तुएं तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं और इस प्रकार ये समान वस्तुएं हैं।
- (v) विचाराधीन उत्पाद का सामान्यतया आयात एचएस संहिता 5306 1090 और 5306 2090 के अंतर्गत किया जाता है। तथापि, इसका आयात अन्य एचएस संहिताओं के अंतर्गत भी किया जा सकता है। तथापि, यह स्पष्ट किया जाता है कि एचएस संहिताएं केवल निर्देशात्मक मात्र हैं तथा उत्पाद का विवरण सभी परिस्थितियों में अभिभावी रहेगा।
- (vi) मॉडल-समानता मानदंड अथवा पीसीएन प्रणाली - निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पीसीएन का प्रस्ताव करने के बाद पीसीएन प्रणाली का निर्णय लिया है और वे उस पर सभी हितबद्ध पक्षकारों से टिप्पणियां प्राप्त कर रहे हैं। याचिकादाता ने घरेलू उद्योग के उत्पादन की पीसीएन-वार लागत सहित सभी संबद्ध सूचना रिकार्ड पर प्रस्तुत कर दी है।
- (vii) लंबे/छोटे फाईबर, मूल रंग/सेमी-ब्लीचड आदि मानदंड मुख्यतया वर्तमान उत्पादन नियंत्रण संख्या में समाविष्ट हैं। प्रत्येक प्राचल उत्पादन नियंत्रण संख्या को आधार नहीं हो सकता है। उत्तरदायित्व, उपयुक्तता और आवश्यकता को देखने की आवश्यकता है। इस संबंध में प्राधिकारी उचित रूप से निर्णय ले सकते हैं।
- (viii) फ्लेक्स यार्न के उत्पादन की लागत में तीन प्राचलों से अंतर होता है - (क) ली काउंट, (ख) क्या यार्न छोटे अथवा लंबे फाईबर से निर्मित है और (ग) क्या यार्न धूसर अथवा रंजित है। तथापि, (क) आयातों के आंकड़ों का विश्लेषण करने से यह पता चलेगा कि 95% से भी अधिक आयात, धूसर रूप में हैं क्योंकि यार्न के रंजित रूप के लिए बाजार बहुत सीमित है, (ख) यार्न या तो छोटे अथवा लंबे फाईबर से निर्मित किया जाता है। ऐसे काउंट हैं, जहां दोनों का उपयोग किया जाता है तथा छोटे और लंबे फाईबर का अनुपात विनिर्माता पर निर्भर करता है। तथापि, हितबद्ध पक्षकारों ने यह नहीं दर्शाया है कि उन्होंने अपनी बिक्रियों के रिकार्ड में इन यार्न को कैसे विशिष्ट रूप से श्रेणीबद्ध किया है और पृथक रखा है और कैसे सूचना को सत्यापित किया जा सकता है।

### **प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के विचार**

6. प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचार निम्नानुसार हैं:-
- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा प्रस्तावित पीसीएन, वर्तमान जांच में उचित तुलना करने के लिए उचित नहीं हो सकता है। प्रस्तावित पीसीएन विश्लेषण को अत्यधिक सीमा तक सरल बनाता है क्योंकि संबद्ध उत्पाद की कीमत को प्रभावित करने के लिए ली काउंट एक मात्र कारक नहीं है। संबद्ध वस्तुओं की कीमत लंबे/छोटे फाईबर, मूल रंग/सेमी ब्लीचड आदि द्वारा भी प्रभावित हो सकती है। ऐसे अंतर महत्वपूर्ण हैं और ये लागत और बिक्री कीमत को प्रभावित करते हैं।
- (ii) समान एनएम संख्या से लंबे फाईबर से निर्मित संबद्ध उत्पाद की कीमत, सामान्यतया छोटे फाईबर से निर्मित उत्पाद की कीमत से अधिक होती है और मूल रंग के संबद्ध उत्पाद की कीमत, प्रायः सेमी-ब्लीचड उत्पाद की कीमत से अधिक होती है। प्रतिवादियों का प्रस्ताव है कि लंबे/छोटे फाईबर तथा मूल रंग/सेमी-ब्लीचड के अनुसार पीसीएन भी विशिष्ट रूप से श्रेणीबद्ध होना चाहिए।

### **प्राधिकारी द्वारा जांच**

7. वर्तमान जांच के लिए विचाराधीन उत्पाद, "70 ली काउंट (42 एनएम) से कम का फ्लेक्स यार्न" है।
8. यह एक सेल्युलॉसिक फाईबर है, जिसकी अत्यधिक कंडक्टिविटी होती है जो कि प्राकृतिक रूप से एंटीमिरोबियल, एंटीफंगल गुणधर्मता युक्त होता है। यार्न आम तौर पर 100% फ्लेक्स फाईबर से बना होता है और इसे लिनन यार्न या फ्लेक्स यार्न कहा जाता है। फ्लेक्स यार्न या लिनन यार्न बनाने के लिए फ्लेक्स फाईबर को अन्य फाईबर के साथ भी मिश्रित किया जा सकता है। फ्लेक्स यार्न का मुख्य उपयोग फ्लेक्स फैब्रिक बनाने के लिए किया जाता है। फ्लेक्स फैब्रिक को अपरेल और गृह वस्त्रों के लिए प्रयुक्त किया जाता है।
9. वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ कपास, हेम्प, पटसन और रेमी जैसे अन्य सभी प्राकृतिक सेल्युलॉसिक फाईबर, विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर हैं। 70 और अधिक ली के फ्लेक्स यार्न को विशेष रूप से विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर रखा गया है।

10. प्राधिकारी का पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ उचित तुलना करने के लिए पीसीएन को अधिसूचित करने का प्रस्ताव है और उन्होंने प्रस्तावित पीसीएन के संबंध में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों से विचार प्रकट करने का अनुरोध किया है। सभी संबंधित हितबद्ध पक्षकारों ने सूचना प्रस्तुत कर दी है। कुछ हितबद्ध पक्षकारों का यह तर्क है कि वर्तमान जांच में उचित तुलना करने के लिए प्रस्तावित पीसीएन उचित नहीं होगा। प्राधिकारी ने सभी निवेदनों पर विचार किया है और सभी संबद्ध प्राचलों पर विचार करने के बाद वर्तमान मामले में तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित पीसीएन अधिसूचित किए हैं:-

क्रमांक	ली श्रेणी	एनएम श्रेणी	पीसीएन
1.	5 ली तक	3 एनएम तक	01
2.	5 से अधिक और 10 से कम	3 से अधिक और 6 से कम	02
3.	10 से अधिक और 15 से कम	6 से अधिक और 9 से कम	03
4.	15 से अधिक और 20 से कम	9 से अधिक और 12 से कम	04
5.	20 से अधिक और 25 से कम	12 से अधिक और 15 से कम	05
6.	25 से अधिक और 30 से कम	15 से अधिक और 18 से कम	06
7.	30 से अधिक और 35 से कम	18 से अधिक और 21 से कम	07
8.	35 से अधिक और 40 से कम	21 से अधिक और 24 से कम	08
9.	40 से अधिक और 45 से कम	24 से अधिक और 27 से कम	09
10.	45 से अधिक और 50 से कम	27 से अधिक और 30 से कम	10
11.	50 से अधिक और 55 से कम	30 से अधिक और 33 से कम	11
12.	55 से अधिक और 60 से कम	33 से अधिक और 36 से कम	12
13.	60 से अधिक और 65 से कम	36 से अधिक और 39 से कम	13
14.	65 से अधिक और 70 से कम	39 से अधिक और 42 से कम	14

11. प्राधिकारी ने रिकार्ड पर उपलब्ध सूचना पर विचार किया है और यह पाया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देश से आयातित विचाराधीन उत्पाद भौतिक विशेषता, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी कार्यों और उपयोगों, उत्पाद विनिर्देशनों, कीमत निर्धारण, वितरण और विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण के संदर्भ में तुलनीय हैं। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देश से आयातित वस्तुएं नियमावली के अनुसार समान वस्तुएं हैं। ये दोनों वस्तुएं तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त की जा सकती हैं। प्राधिकारी का यह मानना है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुएं और संबद्ध देश से आयातित विचाराधीन उत्पाद समान वस्तु हैं और ये पाटन-रोधी नियमावली के नियम 2 (घ) में उल्लिखित परिभाषा के दायरे के भीतर आती हैं।
12. विचाराधीन उत्पाद को सामान्यतया सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 53 में शीर्ष संख्या 5306 और उप-शीर्ष 53061090 और 53062090 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। तथापि, सीमा-शुल्क की उक्त एचएस संहिताएं निर्देशात्मक मात्र मानी जाती हैं और वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ उत्पादन विवरण निर्णायक है।

**ग. घरेलू उद्योग का कार्य-क्षेत्र और उसका आधार**

**घरेलू उद्योग के विचार**

13. इस संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-
- (i) याचिका मेसर्स ग्रासीम इंडस्ट्रीज लिमिटेड - जया श्री टेक्सटाईल्स (जो कि पहले आदित्य बिड़ला नुवो लिमिटेड की जया श्री टेक्सटाईल्स नामक एक यूनिट थी) द्वारा दायर की गई है। भारत में संबद्ध उत्पाद के उत्पादन में जया श्री टेक्सटाईल्स का पर्याप्त अंशदान (68.84%) है।
- (ii) याचिका दायर करते समय देश में मेसर्स लिनन आर्ट प्राईवेट लिमिटेड, मेसर्स गोल्डन फाईबर्स और मेसर्स ए.आई. चम्पडानी इंडस्ट्रीज लिमिटेड नामक तीन अन्य कंपनियां संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन कर रही थीं, जो कि निरंतर वाणिज्यिक उत्पादन कर

रही हैं। इन तीन कंपनियों में से मेसर्स गोल्डन फाईबर्स और मेसर्स लिनन आर्ट प्राईवेट लिमिटेड वर्तमान याचिका का समर्थन कर रही हैं। इन तीन समर्थक कंपनियों से प्राप्त पत्रों को पहले से ही रिकार्ड में रखा गया है।

- (iii) इसके अतिरिक्त मेसर्स रेमण्ड लक्सरी कॉटन्स, मेसर्स कमारहाटी जूट मिल, मेसर्स भारत विजय मिल्स और मेसर्स डब्ल्यूएफबी बेयर्ड एंड कंपनी इंडिया प्राईवेट लिमिटेड विचाराधीन उत्पाद के लिए नए संयंत्र स्थापित कर रही थीं और वर्ष 2018-19 तक ये वाणिज्यिक उत्पादन करना शुरू कर देंगी। जबकि मेसर्स रेमण्ड लक्सरी कॉटन्स ने अप्रैल, 2018 में अपना वाणिज्यिक उत्पादन करना शुरू कर दिया था, मेसर्स भारत विजय मिल्स (सिटेक्स इंडस्ट्रीज) ने जून, 2018 में अपना वाणिज्यिक उत्पादन करना शुरू कर दिया है और उसके बाद वह अगस्त, 2018 तक अपना आगे क्षमता विस्तार करेगी।
- (iv) याचिकादाता ने अक्टूबर - दिसंबर, 2016 के दौरान "निशुल्क अग्रिम प्राधिकरण योजना" के तहत चीन से संबद्ध वस्तुओं की कम मात्राओं में आयात किया है। ये आयात, कुल भारतीय मांग का \*\*\*% हैं। इस अवधि के बाद याचिकादाता ने कोई आयात नहीं किया है। इस अवधि के दौरान इस प्रकार से आयातित यार्न का उपयोग, भारत से निर्यातित वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए किया गया था और उसने भारतीय बाजार में भारतीय उत्पादकों द्वारा उत्पादित और आपूर्ति किए गए यार्न से कोई प्रतिस्पर्धा नहीं की थी।
- (v) हितवद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि ऐसा कोई कानून नहीं है जो कि पाटन-रोधी जांच में आधार के प्रयोजनार्थ "निशुल्क" आयातों की अनदेखी करे, याचिकादाता ने यह निवेदन किया है कि उसने जांच अवधि की पहली तिमाही के दौरान भारत सरकार की "शुल्क छूट योजना" के तहत संबद्ध वस्तुओं का आयात किया था। इस प्रकार से आयातित यार्न का उपयोग, भारत से निर्यातित निचले स्तर के उत्पादों का उत्पादन करने के लिए किया गया था और उसने भारतीय बाजार में भारतीय उत्पादकों द्वारा उत्पादित और आपूर्ति किए गए यार्न से कोई प्रतिस्पर्धा नहीं की थी। एक विनिर्माता निर्यातक "अग्रिम प्राधिकरण योजना" के अंतर्गत प्रचालन करने का पात्र है। विदेश व्यापार नीति, 2009 - 2014 और 2015 - 2020 अध्याय 4 के अंतर्गत शुल्क छूट/ उपशमन योजनाओं का प्रावधान है। अग्रिम लाईसेंस प्राप्त करने के लिए एक कंपनी को निर्यातक होना अपेक्षित होता है। पात्रता के मानदंड कंपनी द्वारा निर्यातों के प्रासंगिक होते हैं। यह आयातित आदानों और ऐसे उद्योग से जो कि कंपनी से संबंधित होता है अथवा ऐसे क्षेत्र से जिसमें कंपनी अवस्थित होती है, के अपेक्षाकृत घरेलू उपयोग के प्रासंगिक नहीं होते हैं। इस प्रकार जांच अवधि के दौरान याचिकादाता द्वारा किए गए आयात भारत में खपत करने के निमित्त नहीं थे और उसने बाजार में प्रतिस्पर्धा नहीं की थी।
- (vi) नियम 2 (ख) स्वतः घरेलू उत्पादक को घरेलू उद्योग के अधिकार क्षेत्र से बाहर नहीं रखता है, यदि उसने स्वतः संबद्ध वस्तुओं के आयात किए हैं। याचिकादाता के मुख्य व्यवसाय को देखने की आवश्यकता है। समग्र क्षति अवधि के दौरान आयातों में गिरावट आई है और जांच अवधि की प्रथम तिमाही के बाद कोई आयात नहीं हुए हैं। जांच अवधि से पहले अन्य के साथ-साथ शुल्क मुक्त आयात हुए थे।
- (vii) याचिकादाता उत्पादन के प्रति कटिबद्ध है, जैसा कि मेसर्स जया श्री द्वारा शुरू किए गए विभिन्न विस्तार से देखा जा सकता है। याचिकादाता ने पूर्ण उत्पादन शुरू किया है और वह संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन करने के प्रति कटिबद्ध है और बाजार में बेचने के लिए उसके पास फ्लेक्स यार्न की अत्यधिक मात्रा उपलब्ध है।
- (viii) जांच अवधि के दौरान याचिकादाता द्वारा चीन से किए गए आयात, भारत में प्रवेश कर रहे कुल आयातों, चीन से कुल आयातों, कुल भारतीय उत्पादन, मेसर्स जया श्री के उत्पादन, जया श्री की घरेलू विक्रियों और भारतीय मांग की तुलना में तुच्छ मात्र हैं।
- (ix) याचिकादाता का व्यवसाय, उत्पादन के बजाय आयातों की ओर कभी उन्मुख नहीं हुआ है। ऐसे आयातों ने केवल उत्पादन प्रयास की संपूर्ति की है और उसने उसके उत्पादन के प्रयासों को प्रतिस्थापित नहीं किया है। यह एक सुस्थापित पद्धति है कि उत्पादन प्रयासों की संपूर्ति के लिए किए गए आयातों को, ऐसी कंपनी को अपात्र माने जाने के लिए पर्याप्त कारण नहीं माना जाना चाहिए।
- (x) घरेलू उद्योग का यह निवेदन है कि पहले निर्दिष्ट प्राधिकारी ने एक आयातक को घरेलू उद्योग के रूप में माना है, उदाहरणतः जापान और थाईलैंड के मूल के अथवा वहां से निर्यातित फिनोल के मामले को देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त याचिका के पैराग्राफ संख्या 37 (ख) में याचिकादाता ने यह निवेदन किया है कि जांच अवधि से पहले याचिकादाता ने नई सुविधा से उत्पादन करने के लिए अपने उत्पादों के लिए संबद्ध वस्तुओं के आयात किए थे। इन दोनों भागों को दो विभिन्न अवधियों के संदर्भ में पढ़े जाने की आवश्यकता है।
- (xi) याचिकादाता चीन में संबद्ध वस्तुओं के किसी उत्पादक-निर्यातक अथवा भारत में किसी आयातक से संबंधित नहीं है।

- (xii) नियमावली में उल्लिखित परिभाषा के भीतर याचिकादाता का पर्याप्त आधार है और वह घरेलू उद्योग बनता है।

**प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के विचार**

14. आधार के संबंध में प्रतिवादी पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दे निम्नानुसार हैं:-
- (i) याचिकादाता ने जांच अवधि सहित क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं के आयात किए हैं और वह भारतीय बाजार को अधिप्राप्त करने के लिए संबद्ध वस्तुओं के कथित कम-कीमत के आयात से लाभान्वित हुआ है, इसलिए वह घरेलू उद्योग माने जाने का पात्र नहीं है। तथ्य यह है कि याचिकादाता ने अग्रिम लाईसेंस के अंतर्गत संबद्ध वस्तुओं के आयात किए हैं और वह पाटन-रोधी नियमावली के नियम 2 (ख) से कोई छूट प्राप्त करने का हकदार नहीं है।
- (ii) यहां तक कि समर्थकों ने भी जांच अवधि सहित क्षति अवधि के दौरान आयात किए हैं। ये कंपनियां भी याचिकादाता को समर्थन करने के लिए योग्य नहीं हैं।
- (iii) याचिकादाता ने जांच अवधि के दौरान भी संबद्ध वस्तुओं के नियमित रूप से आयात किए हैं। अग्रिम लाईसेंस के अंतर्गत संबद्ध वस्तुओं के आयात, इस तथ्य को प्रभावित नहीं करते हैं कि याचिकादाता ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयात किए हैं, इसलिए नियम 2 (ख) के अंतर्गत दी गई गई परिभाषा के भीतर उसे घरेलू उद्योग नहीं माना जा सकता है।

**प्राधिकारी द्वारा जांच**

15. वर्तमान याचिका मेसर्स ग्रासीम इंडस्ट्रीज लिमिटेड - जया श्री टेक्सटाईल्स (जो कि पहले आदित्य बिड़ला नुवो लिमिटेड की जया श्री टेक्सटाईल्स नामक एक यूनिट थी) द्वारा दायर की गई है। याचिकादाता का भारत में संबद्ध उत्पाद के उत्पादन में प्रमुख भाग बनता है।
16. याचिकादाता ने स्वयं चीन से कुछ किस्मों के उत्पादों के आयात किए हैं। याचिकादाता द्वारा किए गए आयातों की विस्तार से जांच की गई है। यह निर्धारित करने के लिए क्या याचिकादाता को नियम 2 (ख) के अंतर्गत पात्र घरेलू उद्योग माना जाना चाहिए, निम्नलिखित तथ्यों पर विचार किया गया है।
17. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सभी प्रकार के आयातों को नियम 2 (ख) के अंतर्गत दोषी नहीं माना जाता है। निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह निर्णय लेने में विशेषाधिकार देने के मुख्य उद्देश्य से नियम 2 (ख) में संशोधन किया गया है, कि क्या ऐसी कंपनी को शामिल किया जाए अथवा बाहर रखा जाए, जिसने स्वतः कथित पाटित आयात किए हैं। वर्तमान मामले में ऐसे विशेष अधिकार को निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा सुसंगत रूप से इस्तेमाल किया गया है। पाटन-रोधी करार अथवा नियमावली यह निर्धारित करने के लिए कोई विशिष्ट जांच अथवा मानदंड सूचीबद्ध नहीं है कि क्या ऐसे घरेलू उत्पादक को घरेलू उद्योग की परिभाषा के भीतर शामिल किया जाए अथवा बाहर रखा जाए।
18. प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान याचिकादाता द्वारा किए गए आयातों की जांच की है। यह देखा गया है कि जांच अवधि की पहली तिमाही के दौरान आयात किए गए हैं और वह भी निर्यात उत्पादन के लिए शुल्क मुक्त योजना के अंतर्गत कम मात्रा में हैं। याचिकादाता द्वारा किए गए आयातों की मात्रा निम्नानुसार है:-

क्रमांक	अवधि	कुल आयात	शुल्क मुक्त आयात
1	2014-15	***	-
2	2015-16	***	-
3	2016-17	***	***
4	अक्टूबर, 16 - सितंबर, 17 (जांच अवधि)	***	***
4क.	अक्टूबर, 2016 से दिसंबर, 2016 तक	***	***
4ख.	जनवरी, 2017 से मार्च, 2017 तक	-	-
4ग.	अप्रैल, 2017 से जून, 2017 तक	-	-
4घ.	जुलाई, 2017 से सितंबर, 2017 तक	-	-



19. भारत में कुल आयातों, चीन से आयातों, भारतीय उत्पादन, मेसर्ज जया श्री के उत्पादन, मेसर्ज जया श्री की घरेलू विक्रियों और भारतीय मांग के संबंध में याचिकादाता द्वारा किए गए आयातों की जांच की गई है, जिसके व्यौरे निम्नानुसार हैं:-

क्रमांक	विवरण	हिस्सा %
<b>जयश्री द्वारा आयातों के संबंध में</b>		
1.	भारत में विचाराधीन उत्पाद के कुल आयात	***
2.	चीन से विचाराधीन उत्पाद के कुल आयात	***
3.	भारतीय उत्पादन	***
4.	मेसर्ज जया श्री का उत्पादन	***
5.	मेसर्ज जया श्री की घरेलू विक्रियां	***
6.	भारतीय मांग	***

20. यह देखा गया है कि कुछ समय से आयातों में तेजी से गिरावट आई है। दिसंबर, 2016 के बाद याचिकादाता द्वारा कोई आयात नहीं किया गया है। कुल आयातों और भारतीय मांग के संबंध में याचिकादाता के आयातों का हिस्सा नगण्य है। याचिकादाता द्वारा विचाराधीन उत्पाद के आयातों का हिस्सा, उनके उत्पादन के संबंध में भी नगण्य है, जिससे यह पता चलता है कि आयात केवल आकस्मिक थे और क्रियाकलाप की मुख्य श्रृंखला नहीं थे।
21. समर्थकों द्वारा किए गए आयातों के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि चूंकि इन कंपनियों ने याचिका का समर्थन मात्र किया है और इन कंपनियों का उत्पादन, याचिकादाता के उत्पादन की तुलना में बहुत कम है, इसलिए यह आवश्यक नहीं है कि घरेलू उद्योग के दायरे में उनको शामिल करने अथवा बाहर रखने का निर्णय लिया जाए। प्राधिकारी नोट करते हैं कि यदि इन कंपनियों को पात्र घरेलू उद्योग माना जाता है, तब भी याचिकादाता का उत्पादन, भारतीय उत्पादन के 50% से भी अधिक बनता है और यदि इन समर्थक कंपनियों को अपात्र घरेलू उद्योग माना जाता है, तब भी अकेले याचिकादाता के उत्पादन का हिस्सा और भी अधिक बढ़ जाएगा। किसी भी स्थिति में अकेले याचिकादाता का उत्पादन, जांच अवधि में समान उत्पाद के भारतीय उत्पादन का "एक प्रमुख भाग" बनता है। इसलिए यह माना जाता है कि आवेदन-पत्र घरेलू उद्योग द्वारा और उसकी ओर से प्रस्तुत किया गया है। आवेदन-पत्र पाटन-रोधी नियमावली के नियम 5 के अंतर्गत "आधार" की आवश्यकताओं को पूरा करता है।
22. मेसर्ज रेमण्ड लक्सरी कॉटन्स ने भी याचिका का समर्थन किया है और शुल्क लगाने का अनुरोध किया है। तथापि, चूंकि कंपनी ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन नहीं किया है, प्राधिकारी ने वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ उसकी स्थिति की जांच नहीं की है।
23. उपरोक्त के अनुसार रिकार्ड पर उपलब्ध सामग्री की जांच करने पर और कानूनी प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी का मानना है कि नियमावली के नियम 5 (3) के साथ पठित नियम 2 (ख) के अनुसार याचिकादाता घरेलू उद्योग बनता है।

#### **घ. गोपनीयता से संबंधित मुद्दे**

##### **घरेलू उद्योग के विचार**

24. घरेलू उद्योग और प्रतिवादियों द्वारा किए गए गोपनीयता के दावे के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-
- (i) याचिकादाता ने केवल ऐसी सूचना की गोपनीयता का दावा किया है, जो कि न तो सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध है और न ही कानून द्वारा उसका प्रकटन करने का अधिदेश है। इसके अतिरिक्त याचिकादाता ने गोपनीयता का दावा करने के लिए उपयुक्त स्थानों पर उसके कारणों का उल्लेख किया है।

- (ii) याचिकादाता के उत्पादन से संबंधित सूचना (निजी, समर्थकों, अन्य उत्पादकों, भारत में कुल), निर्यात बिक्रियों की मात्रा, घरेलू बिक्रियों की मात्रा (निजी, समर्थकों और अन्य उत्पादकों), याचिकादाता और समर्थकों द्वारा संबद्ध वस्तुओं के आयातों, बाजार के हिस्से, केप्टिव खपत, क्षमता उपयोग, माल-सूची और रोजगार व्यवसाय संवेदी सूचना है, जिसका प्रकटन करने से याचिकादाता के वाणिज्यिक हितों पर गंभीर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।
- (iii) विधि में मात्रा संबंधी प्राचलों के बारे में वास्तविक सूचना का प्रकटन करने का अधिदेश नहीं है। इसका निर्णय अलग-अलग मामले और अलग-अलग उद्योग के आधार पर लिया जाता है। भारत में फ्लेक्स यार्न उद्योग फल-फूल रहा है और अनेक नए उद्योगपति आगे आ रहे हैं। एकल याचिकादाता के बारे में मात्रा संबंधी सूचना का प्रकटन अन्यो को लाभान्वित करेगा और उससे याचिकादाता के हितों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। ऐसा व्यापार उपचार महानिदेशालय (पूर्ववर्ती पाटन-रोधी महानिदेशालय) की विगत पद्धति के समनुरूप है।
- (iv) लागत संबंधी सूचना प्रकृति से अत्यधिक व्यवसाय संवेदी होती है और इसलिए उसकी गोपनीयता का दावा किया गया है। याचिकादाता ने कानूनी प्रयोज्यता की प्रकाशित सूचना के आधार पर अपनी क्षति की सूचना तैयार नहीं की है। याचिकादाता मेसर्ज जया श्री टेक्सटाईल्स के लिए पृथक वित्तीय रिकार्ड बना कर रखता है, जो कि कंपनी के एक प्रभाग अथवा यूनिट के रूप में प्रचालन कार्य करती है। समस्त सूचना मेसर्ज जया श्री टेक्सटाईल्स के वित्तीय लेखाओं से प्राप्त की गई है, जिनकी पृथक रूप से लेखा-परीक्षा की जाती है। सार्वजनिक क्षेत्र में मेसर्ज जया श्री टेक्सटाईल्स से संबंधित वित्तीय सूचना पृथक रूप से उपलब्ध नहीं है। प्राधिकारी को संबद्ध सूचना गोपनीयता के आधार पर प्रदान की गई है क्योंकि उसका प्रकटन करने से याचिकादाता के हितों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।
- (v) याचिकादाता ने भारतीय उत्पादकों की निबल निर्यात कीमत और बिक्रियों का परिकलन करने के लिए प्रयुक्त भत्तों/कटौतियों का अनुमान लगाया है। निर्यातकों ने ऐसा नहीं दर्शाया है कि याचिकादाता द्वारा अपनाई गई राशि (वास्तव में और न ही ऐसा दावा किया है) अत्यधिक है। फिर भी प्राधिकारी निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों पर उचित जांच करने के बाद विचार करेंगे।
- (vi) याचिकादाता और समर्थकों द्वारा किए गए आयातों के ब्यौरे व्यवसाय संवेदी सूचना है और इसलिए उसका प्रकटन नहीं किया जा सकता है। ऐसी सूचना को सूचीबद्ध रूप में प्रदान किया गया है जो कि विधि के अनुसार यथोचित है।
- (vii) प्रपत्र ग-1 में सूचित कच्चे माल, प्रयोज्यताओं, अन्य परिवर्तन लागत और ब्याज लागत से संबंधित सूचना गोपनीय प्रकृति की है और इसलिए उसका प्रकटन करने से याचिकादाता के हितों पर गंभीर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।
- (viii) प्रतिवादियों ने निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर में अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है और यह टिप्पणियां करने के हमारे अधिकार को कम करता है क्योंकि उत्तरों में कोई अच्छा कारण बताए बिना सार्थक सारांश निहित नहीं है। इसलिए संबद्ध देश से सभी निर्यातकों और उत्पादकों के निवेदनों की अनदेखी की जानी चाहिए और उन्हें विशिष्ट पृथक प्रतिपादन से वंचित किया जाना चाहिए।

#### **प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के विचार**

25. प्रतिवादियों और घरेलू उद्योग द्वारा किए गए गोपनीयता के दावे के संबंध में प्रतिवादियों द्वारा किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-
- (i) याचिकादाता ने कोई अच्छा कारण बताए बिना याचिका में अनेक सूचना और आंकड़ों की अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है, जिससे प्रतिवादियों के अपने हितों की रक्षा करने की क्षमता कम होती है (कृपया पाटन-रोधी नियमावली के नियम 7 और पाटन-रोधी करार के अनुच्छेद 6.5 को देखें)।
- (ii) याचिकादाता ने याचिका के पृष्ठ 32, 33 और 34 पर "घरेलू उद्योग की क्षति संबंधी सूचना" शीर्षक तालिका में निहित सूचीबद्ध सूचना की गोपनीयता का दावा किया है, जो कि पाटन-रोधी नियमावली के नियम 7 और पाटन-रोधी करार के अनुच्छेद 6.5 का उल्लंघन है।
- (iii) याचिकादाता के उत्पादन (निजी, समर्थकों, भारत में कुल), निर्यात बिक्रियों की मात्रा, घरेलू बिक्रियों की मात्रा (निजी, समर्थकों और अन्य उत्पादकों), याचिकादाता और समर्थकों द्वारा संबद्ध वस्तुओं के आयातों, बाजार के हिस्से, केप्टिव खपत, क्षमता उपयोग, माल सूची और रोजगार की वास्तविक सूचना सूचित की जानी चाहिए और यह सूचीबद्ध होनी चाहिए। याचिकादाता ने इस सूचना की गोपनीयता के दावे के बारे में कोई अच्छा कारण नहीं बताया है और ऐसी सूचना की प्रकृति को गोपनीय नहीं माना जा सकता है।

- (iv) मात्रा के प्राचलों पर सूचना और आंकड़ों को गोपनीय नहीं माना जा सकता है।
- (v) याचिकादाता ने लागत संबंधी सूचना की गोपनीयता का दावा किया है और यहां तक कि उसका अगोपनीय वृत्तान्त भी उपलब्ध नहीं कराया है। उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं है (इस संबंध में कृपया पाटन-रोधी नियमावली के नियम 7 और पाटन-रोधी करार के अनुच्छेद 6.5, दिनांक 9 दिसंबर, 2013 के ट्रेड नोटिस 1/2013, अर्जेनटीना-सिरेमिक टाईल्स और स्ट्रुलाईट इंडस्ट्रीज (इंडिया) लिमिटेड बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी {2003 (158) ईएलटी 673} को देखें)।
- (vi) समामेलन से पूर्व और समामेलन के बाद मेसर्स जया श्री टेक्सटाईल्स, भारतीय स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध एक सरकारी लिमिटेड कंपनी बनी रही है। सरकार की ऐसी सूचीबद्ध कंपनियां भारतीय कंपनी विधि के अंतर्गत प्रकटन करने की कड़ी अपेक्षाओं का सामना करती हैं और उन्हें अपनी वार्षिक रिपोर्टों और वित्तीय सूचना को अनिवार्य रूप से सार्वजनिक घोषित करना होता है। हम उस आधार को समझने में विफल रहे हैं, जिस पर याचिकादाता ने वार्षिक रिपोर्टों और अन्य वित्तीय सूचना की गोपनीयता का दावा किया है, जब कि उनसे उन्हें सार्वजनिक और स्वतंत्र रूप से उपलब्ध कराए जाने की अपेक्षा की जाती है।
- (vii) निबल निर्यात कीमत का परिकलन करने के लिए प्रयुक्त भत्तों में कोई स्रोत निहित नहीं है और आंकड़ों की जांच नहीं की जा सकती है। इन सभी भत्तों की गोपनीयता का दावा किया गया है। यहां तक कि इन भत्तों की श्रृंखला भी प्रदान नहीं की गई है। पूर्वाग्रह के बिना उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों और वास्तविक आधार पर दावा किए गए भत्तों के आधार पर कारखाना-गत निर्यात कीमत परिकलित की जानी चाहिए।
- (viii) याचिकादाता और समर्थकों द्वारा किए गए आयातों का भी प्रकटन किया जाना चाहिए ताकि अन्य हितबद्ध पक्षकार, पाटन-रोधी नियमावली के नियम 2 (ख) के अंतर्गत घरेलू उद्योग के रूप में माने जाने के लिए याचिकादाता की पात्रता पर सार्थक रूप से टिप्पणियां कर सकें।
- (ix) प्रपत्र ग-1 में सूचित कच्चे माल, प्रयोज्यताओं, अन्य परिवर्तन लागत और ब्याज लागत से संबंधित सूचना को, अगोपनीय सारांश को संलग्न किए बिना गोपनीय माना गया है।
- (x) याचिकादाता ने अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है और इस प्रकार रक्षा करने के अधिकार को पूर्णतया प्रयुक्त नहीं किया जा सकता है। याचिका नियमावली के नियम 7 और दिनांक 09 दिसंबर, 2013 के ट्रेड नोटिस संख्या 01/2013 में निर्धारित मानकों को पूरा नहीं करती है। हमारे सुरक्षा अधिकार को कम कर दिया गया है क्योंकि एनसीवी याचिका में विशिष्ट आंकड़ों को उचित ढंग से सूचीबद्ध नहीं किया गया है।
- (xi) आवेदन-पत्र के भाग-VI के उत्तर में याचिकादाता ने कोई भी सूचना बिल्कुल प्रस्तुत नहीं की है। भाग-6 के विभिन्न प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार से हैं - "वार्षिक रिपोर्ट/तुलन पत्र के अनुसार" तथा मेसर्स ग्रासिम इंडस्ट्रीज लिमिटेड - मेसर्स जयाश्री टेक्सटाईल के एक बहु-उत्पाद कंपनी होने के नाते यह उत्तर भ्रामक है। तदनुसार, याचिकादाता ने पूरी सूचना प्रदान नहीं की है, जैसा कि आवेदन-पत्र के अंतर्गत अपेक्षित है।

### **प्राधिकारी द्वारा जांच**

26. सूचना की गोपनीयता के बारे में किए गए निवेदनों के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों ने अपने द्वारा प्रस्तुत सूचना का अगोपनीय वृत्तान्त प्रदान किया है और गोपनीयता के दावे के कारण बताए हैं। गोपनीयता के संबंध में वर्तमान जांच की कार्रवाई के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा प्रासंगिक पाए गए विभिन्न निवेदनों की जांच की गई है। गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना की गोपनीयता के दावों की उनकी पर्याप्तता के संदर्भ में जांच की गई है। प्राधिकारी ने संतुष्ट होने पर हितबद्ध पक्षकारों के गोपनीयता के ऐसे दावों को स्वीकार किया है और तदनुसार उसे अन्य पक्षकारों के समक्ष प्रकट नहीं किया है। जहां कहीं भी संभव हुआ है, वहां गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले हितबद्ध पक्षकारों को निदेश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना का अगोपनीय वृत्तान्त भी प्रस्तुत करें। प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों के अगोपनीय वृत्तान्त को सार्वजनिक फाईल के रूप में उपलब्ध कराया है।

### **ड. विविध मुद्दे**

#### **घरेलू उद्योग के विचार**

27. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए विभिन्न निवेदन निम्नानुसार हैं:-

- (i) याचिका में प्रदत्त सूचना से स्पष्ट पता चलता है कि घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है। प्राधिकारी ने संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के पाटन, घरेलू उद्योग की क्षति तथा पाटन और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध होने के पर्याप्त प्रथम दृष्टया साक्ष्य के आधार पर वर्तमान जांच शुरू की थी।
- (ii) प्रतिवादी याचिकादाता द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों में कानून की विशिष्ट कमी होने अथवा वास्तविक आधार नहीं होने अथवा किसी प्रकार की कोई कमी होने का विशिष्ट उल्लेख करने में विफल रहे हैं। प्राधिकारी ने प्रथम दृष्टया साक्ष्य के आधार पर वर्तमान जांच शुरू की थी और इस प्रकार ऐसे अप्रमाणित दावों के आधार पर उसे समाप्त नहीं किया जा सकता है।
- (iii) याचिकादाता यह समझने में विफल है कि ऐसी कौन सी सूचना है, जो कि याचिका में प्रदान नहीं की गई है और यह कि वर्तमान जांच को क्यों समाप्त कर दिया जाना चाहिए।
- (iv) याचिकादाता को गोपनीय आधार पर आवेदन-पत्र प्रस्तुत करने के समय इन्फो ड्राईव के आंकड़े प्राप्त हुए हैं। यह तृतीय पक्षकार की सूचना है, जिसकी गोपनीयता सुरक्षित है और इसलिए प्रतिवादियों द्वारा मांगी गई सूचना का प्रकटन नहीं किया जा सकता है। तथापि, याचिकादाता ने हाल ही के ट्रेड नोटिस का अनुपालन करते हुए डी जी सी आई एंड एस के आंकड़े प्रस्तुत किए हैं और उचित क्रियाविधि का अनुपालन करने के बाद प्राधिकारी से उन्हें प्राप्त किया जा सकता है।
- (v) पाटन-रोधी शुल्कों का उद्देश्य आयातों को रोकना नहीं है, बल्कि संबद्ध वस्तुओं के पाटन और उसके परिणाम स्वरूप घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के मुद्दे का निदान करना है। विगत में माननीय प्राधिकारी के समक्ष मांग और आपूर्ति में अंतर होने से संबंधित तर्कों को पहले भी उठाया गया है, लेकिन उन्हें सुसंगत तरीके से अस्वीकार कर दिया गया है।
- (vi) केप्टिव खपत के लिए प्रयुक्त संबद्ध वस्तुओं को लागत पर अंतरित कर दिया गया है। प्राधिकारी सत्यापित आंकड़ों पर विचार कर सकते हैं।
- (vii) चीन में सबसे बड़े उत्पादक/निर्यातक समूह की मेसर्स किंगडम होल्डिंग लिमिटेड नामक धारक कंपनी, जो कि संबद्ध उत्पाद के कारोबार में लगी हुई है, की वार्षिक रिपोर्ट में यह स्पष्ट उल्लेख है कि चीन के उत्पादकों/निर्यातकों ने परिस्थिति के अनुकूल अपनी कीमतें कम कर दी हैं। वार्षिक रिपोर्ट का अनुशीलन करने से यह स्पष्ट होगा कि कंपनी ने अप्रैल, 2016 से लिनन यार्न की अपनी बिक्री कीमतों को कम कर दिया है, जिसके फलस्वरूप भारत को बिक्रियां लगभग \*\*\*% तक बढ़ गई हैं और यह कि जांच अवधि के दौरान कम कमीशन होने के साथ राजस्व के प्रतिशत के रूप में बिक्री लागतों में कमी मुख्यतया चीन और भारत में बिक्रियों में वृद्धि होने के कारण हुई थी। अन्य शब्दों में कंपनी भारत और चीन में अपनी बिक्रियों में वृद्धि करने में सक्षम थी। इस प्रकार उसके लाभ में वृद्धि हो रही है।
- (viii) भारतीय उत्पादक भारत में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन के लिए अत्यधिक नए निवेश कर रहे हैं। याचिकादाता, समर्थकों और अन्य कंपनियों ने क्रमशः \*\*\* करोड़ रूपए (\*\*\*मी.टन क्षमता और \*\*\* संख्या में सिंपडल्स), \*\*\* करोड़ रूपए (\*\*\*मी.टन क्षमता और \*\*\* संख्या में सिंपडल्स) और \*\*\* करोड़ रूपए (\*\*\*मी.टन क्षमता और \*\*\* संख्या में सिंपडल्स) निवेश किए हैं।
- (ix) याचिकादाता द्वारा उत्पादित 60 और 70 ली के उत्पादों का बिलंब से वितरण करने और आपूर्ति नहीं करने के संबंध में सार्वजनिक सुनवाई के दौरान लगाए गए आरोप निराधार हैं और कोई साक्ष्य के बिना हैं।
- (x) पाटन-रोधी शुल्क लगाने से आयातों पर रोक नहीं लगेगी और उपभोक्ता के पास निरंतर विकल्प होंगे। जबकि देश में विचाराधीन उत्पाद के एक से अधिक उत्पादक हैं और कुछ समय के भीतर विचाराधीन उत्पाद के और अधिक उत्पादक हो जायेंगे क्योंकि देश में नई क्षमताएं स्थापित हो रही हैं।
- (xi) अंत-प्रयोक्ता केवल याचिकादाता पर ही निर्भर नहीं रहेंगे। बाद में भी उन्हें आयात करने और अन्य भारतीय उत्पादकों से खरीदने का वर्तमान विकल्प निरंतर उपलब्ध रहेगा। वास्तव में भारत में कुछ और उत्पादक आ रहे हैं। इसके अतिरिक्त यदि याचिकादाता की क्षमता केवल केप्टिव खपत के निमित्त होती, तो वह अपनी क्षमता का विस्तार नहीं करता। जांच अवधि के दौरान याचिकादाता की 60% से भी अधिक क्षमता भारत में घरेलू बिक्रियों के लिए उपलब्ध थी। अब तक की स्थिति के अनुसार वही राशि लगभग 74% है।

#### **प्रतिवादी पक्षकारों के विचार**

28. अन्य हितवद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए विभिन्न निवेदन निम्नानुसार हैं:-

- (i) याचिकादाता ने ऐसा कोई वास्तविक साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है, जिससे पाटन-रोधी जांच शुरू करने की दशा का पता चले, जबकि जांच प्राधिकारी ने तथ्यों की उचित संवीक्षा नहीं की है।
- (ii) जांच शुरू करने में तथ्यात्मक कमी है और कानूनी आधार निराधार है और इस प्रकार इसे समाप्त कर दिया जाना चाहिए। डीजीएडी को याचिका में निहित सूचना के आधार वर्तमान जांच शुरू नहीं करनी चाहिए थी।
- (iii) प्रतिवादियों का निर्दिष्ट प्राधिकारी से अनुरोध है कि वे अपरिष्कृत और परिष्कृत दोनों रूप में इंफो ड्राईव के आंकड़े एमएस एक्सेल फोरमेट में प्रदान करने के साथ-साथ आंकड़ों को परिष्कृत करने के लिए अपनाई गई कार्य-प्रणाली भी प्रदान करें। निर्दिष्ट प्राधिकारी का जांच की कार्यवाही के दौरान डीजीसीआईएंडएस के कारोबार-वार आयात आंकड़ों को प्रयुक्त करने का भी इरादा है। ऐसी स्थिति में प्रतिवादियों का यह भी अनुरोध है कि उन्हें डीजीसीआईएंडएस के कारोबार-वार आयात आंकड़े सुगम्य हों और वे इस संबंध में अलग से अनुरोध करेंगे।
- (iv) घरेलू उद्योग ने पर्याप्त मात्रा में उत्पादन नहीं किया है जिससे की संबद्ध वस्तुओं की कुल मांग की पूर्ति हो सके। इस प्रकार प्रयोक्ता अन्य देशों से संबद्ध वस्तुओं का आयात करने में प्रवृत्त हो रहे हैं। याचिकादाता भारतीय उद्योग की मांग को पूरा करने में असमर्थ है, जिसके फलस्वरूप अन्य देशों से आयात हो रहे हैं।
- (v) याचिकादाता द्वारा संबद्ध वस्तुओं की खपत केष्टिवली की जाती है। प्राधिकारी से अनुरोध है कि वे याचिकादाता को उस कीमत के ब्यौरे प्रदान करने के लिए कहें, जिस पर ऐसी वस्तुओं को केष्टिव खपत के लिए अंतरित किया गया था। प्राधिकारी द्वारा ऐसे ब्यौरों की बारीकी से जांच की जाए।
- (vi) अधिकतर आयातक अंत-प्रयोक्ता हैं। अंत-प्रयोक्ता एक मात्र याचिकादाता पर निर्भर रहना नहीं चाहते हैं क्योंकि दोनों फ्लेक्स फैब्रिक्स बाजार में प्रतिस्पर्धी हैं। याचिकादाता ने क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं के आयात भले ही कम कर दिए हों, लेकिन अंत-प्रयोक्ता निरंतर आयात करने के साथ-साथ संबद्ध वस्तुओं को घरेलू रूप से भी अधिप्राप्त कर रहे हैं। अंत-प्रयोक्ताओं को संबद्ध वस्तुओं के इसलिए निरंतर आयात करने होंगे क्योंकि याचिकादाता द्वारा स्थापित की गई क्षमताएं मुख्यतया केष्टिव खपत के लिए हैं और न कि व्यापारी बाजार के लिए।
- (vii) याचिकादाता ने यह तर्क दिया है कि उसने जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं के आयात किए हैं, लेकिन जांच शुरू करने संबंधी अधिसूचना में इसका कोई उल्लेख नहीं है। प्राधिकारी को मौखिक आदेश देना चाहिए कि क्या जांच शुरू करने संबंधी अधिसूचना जारी करने के समय उन्होंने उस पर विचार किया है अथवा नहीं।

### **प्राधिकारी द्वारा जांच**

29. विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए उपरोक्त सामान्य मुद्दों की जांच की गई है और जितना प्रासंगिक समझा गया है, उनका निदान निम्नलिखित पैराओं में किया गया है:-
  - (i) इस आरोप के संबंध में कि जांच की शुरुआत गलत अवधारणा पर की गई है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरुआत याचिका में घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त प्रथम दृष्टया साक्ष्यों/तथ्यों के आधार पर की गई थी। उसके बाद प्राधिकारी ने सूचना की जांच की थी और इस अंतिम जांच परिणाम में उस पर विचार किया गया है।
  - (ii) आयात आंकड़ों का परिचालन करने के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकादाता ने दिनांक 15 मार्च, 2018 के ट्रेड नोटिस संख्या 07/2018 का अनुपालन करते हुए डी जी सी आई एंड एस के कारोबार-वार आयात आंकड़े प्रस्तुत किए हैं और ये याचिका के भाग हैं तथा उसके अगोपनीय वृत्तान्त को अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा जांच किए जाने के लिए सार्वजनिक फाईल में रखा गया था। हितबद्ध पक्षकार उचित प्रक्रिया का अनुपालन करने के बाद उसे प्राप्त कर सकते थे। इसके अतिरिक्त प्राधिकारी ने दिनांक 15 मार्च, 2018 के ट्रेड नोटिस संख्या 07/2018 द्वारा एक प्रक्रिया निर्धारित की है। इस निर्धारित प्रक्रिया का अनुपालन करने के बाद किसी भी हितबद्ध पक्षकार को डी जी सी आई एंड एस से डी जी सी आई एंड एस के कारोबार-वार आयात आंकड़े प्राप्त करने की अनुमति दी जाती है।
  - (iii) मांग और आपूर्ति में अंतर व्याप्त होने के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि हालांकि क्षति अवधि के दौरान मांग और आपूर्ति में अंतर व्याप्त है, लेकिन यह स्वतः देश में उत्पाद के पाटन का निदान नहीं करता है। मांग और आपूर्ति में व्याप्त किसी भी अंतर को उचित कीमतों पर किसी भी देश से आयातों द्वारा दूर किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त मांग और आपूर्ति में व्याप्त अंतर होने से विदेशी उत्पादकों/निर्यातकों को अनुचित व्यापारिक पद्धतियों में लिप्त होने और पाटित कीमतों पर निर्यात करने का अधिकार नहीं मिल जाता है।

- (iv) जिस कीमत पर याचिकादाता द्वारा संबद्ध वस्तुओं को केप्टिवली अंतरित किया गया था उसके संबंध में हितबद्ध पक्षकारों के तर्क के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच में केप्टिव इनपुट का मूल्यांकन विकृत नहीं हुआ है। केप्टिव इनपुट का मूल्यांकन या तो निचले स्तर के उत्पाद (अर्थात् फ्लेक्स फैब्रिक) की लाभप्रदता अथवा केप्टिव लाभप्रदता को प्रभावित कर सकती है। प्राधिकारी ने वर्तमान प्रयोजनार्थ निचले स्तर के उद्योग अथवा केप्टिव खपत की लाभप्रदता पर विचार नहीं किया है। इस प्रकार वर्तमान जांच पर केप्टिव इनपुट का मूल्यांकन का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। स्पष्टीकरण करने के लिए याचिकादाता ने उत्पादन की अपनी लागत पर केप्टिव खपत का मूल्यांकन किया है।
- (v) मेसर्स किंगडम ग्रुप द्वारा कीमतों को अपने अनुकूल कम करने के संबंध में घरेलू उद्योग के तर्क के बारे में, जैसा कि उनकी वार्षिक रिपोर्ट में भी उल्लेख किया गया है, प्राधिकारी ने वास्तविक जांच करने के दौरान तथा उत्पादक निर्यातक के साथ व्यापक विचार-विमर्श करने तथा निर्यातक की और जांच करने के बाद संबद्ध तथ्यों को ध्यान में रखा है।
- (vi) विलंब से वितरण करने और आपूर्ति नहीं करने के आरोपों के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने सार्वजनिक सुनवाई के दौरान किए गए अपने दावे और उसके बाद किए गए निवेदनों के समर्थन में रिकार्ड पर कोई सत्यापन योग्य साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है। याचिकादाता ने विलंब से वितरण करने और आपूर्ति नहीं करने के आरोपों का जोरदार खंडन किया है और निवेदन किया है कि इस कारणवश आरोप मनगढ़ंत लगाए गए थे। रिकार्ड पर सत्यापन योग्य साक्ष्य नहीं होने से प्राधिकारी ऐसे दावों और आरोपों की जांच करने की स्थिति में नहीं है।
- (vii) प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकादाता संबद्ध वस्तुओं की केप्टिवली खपत करता है, फिर भी उसने जांच अवधि के दौरान अपनी क्षमता का अत्यधिक प्रतिशत (लगभग 60%) घरेलू बिक्रियों के लिए उपलब्ध कराया है। याचिकादाता ने ऐसी क्षमताएं स्थापित की हैं, जो कि उसकी निजी केप्टिव आवश्यकता और मांग से बहुत अधिक हैं। उत्पादन और घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं की बिक्री की वचनबद्धता को घरेलू उद्योग द्वारा किए गए बड़े निवेशों से देखा जा सकता है।

#### **च. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण**

##### **घरेलू उद्योग के विचार**

30. वर्तमान जांच की कार्यवाही के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा प्रासंगिक पाए गए विभिन्न निवेदन निम्नानुसार हैं:-
- (i) प्रतिवादियों को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक नहीं दिया जा सकता है, जब तक कि प्रतिवादी निर्यातक इस तथ्य से संतुष्ट नहीं कर देते कि उनका कोई भी प्रमुख शेयर धारक राज्य का निजी/नियंत्रित प्रयोज्यता नहीं है, यह कि प्रमुख इनपुट्स बाजार मूल्यों को पर्याप्त रूप से परिलक्षित करती हैं; जब तक कि चीन के प्रतिवादी निर्यातक नियमावली में निर्धारित प्रत्येक प्राचल के संबंध में परीक्षण उत्तीर्ण नहीं कर लेते हैं और यह कि प्रतिवादी कंपनी ने विचाराधीन उत्पाद का कारोबार करने वाले संबंधित पक्षकारों के साथ वर्तमान जांच में भाग लिया है।
- (ii) बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब नहीं दिया जा सकता है, यदि चीन के निर्यातक यह प्रमाणित करने में असमर्थ रहते हैं कि उनकी बहियां, अंतर्राष्ट्रीय लेखाकरण मानकों (आईएस) के संगत हैं।
- (iii) यह दायित्व चीन के प्रतिवादी निर्यातकों का है और न कि प्राधिकारी का, कि वे यह प्रमाणित करें कि बाजार अर्थव्यवस्था की दशाओं में प्रचालन कर रहे हैं।
- (iv) ऐसी स्थिति में जिसमें वर्तमान शेयरधारकों ने स्वयं अपनी उत्पादन सुविधाएं स्थापित नहीं की हैं, लेकिन उन्हें अन्य पक्षकार से प्राप्त किया है, उन्हें बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक नहीं दिया जा सकता है, जब तक कि पारगमन की प्रक्रिया, दस्तावेजी साक्ष्य के साथ पूर्णतया प्रमाणित नहीं हो जाती है।
- (v) ऐसे मामले में चीन के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण, उपरोक्त तथ्यों और परिस्थितियों को देखते हुए पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के प्रावधानों के अनुसार किया जा सकता है।
- (vi) चीन में विचाराधीन उत्पाद के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण, बाजार अर्थव्यवस्था वाले तृतीय देश में कीमत अथवा संरचित मूल्य के आधार पर इस कारण से नहीं किया जा सकता है कि संबद्ध सूचना सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है।
- (vii) आवेदक ने चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण, उत्पादन की लागत के आधार पर कच्चे माल और प्रयोज्यताओं के लिए घरेलू उद्योग के खपत के मानदंडों और घरेलू उद्योग के अनुसार समस्त कच्चे माल की कीमत को ध्यान में रखते हुए और बिक्री,

सामान्य प्रशासनिक व्ययों के लिए उचित समायोजन करके और आवेदक की खपत के मानदंडों को ध्यान में रख कर किया है। इसमें 5% लाभ पर विचार किया गया है।

- (viii) निर्यात कीमत की संरचना, उद्योग के पास बेहतर उपलब्ध सूचना के आधार पर उचित समायोजन करने के बाद डीजीसीआईएंडएस के अनुसार आयात के आंकड़ों से उपलब्ध सूचना के आधार पर की गई है, ताकि उसे सामान्य मूल्य के साथ तुलनीय बनाया जा सके।
- (ix) पाटन मार्जिन सकारात्मक और पर्याप्त है।
- (x) इस तथ्य को ध्यान में रखते प्रतिवादियों के उत्तर को स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए कि वे अपने संबंधित पक्षकारों के नामों, विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन करने वाले अपने संबंधित पक्षकारों के व्यौरों का प्रकटन करने में विफल रहे हैं तथा उन्होंने अपने द्वारा प्राप्त लाभों और प्रोत्साहन राशियों के तथ्यों का दमन किया है।
- (xi) मेसर्ज जीईटीसीएल, मेसर्ज जिकिसयांग सनसाईन लिनेन टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड, मेसर्ज टुंग गा लिनेन एंड कॉटन, मेसर्ज झेझियांग एक्सियांग फ्लेक्स टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड, मेसर्ज गोल्डन ईगल्स यिल्ली लिनन, मेसर्ज जेड. जिन्युयान फ्लेक, मेसर्ज जेड. किंगडम लिनन, मेसर्ज जे. जिन्युयान ने यह उल्लेख किया है कि विचाराधीन उत्पाद की निर्यात बिक्रियों पर सरकार द्वारा कोई प्रोत्साहन राशि नहीं दी जाती है। मेसर्ज ईगल्स कंपनी और मेसर्ज गोल्डन ईगल स्पन सिल्क ने यह उल्लेख किया है कि वे बॉट की प्रतिपूर्ति प्राप्त करने की हकदार हैं, लेकिन दर गोपनीय रखी गई है। मेसर्ज निंगवो लिमिटेड और मेसर्ज हुझोऊ एक्सियांग ने बताया है कि चीन जनवादी गणराज्य की सरकार संबद्ध उत्पाद के निर्यातों पर 17% की दर से बॉट छूट देती है। इस प्रकार संबद्ध देश से निर्यातक उसी नियमों द्वारा अधिशासित होते हैं, का प्राप्त हुई प्रोत्साहन राशि के संबंध में विरोधाभासी घोषणा करते हैं अंततः जिसके फलस्वरूप यह निष्कर्ष निकलता है कि ऐसे बयान गलत और भ्रामक हैं।
- (xii) निर्यातकों ने पाटन किया है, इस तथ्य कि पुष्टि, पाटन के विद्यमान होने से मनाही नहीं करने पर उनकी चालाकी से की गई स्वीकृति से होती है।
- (xiii) किसी भी प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकार ने बाजार अर्थव्यवस्था निरूपण का दावा नहीं किया है। वास्तव में निम्नलिखित कंपनियों ने बताया है कि वे बाजार अर्थव्यवस्था निरूपण का अनुरोध नहीं करती हैं और यह कि उन्हें डीजीएडी द्वारा निर्धारित सामान्य मूल्य स्वीकृत है:-
- (क) मेसर्ज जिकिसयांग सनसाईन लिनेन टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड (उत्पादक और निर्यातक)
- (ख) मेसर्ज चांगझाऊ मेईयुआन फ्लेक्स टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड (उत्पादक और निर्यातक)
- (ग) मेसर्ज टुंग गा लिनेन एंड कॉटन (चांगझाऊ) कंपनी लिमिटेड (उत्पादक और निर्यातक)
- (घ) मेसर्ज ह्युझाऊ एक्सियांग इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड (व्यापारिक कंपनी)
- (ङ) मेसर्ज झेझियांग एक्सियांग फ्लेक्स टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड (उत्पादक और निर्यातक)
- (xiv) अन्य हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि सामान्य मूल्य की कार्य-प्रणाली अनुबंध-1 के पैरा 7 के प्रावधान का उल्लंघन करती है, याचिकादाता ने निवेदन किया है कि तृतीय देश की बाजार अर्थव्यवस्था में कीमत अथवा संरचित मूल्य के आधार पर चीन में फ्लेक्स यार्न की सामान्य मूल्य का निर्धारण करना इसलिए संभव नहीं है क्योंकि याचिकादाता के पास संबद्ध सूचना उपलब्ध नहीं है। उत्पाद का उत्पादन केवल चीन और भारत में किया जाता है। इसलिए वर्तमान मामले के तथ्यों के आधार पर नियम 7 के अंतर्गत निर्धारित अन्य आधार पर सामान्य मूल्य पर विचार करना संभव नहीं है।
- (xv) अनुबंध 3.2 में निहित सूचना के स्रोत के संबंध में याचिकादाता ने यह निवेदन किया है कि उसने निबल निर्यात कीमत और अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्रियों का परिकलन करने के लिए प्रयुक्त भत्तों/कटौतियों का अनुमान लगाया है। निर्यातकों ने यह नहीं दर्शाया है कि याचिकादाता द्वारा अपनाई गई राशि अत्यधिक है (यहां तक कि उन्होंने वास्तव में कोई दावा भी नहीं किया है)।
- (xvi) याचिकादाता ने कारखाना-गत स्तर पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है और इसलिए कोई और समायोजन करना आवश्यक नहीं समझा गया था। याचिकादाता ने कारखाना-गत स्तर पर निबल निर्यात कीमत का परिकलन करने के बारे में विस्तार से स्पष्टीकरण दिया है, जिसमें निबल निर्यात कीमत का आकलन करने के लिए किए गए समायोजन शामिल हैं।

- (xvii) घरेलू उद्योग ने पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ याचिका में पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं। फिर भी प्राधिकारी घरेलू उद्योग और निर्यातकों द्वारा प्रदत्त सूचना के आधार पर उचित जांच करने के बाद निबल निर्यात कीमत निर्धारित करेंगे।

### **प्रतिवादी पक्षकारों के विचार**

31. प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए विभिन्न निवेदन निम्नानुसार हैं:-
- (i) सामान्य मूल्य की कार्य-प्रणाली अनुबंध-1 के पैरा 7 के प्रावधानों का उल्लंघन करती है और इसके समर्थन में कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है और इस प्रकार यह नियमावली के नियम 5 (2) और नियम 5 (3) का उल्लंघन है। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्रथम दो विकल्पों का उपयोग किए बिना अंतिम विकल्प के रूप में अर्थात् भारत में विधिवत् समायोजित, उत्पादन की लागत के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन करने के लिए याचिकादाता के तरीके को अपनाया है। इस संबंध में शेनियांग मटसुशिता एस. बैटरी कंपनी लिमिटेड बनाम एक्सआईड इंडस्ट्रीज लिमिटेड और अन्य {(2005) 3 एसीसी 39} के मामले का संदर्भ ग्रहण करें।
  - (ii) सामान्य मूल्य की संरचना करने के लिए प्रयुक्त सूचना का स्रोत प्रतिवादियों को अज्ञात है और हमारा यह आग्रह है कि याचिकादाता अनुबंध 3.2 और प्रपत्र सी1 में निहित सूचना के स्रोत प्रदान करें।
  - (iii) याचिका में सामान्य मूल्य का परिकलन करने के लिए किए गए समायोजनों का कोई उल्लेख नहीं है। पाटन-रोधी करार के अनुच्छेद 2.4 और पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 6 (1) में पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बीच व्यापार के समान स्तर पर तुलना करने का प्रावधान निहित है। संरचित मूल्य के लिए यदि कोई समायोजन किया गया है, तो उसे गोपनीय प्रकृति का नहीं माना जा सकता है और उसका प्रकटन किया जाना चाहिए।
  - (iv) याचिका में दावा किया गया पाटन मार्जिन बहुत अधिक है। इसका कारण यह है कि संरचित सामान्य मूल्य, याचिकादाता की असमान्य रूप से अधिक लागत के कारण बढ़ाया गया है। निर्दिष्ट प्राधिकारी से अनुरोध है कि वे किसी असमान्य लागत संघटक को समाप्त करने के लिए उचित तरीके से संरचित सामान्य मूल्य का परिकलन करें।
  - (v) याचिकादाता ने निर्यात कीमत का परिकलन करने के लिए समायोजन किए हैं, लेकिन इस समायोजनों की कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की है और न ही यह बताया है कि इसका परिकलन कैसे किया गया है। इसे गोपनीय प्रकृति का नहीं माना जा सकता है। प्राधिकारी को पाटन के विद्यमान होने के समर्थन में पर्याप्त साक्ष्य के बिना वर्तमान जांच शुरू नहीं करनी चाहिए थी।
  - (vi) निर्दिष्ट प्राधिकारी को चीन की बाजार अर्थव्यवस्था के विकास के आधार पर चीन को एमईटी का दर्जा स्वीकार करना चाहिए, पाटन-रोधी करार के अनुच्छेद 2 के अनुसार सामान्य मूल्य का परिकलन करना चाहिए और कम से कम सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए देश के अनुरूप आंकड़ों को लागू करने के बजाए इस उत्तर में कंपनी द्वारा प्रदत्त आंकड़ों और कीमतों को लागू करना चाहिए।

### **प्राधिकारी द्वारा जांच**

#### **I. सामान्य मूल्य**

32. जांच शुरू करने के चरण में प्राधिकारी ने याचिकादाता द्वारा दी गई सूचना के अनुसार आगे की कार्रवाई की है। जांच शुरू करने पर प्राधिकारी ने चीन जनवादी गणराज्य में उत्पादकों/निर्यातकों को यह सलाह दी थी कि वे जांच शुरू करने संबंधी अधिसूचना का उत्तर दें और अपनी बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे का निर्धारण करने के लिए संबद्ध सूचना प्रस्तुत करें। प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 (3) में निर्धारित किए गए मानदंड के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अवधारणा का खंडन करने और संबद्ध व्यापक सूचना प्रस्तुत करने के लिए ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को अनुपूरक प्रश्नावली की प्रतियां भेजी थीं। साथ ही प्राधिकारी ने चीन जनवादी गणराज्य की सरकार से अनुरोध किया था कि वह चीन जनवादी गणराज्य में उत्पादकों/निर्यातकों को संबद्ध सूचना प्रदान करने की सलाह दें।
33. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन में ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों और चीन जनवादी गणराज्य की सरकार को निर्धारित तरीके से और प्रपत्र में सूचना प्रस्तुत करने की आवश्यकता के बारे में पर्याप्त रूप से सूचित कर दिया गया था तथा उन्हें इस संबंध में अपने निवेदन प्रस्तुत करने के लिए पर्याप्त अवसर भी प्रदान किया गया था। तथापि, किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था निरूपण का दावा नहीं किया है। वास्तव में कुल्लेख ने यह उल्लेख किया है कि उन्होंने बाजार अर्थव्यवस्था निरूपण का अनुरोध नहीं किया है।
34. उपरोक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुए और चीन में किसी भी निर्यातक कंपनी द्वारा गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के दावे का खंडन नहीं किए जाने की स्थिति में प्राधिकारी सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार आगे की कार्रवाई करना उचित समझते हैं।



35. उपरोक्त पैरा को ध्यान में रखते हुए संबद्ध वस्तुओं के लिए सामान्य मूल्य की संरचना, उत्पादन की लागत के आधार पर कच्चे माल और प्रयोज्यताओं के लिए घरेलू उद्योग के खपत में मानकों को ध्यान में रख कर की गई है, जिसके लिए विधिवत् समायोजन किया गया है, जिसमें बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक व्यय और लाभ शामिल हैं। उचित तुलना करने के लिए सामान्य मूल्य की संरचना पीसीएन-वार की गई है। संबंधित उत्पादक/निर्यातक द्वारा विभिन्न पीसीएन की मात्राओं के आधार पर निर्धारित भारित औसत को नीचे पाटन मार्जिन तालिका में दर्शाया गया है।

## II. निर्यात कीमत

### (क) किंगडम ग्रुप: मेसर्ज झेझियांग किंगडम लिनेन कंपनी लिमिटेड, मेसर्ज झेझियांग जिनवुयान फ्लेक्स कंपनी लिमिटेड और मेसर्ज जिआंगसू जिनवुयान फ्लेक्स कंपनी लिमिटेड

36. प्रस्तुत किए गए उत्तरों में से यह नोट किया जाता है कि किंगडम ग्रुप की निम्नलिखित तीन संबंधित प्रयोज्यता कंपनियां, भारत में संबद्ध उत्पाद का उत्पादन और निर्यात करने के कार्य में लगी हुई हैं:-
- (1) मेसर्ज झेझियांग जिनवुयान फ्लेक्स कंपनी लिमिटेड - उत्पादक और निर्यातक
  - (2) मेसर्ज जिआंगसू जिनवुयान फ्लेक्स कंपनी लिमिटेड - उत्पादक और निर्यातक
  - (3) मेसर्ज झेझियांग किंगडम लिनेन कंपनी लिमिटेड - उत्पादक
37. उपरोक्त तीन कंपनियों ने निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं। जांच अवधि के दौरान मेसर्ज झेझियांग किंगडम लिनेन कंपनी लिमिटेड ने संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन किया है तथा उनको मेसर्ज झेझियांग जिनवुयान फ्लेक्स कंपनी लिमिटेड और मेसर्ज जिआंगसू जिनवुयान फ्लेक्स कंपनी लिमिटेड नामक अपनी संबंधित कंपनियों को बेचा है, जिन्होंने संबद्ध वस्तुओं के निर्यात भारत को किए हैं। जबकि मेसर्ज झेझियांग किंगडम लिनेन कंपनी लिमिटेड ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं के निर्यात भारत को नहीं किए हैं, लेकिन उसने जांच अवधि के दौरान मेसर्ज झेझियांग जिनवुयान फ्लेक्स कंपनी लिमिटेड के माध्यम से निर्यात किए हैं।
38. इस दौरान मेसर्ज झेझियांग जिनवुयान फ्लेक्स कंपनी लिमिटेड और मेसर्ज जिआंगसू जिनवुयान फ्लेक्स कंपनी लिमिटेड ने हैंडलिंग शुल्क सहित अंतरदेशीय भाड़े, समुद्री भाड़े, बीमा, क्रेडिट लागत और बैंक प्रभारों और एफटीडब्ल्यूजेड बिक्रियों के लिए भंडारण शुल्कों के लिए समायोजन करने के दावे किए हैं। तदनुसार, संबंधित सीएनवी के साथ तुलना करने के लिए पीसीएन-वार एनईपी आककलित की गई है और उसके बाद भारित औसत परिकलित की गई है। भारत को किए गए निर्यातों के लिए इस प्रकार से निर्धारित की गई भारित औसत निबल निर्यात कीमत, जैसा कि निम्नलिखित पैराग्राफ में तालिका में दिखाया गया है।

### (ख) मेसर्ज जिकिसयांग सनसाईन लिनेन टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड - (उत्पादक/निर्यातक)

39. मेसर्ज जिकिसयांग सनसाईन लिनेन टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड ने निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं। यह नोट किया जाता है कि मेसर्ज जिकिसयांग सनसाईन लिनेन टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड संबद्ध वस्तुओं की एक उत्पादक होने के साथ-साथ निर्यातक भी है। जांच अवधि के दौरान मेसर्ज जिकिसयांग सनसाईन लिनेन टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड ने संबद्ध वस्तुओं के सीधे निर्यात भारत को किए हैं। उत्पादक और निर्यातकों ने हैंडलिंग शुल्क सहित अंतरदेशीय भाड़े, समुद्री भाड़े, बीमा, क्रेडिट लागत और बैंक प्रभारों के लिए समायोजन करने के दावे किए हैं और प्राधिकारी ने उसके लिए अनुमति दे दी है। तदनुसार, संबंधित सीएनवी के साथ तुलना करने के लिए पीसीएन-वार एनईपी आककलित की गई है और उसके बाद भारित औसत परिकलित की गई है। भारत को किए गए निर्यातों के लिए इस प्रकार से निर्धारित की गई भारित औसत निबल निर्यात कीमत, जैसा कि निम्नलिखित पैराग्राफ में तालिका में दिखाया गया है।

### (ग) मेसर्ज झेझियांग एक्सियांग फ्लेक्स टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड (उत्पादक) और मेसर्ज हुझोऊ एक्सियांग इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड (निर्यातक)

40. मेसर्ज झेझियांग एक्सियांग फ्लेक्स टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड ने निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं। यह नोट किया जाता है कि मेसर्ज झेझियांग एक्सियांग फ्लेक्स टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड एक उत्पादक है और उसने जांच अवधि के दौरान मेसर्ज हुझोऊ एक्सियांग इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड के माध्यम से भारत को संबद्ध वस्तुओं के निर्यात किए हैं। मेसर्ज हुझोऊ एक्सियांग इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड ने निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर पृथक् रूप से प्रस्तुत किए हैं। अंतरदेशीय परिवहन, हैंडलिंग, समुद्री परिवहन, विदेशी बीमा, क्रेडिट और बैंक प्रभारों के लिए समायोजन करने के दावे किए गए हैं और प्राधिकारी ने उसके लिए अनुमति दे दी है। तदनुसार, संबंधित सीएनवी के साथ तुलना करने के लिए

पीसीएन-वार एनईपी आकलित की गई है और उसके बाद भारित औसत परिकलित की गई है। भारत को किए गए निर्यातों के लिए इस प्रकार से निर्धारित की गई भारित औसत निबल निर्यात कीमत, जैसा कि निम्नलिखित पैराग्राफ में तालिका में दिखाया गया है।

**(घ) गोल्डन ग्रुप : मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल कंपनी लिमिटेड, मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल जिली लिनन टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड और मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल स्पन सिल्क कंपनी लिमिटेड**

41. प्रस्तुत किए गए उत्तरों से यह नोट किया जाता है कि गोल्डन ग्रुप में निम्नलिखित तीन संबंधित प्रयोज्यता कंपनियां, भारत में संबद्ध उत्पाद का उत्पादन और निर्यात करने के कार्य में लगी हुई हैं:-

- (1) मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल कंपनी लिमिटेड - उत्पादक और निर्यातक
- (2) मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल जिली लिनन टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड - उत्पादक
- (3) मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल स्पन सिल्क कंपनी लिमिटेड - उपरोक्त (1) की निर्यातक

42. मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल कंपनी लिमिटेड, मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल जिली लिनन टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड और मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल स्पन सिल्क कंपनी लिमिटेड ने निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर पृथक रूप से प्रस्तुत किए हैं। यह नोट किया जाता है कि जबकि गोल्डन ईगल उत्पादक और निर्यातक दोनों हैं, मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल स्पन सिल्क कंपनी लिमिटेड केवल संबद्ध वस्तुओं की निर्यातक है। मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल जिली लिनन टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड केवल ऐसी उत्पादक कंपनी है, जिसने मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल कंपनी लिमिटेड के माध्यम से संबद्ध वस्तुओं के निर्यात किए हैं।

43. जांच अवधि के दौरान गोल्डन ईगल ने सीधे और मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल स्पन सिल्क कंपनी लिमिटेड के माध्यम से निर्यात किए हैं। उत्पादक और निर्यातकों ने हैंडलिंग शुल्क सहित अंतरदेशीय भाड़े, समुद्री भाड़े, बीमा, क्रेडिट लागत और बैंक प्रभारों के लिए समायोजन करने के दावे किए गए हैं और प्राधिकारी ने उसके लिए अनुमति दे दी है। तदनुसार, संबंधित सीएनवी के साथ तुलना करने के लिए पीसीएन-वार एनईपी आकलित की गई है और उसके बाद भारित औसत परिकलित की गई है। भारत को किए गए निर्यातों के लिए इस प्रकार से निर्धारित की गई भारित औसत निबल निर्यात कीमत, जैसा कि निम्नलिखित पैराग्राफ में तालिका में दिखाया गया है।

**(ङ) मेसर्ज हेंगझाऊ सांगलू सिल्क कंपनी लिमिटेड (उत्पादक और निर्यातक)**

44. मेसर्ज हेंगझाऊ सांगलू सिल्क कंपनी लिमिटेड ने निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं। यह नोट किया जाता है कि यह संबद्ध वस्तुओं की एक उत्पादक और निर्यातक है। जांच अवधि के दौरान इसने संबद्ध वस्तुओं के सीधे निर्यात किए हैं। उत्पादक और निर्यातक ने अंतरदेशीय परिवहन और अन्य प्रभारों, समुद्री बीमा, बैंक प्रभारों और क्रेडिट के लिए समायोजन करने के दावे किए गए हैं और प्राधिकारी ने उसके लिए अनुमति दे दी है। तदनुसार, संबंधित सीएनवी के साथ तुलना करने के लिए पीसीएन-वार एनईपी आकलित की गई है और उसके बाद भारित औसत परिकलित की गई है। भारत को किए गए निर्यातों के लिए इस प्रकार से निर्धारित की गई भारित औसत निबल निर्यात कीमत, जैसा कि निम्नलिखित पैराग्राफ में तालिका में दिखाया गया है।

**(च) मेसर्ज ग्रेट इस्टर्न टेक्सटाईल्स (टोंगलिंग) कंपनी लिमिटेड (उत्पादक) और मेसर्ज निंगबो विन बे ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड (निर्यातक)**

45. मेसर्ज ग्रेट इस्टर्न टेक्सटाईल्स (टोंगलिंग) कंपनी लिमिटेड ने निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं। यह नोट किया जाता है कि मेसर्ज ग्रेट इस्टर्न टेक्सटाईल्स (टोंगलिंग) कंपनी लिमिटेड एक उत्पादक है और उसने जांच अवधि के दौरान मेसर्ज निंगबो विन बे कंपनी लिमिटेड के माध्यम से संबद्ध वस्तुओं के निर्यात भारत को किए हैं। मेसर्ज निंगबो विन बे कंपनी लिमिटेड ने निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर पृथक रूप से प्रस्तुत किए हैं। अंतरदेशीय परिवहन, हैंडलिंग, समुद्री परिवहन, समुद्री बीमा, बैंक प्रभारों और क्रेडिट के लिए समायोजन करने के दावे किए गए हैं और प्राधिकारी ने उसके लिए अनुमति दे दी है। तदनुसार, संबंधित सीएनवी के साथ तुलना करने के लिए पीसीएन-वार एनईपी आकलित की गई है और उसके बाद भारित औसत परिकलित की गई है। भारत को किए गए निर्यातों के लिए इस प्रकार से निर्धारित की गई भारित औसत निबल निर्यात कीमत, जैसा कि निम्नलिखित पैराग्राफ में तालिका में दिखाया गया है।

**(छ) मेसर्ज चांगझाऊ मेईयुआन फ्लेक्स टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड (उत्पादक और निर्यातक)**

46. मेसर्ज चांगझाऊ मेईयुआन फ्लेक्स टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड ने निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं। यह नोट किया जाता है कि मेसर्ज चांगझाऊ मेईयुआन फ्लेक्स टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड, संबद्ध वस्तुओं की उत्पादक होने के साथ-साथ निर्यातक भी है। जांच अवधि के दौरान मेसर्ज चांगझाऊ मेईयुआन फ्लेक्स टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड ने संबद्ध वस्तुओं के सीधे निर्यात भारत को किए हैं। उत्पादक/निर्यातक द्वारा अंतरदेशीय भाड़े, हैंडलिंग, समुद्री भाड़े और विदेशी भाड़े, समुद्री बीमा, बैंक प्रभारों और क्रेडिट लागत के लिए समायोजन करने के दावे किए गए हैं और प्राधिकारी ने उसके लिए अनुमति दे दी है। तदनुसार, संबंधित सीएनवी के साथ तुलना करने के लिए पीसीएन-वार एनईपी आककलित की गई है और उसके बाद भारत औसत परिकलित की गई है। भारत को किए गए निर्यातों के लिए इस प्रकार से निर्धारित की गई भारत औसत निबल निर्यात कीमत, जैसा कि निम्नलिखित पैराग्राफ में तालिका में दिखाया गया है

**(ज) मेसर्ज टुंग गा लीनेन एंड कॉटन (चांगझाऊ) कंपनी लिमिटेड (उत्पादक/निर्यातक)**

47. मेसर्ज टुंग गा लीनेन एंड कॉटन (चांगझाऊ) कंपनी लिमिटेड ने निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं। यह नोट किया जाता है कि मेसर्ज टुंग गा लीनेन एंड कॉटन (चांगझाऊ) कंपनी लिमिटेड संबद्ध वस्तुओं की उत्पादक होने के साथ-साथ निर्यातक भी है। जांच अवधि के दौरान मेसर्ज टुंग गा लीनेन एंड कॉटन (चांगझाऊ) कंपनी लिमिटेड ने छोटी मात्रा संबद्ध वस्तुओं के सीधे निर्यात भारत को किए हैं। उत्पादक/निर्यातक ने अंतरदेशीय भाड़े, समुद्री भाड़े और विदेशी भाड़े, समुद्री बीमा, बैंक प्रभारों और क्रेडिट लागत के लिए समायोजन करने के दावे किए गए हैं और प्राधिकारी ने उसके लिए अनुमति दे दी है। तदनुसार, संबंधित सीएनवी के साथ तुलना करने के लिए पीसीएन-वार एनईपी आककलित की गई है और उसके बाद भारत औसत परिकलित की गई है। भारत को किए गए निर्यातों के लिए इस प्रकार से निर्धारित की गई भारत औसत निबल निर्यात कीमत, जैसा कि निम्नलिखित पैराग्राफ में तालिका में दिखाया गया है

**III. पाटन मार्जिन का निर्धारण**

48. पीसीएन-वार संरचित सामान्य मूल्य और निबल निर्यात कीमत के आधार पर प्रत्येक सहयोगी उत्पादक के लिए भारत औसत आधार पर पाटन मार्जिन निर्धारित किया गया है, जो कि निम्नानुसार है:-

क्र.सं.	उत्पादक/निर्यातक	मात्रा	सीएनवी	एनईपी	पाटन मार्जिन		
		मी.टन	अमरीकी\$/मी.टन	अमरीकी\$/मी.टन	अमरीकी\$/मी.टन	%	% सीमा
1.	मेसर्ज झेझियांग किंगडम लीनेन कंपनी लिमिटेड/ मेसर्ज जिआंगसू जिनवुयान फ्लेक्स कंपनी लिमिटेड/मेसर्ज झेझियांग जिनवुयान फ्लेक्स कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	***	30-40
2	मेसर्ज जिक्सियांग सनसाईन लीनेन टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	***	25-35
3	मेसर्ज झेझियांग एक्सियांग फ्लेक्स टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड/मेसर्ज हुझोऊ एक्सियांग इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	***	55-65
4	मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल कंपनी लिमिटेड, मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल जिली लिनन टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड और मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल स्पन सिल्क कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	***	35-45
5	मेसर्ज हेंगझाऊ सांगलू सिल्क कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	***	30-40

6	मेसर्ज ग्रेट इस्टर्न टेक्सटाईल्स (टॉंगलिंग) कंपनी लिमिटेड/ मेसर्ज निंगबो बिन बे ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	***	20-30
7	मेसर्ज चांगझाऊ मेईयुआन फ्लेक्स टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	***	15-25
8	मेसर्ज टुंग गा लिनेन एंड कॉटन (चांगझाऊ) कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	***	5-15
9	क्रमांक 1-8 में निर्दिष्ट उत्पादकों से भिन्न कोई अन्य	***	***	***	***	***	120-130

49. यह नोट किया जाता है कि सभी सहयोगी उत्पादकों के लिए पाटन मार्जिन सकारात्मक है और यह बहुताधिक और न्यूनतम सीमा से अधिक है।

#### **छ. क्षति और कारणात्मक संबंध का निर्धारण**

##### **घरेलू उद्योग के विचार**

50. याचिकादाता ने द्वितीयक स्रोत से प्राप्त किए गए आंकड़ों को ध्यान में रखते हुए याचिका दायर की है, जिसके आधार पर प्राधिकारी ने जांच शुरू की है। जांच की कार्रवाई के दौरान याचिकादाता ने वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकीय महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से आंकड़े प्राप्त किए हैं।
51. वर्तमान जांच की कार्रवाई के दौरान आर्थिक क्षति के संबंध घरेलू उद्योग द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा प्रासंगिक पाए गए निवेदनों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है:-
- याचिकादाता का प्राधिकारी से अनुरोध है कि क्षति का विश्लेषण करते समय उसके द्वारा किए गए आयातों को बाहर रखा जाए क्योंकि पहले किए गए आयात, संबद्ध वस्तुओं के लिए बाजार सृजित करने के निमित्त थे और जांच अवधि में वे शुल्क छूट योजना के अंतर्गत थे।
  - क्षति अवधि के दौरान मांग (केप्टिव सहित) में लगभग 4% तक की गिरावट आई है। तथापि, विगत वर्ष की तुलना में जांच अवधि में मांग में लगभग 16% तक की वृद्धि हुई है, जब कि इसी अवधि में कीमतों में 20-25% (ली-वार) तक की गिरावट आई है। यदि मांग में गिरावट आना क्षति का कारण थी, तो मांग में वृद्धि होने पर कीमतों में तेजी से गिरावट आने के बजाए कीमतों में \*\*\*% तक की अत्यधिक वृद्धि होनी चाहिए थी।
  - फैब्रिक में प्रयुक्त फ्लेक्स यार्न की निरंतर मांग रहेगी और इस प्रकार इसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं माना जा सकता है।
  - विचाराधीन उत्पाद के आयात मुख्यतया चीन से होते हैं। इन्फो ड्राईव में प्रतिविवित आयात डी जी सी आई एंड एस में सूचित आयातों से बहुत कम हैं और आयातों ने जनवरी-मार्च, 2017 तक गिरावट दर्शाई है क्योंकि मेसर्ज जया श्री द्वारा किए गए आयातों में तेजी से गिरावट आई है। तथापि, उसके बाद आयातों ने अत्यधिक वृद्धि दर्शाई है। यदि मेसर्ज जया श्री के आयातों को बाहर रखा जाता है, तो भी पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में आयात वृद्धि दर्शाते हैं।
  - आयातों में गिरावट आने के बाद वर्तमान जांच अवधि में आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई है, जिनमें भारतीय उत्पादकों द्वारा किए गए आयात शामिल हैं और बहिष्कृत हैं। कीमतों में तेजी से गिरावट आने के बावजूद आयातों में वृद्धि हुई है। समग्र क्षति अवधि के दौरान याचिकादाता के उत्पादन के संबंध में आयात अत्यधिक बने रहे हैं।
  - वर्ष 2016-17 में गिरावट दर्शाने के बाद जांच अवधि में भारतीय मांग में संबद्ध आयातों के हिस्से (याचिकादाता की केप्टिव खपत सहित और रहित) में वृद्धि हुई है। तथापि, यदि याचिकादाता द्वारा किए गए आयातों को शामिल नहीं किया जाता है, तो यह देखा जाएगा कि समग्र क्षति अवधि के दौरान आयातों में वृद्धि हुई है।
  - आयातों की कीमतों में तेजी से गिरावट आई है, जो कि कच्चे माल की कीमतों में गिरावट के समानुपात नहीं है, जैसा कि कच्चे माल की कीमतों, भारित औसत वार्षिक कीमतों, तिमाही-दर-तिमाही कीमतों की गति और 40 ली के लिए कीमतों और यार्न की प्रमुख किस्मों के उत्पाद, जिनके आयात भारत में आयातों का प्रमुख भाग बनते हैं, के संबंध में रिकार्ड पर उपलब्ध आंकड़े दर्शाते हैं।

- (viii) कीमत में कटौती सकारात्मक है। कीमत कटौती को लाभ के साथ जोड़ा जाना चाहिए, न कि आयातों की मात्रा के साथ क्योंकि वर्तमान मामला कीमत प्रभाव का है। बिक्री कीमत, आयात की कीमत के आगे-पीछे चली है और जिसके परिणाम स्वरूप लाभ/हानि अत्यधिक गिरावट दर्शाती है। कम कीमत पर बिक्री भी सकारात्मक है।
- (ix) विश्व भर में जांच प्राधिकारी केवल जांच अवधि के लिए कीमत में कटौती होने का निर्धारण करते हैं। वर्तमान मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने अब एक पीसीएन निर्धारित कर दिया है और इस पीसीएन को ध्यान में रखते हुए कीमत में कटौती होने का निर्धारण किए जाने की आवश्यकता है। इस कारण के अतिरिक्त कीमत में कटौती होने का निर्धारण, केवल जांच अवधि के लिए किया जा सकता है। प्राधिकारी भारतीय उत्पादकों द्वारा किए गए आयातों सहित अथवा रहित कीमत में कटौती होने का निर्धारण कर सकते हैं। इसमें कोई वस्तुगत अंतर नहीं होगा।
- (x) जबकि क्षति अवधि के दौरान लागत में मामूली वृद्धि हुई है, बिक्री कीमत में गिरावट आई है। इसके अतिरिक्त बिक्री कीमत में परिवर्तन बहुत अधिक है और आयात कीमतों में विकट गिरावट आने से बिक्री कीमत में गिरावट आई है।
- (xi) याचिकादाता ने क्षति अवधि के दौरान भारतीय मांग के समनुरूप अपनी क्षमताओं का संवर्धन किया है। समग्र क्षति अवधि के दौरान संयंत्र का क्षमता उपयोग कुल मिला कर समान बना हुआ है।
- (xii) समग्र क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं सहित संयंत्र के समग्र उत्पादन में वृद्धि हुई है।
- (xiii) क्षमता के साथ-साथ उत्पादन में वृद्धि होने के बावजूद विचाराधीन उत्पाद की बिक्री की मात्रा समान स्तर पर बनी हुई है। पर्याप्त मांग, उत्पादन और क्षमता होने के बावजूद भी देश में उत्पाद के पाटन के कारण यही स्थिति बनी हुई है। क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार का हिस्से (केप्टिव खपत रहित) में लगभग 2% तक की मामूली वृद्धि हुई है। याचिकादाता ने बढ़ी हुई क्षमताओं पर अपना पूर्ण उत्पादन करना शुरू कर दिया है और वह संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन करने के प्रति कटिबद्ध है तथा उसके पास बाजार में बेचने के लिए पर्याप्त मात्रा में फ्लेक्स यार्न उपलब्ध है।
- (xiv) याचिकादाता द्वारा किए गए निर्यातों की मात्रा कम है और यह वर्तमान जांच के लिए अप्रासंगिक है।
- (xv) याचिकादाता विचाराधीन उत्पाद की केप्टिव खपत कर रहा है। घरेलू उद्योग को विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन करने और उसे घरेलू बाजार में बेचने में घाटे हो रहे हैं, जो कि वास्तव में संलग्न क्षति के विवरण में सूचित किए गए घाटों से बहुत अधिक हैं। यदि केप्टिव खपत को बाजार कीमत माना जाता है, तो यह देखा जाएगा कि याचिकादाता को अत्यधिक वित्तीय घाटे हुए होंगे।
- (xvi) क्षति अवधि के दौरान लाभप्रदता के रूप में घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन में अत्यधिक गिरावट आई है। वर्ष 2015-16 में लाभ में बहुत गिरावट आई है और उसके बाद जांच अवधि में भी याचिकादाता को वित्तीय घाटों का सामना कर रहा है।
- (xvii) समग्र क्षति अवधि के दौरान नकदी लाभ में अत्यधिक गिरावट आई है। यहां तक कि जांच अवधि में यह \*\*\*% भी नहीं रहा है, जो कि आधार वर्ष में था। ब्याज पूर्व लाभ में भी इतनी अधिक गिरावट आई है कि जांच अवधि में यह नकारात्मक रहा है।
- (xviii) समग्र क्षति अवधि के दौरान नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ में भी इतनी अधिक गिरावट आई है कि जांच अवधि में यह नकारात्मक रहा है। इससे पाटन के क्षति पहुंचाने वाले प्रभाव का पता चलता है।
- (xix) प्रस्तावित जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से आयातित सामग्री की पहुंच कीमत, घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और उत्पादन की लागत से अत्यधिक कम है। भारतीय उत्पादकों के लिए बेंचमार्क आयात कीमतें हैं। इस उत्पाद का कोई अर्थक्षम स्थानापन्न नहीं है। घरेलू उद्योग की क्षमता के साथ-साथ उत्पादन में वृद्धि होने के बावजूद उसकी क्षमता से अधिक मांग है और घरेलू उद्योग की बिक्रियां समान स्तर पर बनी हुई हैं। इस प्रकार घरेलू उद्योग की कीमत के लिए उत्तरदायी केवल एक कारक उत्पाद की आयात कीमत है।
- (xx) एक्रेलिक फाईबर मेन्युफैक्चरर्स बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले में सेस्टेट के प्रेक्षण और लाभप्रदता, नकदी लाभ और निवेशों पर प्रतिलाभ के रूप में कार्य-निष्पादन में अत्यधिक गिरावट दर्शाने वाले रिकार्ड पर उपलब्ध सूचना के आलोक में यह सपष्ट है कि घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति हो रही है।
- (xxi) हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि समामेलन के कारण लागत के मुद्दों के कारण याचिकादाता को घाटे हो रहे हैं, याचिकादाता का यह निवेदन है कि इन तर्कों का कोई महत्व नहीं है। पाटन-रोधी शुल्क जांच के आंकड़े प्रस्तुत करने के प्रयोजनार्थ समामेलन के कारण पुनर्मूल्यांकन को बाहर रखा गया है। याचिकादाता ऐसी कोई भी अन्य सूचना प्रदान करेगा, जिसकी आवश्यकता प्राधिकारी को होगी।

- (xxii) याचिकादाता का इस पर कोई विवाद नहीं है कि मात्रात्मक प्राचलों में सकारात्मक प्रवृत्तियाँ हैं क्योंकि उसने वर्तमान मामले में कीमत क्षति का दावा किया है।
- (xxiii) याचिकादाता द्वारा आयातों का बढ़ा-चढ़ा कर दिखाने के संबंध में याचिकादाता का निवेदन है कि विश्लेषण करते समय उसके द्वारा किए गए आयातों को बाहर रखा जाना चाहिए।
- (xxiv) अन्य हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि याचिकादाता को भारत में उभर रहे उत्पादकों के कारण निरंतर क्षति होती रहेगी, याचिकादाता का निवेदन है कि उसे इसकी फिक्र नहीं है क्योंकि उचित और सुव्यवस्थित स्थिति को बनाए रखने के लिए पारस्परिक प्रतिस्पर्धा बाजार के लिए अच्छी है। भविष्य में उपभोक्ताओं के पास अधिक विकल्प होंगे।
- (xv) कच्चे माल की कीमतों के संबंध में प्रतिवादियों का विश्लेषण भ्रामक है। कच्चे माल की लागत, कुल लागत का \*\*\*% भाग बनती है। इस प्रकार यदि हितबद्ध पक्षकारों के तर्क को स्वीकार कर लिया जाता है, तो भी कच्चे माल की लागत में \*\*\*% की गिरावट का तात्पर्य लागत में केवल \*\*\*रूपए प्रति किलोग्राम गिरावट आने से होगा। तथापि, उनके निजी दावों के अनुसार पहुंच मूल्य में \*\*\*% तक की गिरावट आई है। इससे यह स्पष्ट पता चलता है कि कच्चे माल के कारण लागतों में आई गिरावट की तुलना में पहुंच मूल्य में बहुत तेजी से गिरावट आई है।
- (xvi) क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार के हिस्से (केप्टिव खपत रहित) में मामूली वृद्धि हुई है, जबकि जांच अवधि में लाभ घाटों में बदल गया है। कोई भी उत्पादक क्षति अवधि के दौरान लाभ में हुए अत्यधिक घाटों के लिए अपने बाजार के हिस्से को मामूली नहीं बढ़ाएगा।
- (xxvii) लाभ में गिरावट, मूल्यहास में वृद्धि के समानुपात नहीं है। लाभ प्रति यूनिट और मूल्यहास और व्याज प्रति यूनिट से संबंधित आंकड़ों से स्पष्ट पता चलता है कि लाभ में गिरावट, मूल्यहास और व्याज लागत में हुई वृद्धि से बहुत अधिक है।
- (xxviii) अतिरिक्त क्षमता की निबल अचल परिस्मृतियाँ, मौजूदा क्षमता के समान स्तर पर नहीं हो सकती हैं क्योंकि पुराना संयंत्र अपकर्ष की स्थिति में है। याचिकादाता द्वारा किए गए विभिन्न निवेशों से पता चलता है कि कुछ समय में प्रति यूनिट निवेश में अत्यधिक परिवर्तन हुआ है। जबकि वर्तमान निवेश पूरी बही मूल्य पर हैं, पुराने निवेश मूल्यहास के बही मूल्य पर हैं। यह सामान्य समझदारी है कि किसी भी नए संयंत्र में निवेश, सदैव अपकर्ष स्थिति के संयंत्र में किए गए निवेश से अधिक होते हैं। इस संबंध में याचिकादाता द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों की परिशुद्धता की जांच प्राधिकारी ने पहले से कर ली है।
- (xxix) याचिकादाता ने 22% का दावा किया है क्योंकि यह निवेश पर ऐसा प्रतिलाभ है, जिसकी स्वीकृति, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने विगत अनेक वर्षों से लगभग प्रत्येक मामले में उस अवधि के दौरान जब कि कोई पाटन नहीं था, घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित किए गए प्रतिलाभ की वास्तविक दर को ध्यान में रखे बिना दी है। प्राधिकारी हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों को ध्यान में रखते हुए ऐतिहासिक पुनर्मूल्यांकन करने पर विचार कर सकते हैं।
- (xxx) दावा की गई लागतों, लाभों और निवेश पर प्रतिलाभ में कोई पुनर्मूल्यांकन शामिल नहीं है। याचिकादाता ने इन सभी कारकों को पहले से ही वर्जित कर दिया है। याचिकादाता ने घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत का निर्धारण, पाटन-रोधी नियमावली के अनुसार किया है, जिसने परिसम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन के प्रभाव को, यदि कोई है, समाधान किया है। याचिकादाता ने पुनर्मूल्यांकन को शामिल करने के बाद क्षति रहित कीमत और क्षति मार्जिन का दावा नहीं किया है।
- (xxxi) घरेलू उद्योग ने अतिरिक्त क्षमता से अनुकूलतम उत्पादन प्राप्त करने में किसी तकनीकी अड़चन का सामना नहीं किया है और उसने बड़ी हुई क्षमताओं से अच्छी उत्पादन मात्राओं को पहले से ही प्राप्त कर लिया है। घरेलू उद्योग को घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं को सामान्यतया कम कीमतों पर बेचना पड़ा था। घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण उसकी उत्पादन क्षमता में वृद्धि करना नहीं, बल्कि पाटित आयात हैं, जो कि उसकी बिक्री कीमत में हास कर रहे हैं।
- (xxxii) जैसे ही देश में नई क्षमताएं स्थापित होती हैं, निर्यातक अपने बाजार को बनाए रखने के प्रयास में और व्यवसाय के कम हो जाने की आशंका से भारतीय बाजार में आक्रामक हो जाते हैं क्योंकि निर्यातकों के पास अत्यधिक क्षमताएं विद्यमान हैं।
52. याचिका के समर्थकों नामतः मेसर्स लिनन एट और मेसर्स गोल्डन फाईबर्स, भारत में अन्य उत्पादक और मेसर्स रेमण्ड लक्सरी, नए उत्पादक जिसने अप्रैल, 2018 में अपना वाणिज्यिक उत्पादन करना शुरू किया है, ने मौखिक सुनवाई में भाग लिया था और निवेदन किए थे। उन्होंने बताया था कि पाटित आयातों के कारण उन्हें क्षति हो रही है। भारत में मांग और पूर्ति के बीच व्याप्त अंतर को दूर करने के लिए समर्थक क्षमताओं में विस्तार करने की प्रक्रिया में रत हैं। वास्तव में भारत में क्षमताओं के सृजन के फलस्वरूप चीन में उत्पादक निर्यातक गहन पाटन करने के लिए प्रवृत्त हुए हैं क्योंकि निर्यातक भारत में किसी भी क्षमता के

सृजन को हतोत्साहित करना चाहते हैं। समर्थकों ने अनुरोध किया है कि शुल्क की यथाशीघ्र सिफारिश की जाए ताकि वे भारत में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादकों को पर्याप्त संरक्षण और उपाय प्रदान कर सकें।

53. सुनवाई के दौरान निर्यातकों ने "ब्रिज स्टोन टायर मेन्युफैक्चरिंग (थाईलैंड) बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले में न्यायाधिकरण के निर्णय पर विश्वास किया था। समर्थकों ने निवेदन किया था कि वर्तमान मामले में तथ्य, ब्रिज स्टोन के मामले के तथ्यों से बिल्कुल भिन्न हैं। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान समर्थक उद्योग के लिए लाभ के साथ-साथ नकदी लाभ में गिरावट आई है। वास्तव में यदि जांच अवधि के दौरान प्रचलित कीमतों पर आयात निरंतर जारी रहते हैं, तो मेसर्स रेमण्ड के लिए कोई अनुमानित लाभ नहीं होगा। घरेलू उद्योग और उसके समर्थकों की बिक्रियां स्थिर बनी हुई हैं और इसलिए तथ्यों के आधार पर ये दोनों मामले विशेष रूप से भिन्न हैं। इस प्रकार ब्रिज स्टोन के मामले में निर्णय के अनुपात की वर्तमान जांच में कोई प्रयोजनीयता नहीं है।

#### **प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के विचार**

54. प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:—
- (i) जांच शुरू करने को यथोचित ठहराने के लिए याचिका में पाटन और क्षति का पर्याप्त साक्ष्य निहित नहीं है। संबद्ध देश से न तो कोई पाटन हुआ है और न ही घरेलू उद्योग को कोई क्षति हुई है।
  - (ii) क्षति अवधि के दौरान चीन से संबद्ध वस्तुओं के आयातों में समग्र रूप से 46% तक की गिरावट आई है। याचिकादाता के उत्पादन के संबंध में आयातों में वर्ष 2014-15 में 320-350% से लेकर जांच अवधि में 130-150% तक की गिरावट आई है। इस प्रकार आयातों की मात्रा में गिरावट, घरेलू उद्योग को हुई कथित क्षति का कारण नहीं हो सकती है।
  - (iii) याचिकादाता यह दर्शाने का प्रयास कर रहा है कि उसके और समर्थकों के आयातों की मात्रा में गिरावट आई है। तथापि, अन्य के आयातों में वृद्धि हुई है। संबद्ध वस्तुओं की आयात संबंधी सूचना को पृथक करने का कोई कानूनी आधार नहीं है। याचिकादाता और समर्थकों ने यह दावा किया है कि उनके द्वारा किए गए आयात पाटित नहीं हैं। इस प्रकार उन्हें अन्य के आयातों के साथ अपने आयातों को समामेलित करना चाहिए और उसके बाद संबद्ध वस्तुओं के आयातों की जांच करनी चाहिए।
  - (iv) क्षति का विश्लेषण करने के प्रयोजनार्थ याचिकादाता और समर्थकों द्वारा समग्र क्षति अवधि के दौरान किए गए आयातों को आयात के आंकड़ों में से निकाल दिया जाना चाहिए ताकि याचिकादाता को संबद्ध वस्तुओं के अपने निजी आयातों से बड़ाई-चढ़ाई गई आयातों की मात्रा का लाभ प्राप्त नहीं हो सके। ऐसे आयातों के कारण हुई कथित क्षति में उन्होंने योगदान दिया है।
  - (v) क्षति अवधि के दौरान केप्टिव सहित और रहित मांग में क्रमशः 20% और 40% तक की गिरावट आई है, जिससे स्पष्ट होता है कि याचिकादाता को क्यों कथित क्षति हुई है।
  - (vi) इस वर्ष भारत में अनेक नए उत्पादक वाणिज्यिक उत्पादन करना शुरू करेंगे, जिससे याचिकादाता पर अधिक कीमत दबाव पड़ेगा। याचिकादाता को संबद्ध वस्तुओं की मांग में गिरावट आने के कारण क्षति हो रही है और भारत में अन्य भावी उत्पादकों के आने के कारण उसे निरंतर क्षति होती रहेगी।
  - (vii) घरेलू उद्योग 100% प्रचालन कर रहा था, लेकिन क्षमता में वृद्धि होने से उसकी क्षमता उपयोग में मामूली गिरावट आई है। समग्र रूप से घरेलू उद्योग सुधर रहा है। मांग में गिरावट आने के बावजूद याचिकादाता ने वर्ष 2015-16 से आगे अपनी क्षमता बढ़ाई है। जबकि क्षति अवधि के दौरान याचिकादाता की क्षमता में 26% तक की वृद्धि हुई है, उसी अवधि के दौरान घरेलू उत्पादन और बिक्रियों में क्रमशः 29% और 5% तक की वृद्धि हुई है।
  - (viii) निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत 80% याचिकाओं से पता चलता है कि घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमताओं को या तो जांच अवधि अथवा क्षति अवधि के दौरान बढ़ाया है। इससे पता चलता है कि उसकी क्षति का मुख्य कारण अनुचित/अनावश्यक क्षमताएं हैं। घरेलू उद्योग अपनी क्षमताओं को स्थिर बनाए नहीं रख पाया है, जिसके फलस्वरूप अत्यधिक पूंजी नियोजित हुई है, नियोजित पूंजी पर नकारात्मक प्रतिलाभ हुआ है और अत्यधिक घाटे हुए हैं। प्राधिकारी को इसकी बारीकी से जांच करने की आवश्यकता है और ऐसी संरचना वाली याचिकाओं की अनदेखी करनी होगी।
  - (ix) क्षति अवधि के दौरान याचिकादाता की घरेलू बिक्रियों में वृद्धि हुई है, जो कि आधार वर्ष 2014-15 की तुलना में जांच अवधि के दौरान 100 से 105 तक हो गई हैं। आवेदक अपने उत्पाद को भारतीय बाजार में बेचने के बजाय निर्यात करने पर ध्यान संकेन्द्रित कर रहा है क्योंकि उसी अवधि के दौरान उसकी निर्यात बिक्रियां 100 से बढ़ कर 208 अर्थात् दुगुनी हो गई हैं। जांच अवधि के दौरान जब कि संबद्ध वस्तुओं के आयातों में 46% तक घट गए थे, याचिकादाता की घरेलू बिक्रियां और निर्यात सर्वाधिक थे।

- (x) क्षति अवधि के दौरान याचिकादाता के निर्यात दुगुने हो गए हैं। निर्यात बाजार में याचिकादाता के घाटों में भी इसी प्रवृत्ति से वृद्धि हुई है। कार्य-निष्पादन में ऐसी गिरावट को क्षति विश्लेषण से पृथक् किया जाना चाहिए क्योंकि निर्यात बाजार में घाटों के लिए संबद्ध वस्तुओं के आयातों को जिम्मेदार नहीं माना जा सकता है।
- (xi) कच्चे माल की कीमत में 12% (प्रति यूनिट कीमत) तक की गिरावट आई है (स्रोत - भारत में वैश्विक आयातों के यूएन कॉमट्रेड के आंकड़े) और इसके समनुरूप पहुंच मूल्य में 17% तक की गिरावट आई है। तथापि, क्षति अवधि के दौरान घरेलू विक्रियों और निर्यात बाजार के लिए याचिकादाता की विक्रियों की लागत में 1% तक की वृद्धि हुई है और इसी अवधि के दौरान उसमें गिरावट आने के बजाय 63% तक की वृद्धि हुई है। प्राधिकारी से अनुरोध है कि लागत में वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारकों की बारीकी से जांच की जाए और याचिकादाता निर्यात और घरेलू बाजार के लिए विक्रियों की लागत के बीच इतना अधिक अंतर होने के कारण को स्पष्ट कर सकता है।
- (xii) क्षति अवधि के दौरान याचिकादाता को निरंतर बाजार के हिस्से का लाभ प्राप्त हुआ है, जबकि मांग में गिरावट आई है। समर्थकों के बाजार के हिस्से में भी वृद्धि हुई है। इसके विपरीत संबद्ध देश के बाजार का हिस्सा कम हुआ है। घरेलू उद्योग के हिस्से में पर्याप्त रूप से वृद्धि हुई है और यह संबद्ध आयातों के हिस्से से कुछ कम नहीं है। याचिकादाता समर्थकों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहा है और वह अन्य उत्पादकों द्वारा उत्पादन शुरू करने पर और अधिक प्रतिस्पर्धा का सामना करेगा।
- (xiii) मेसर्स गोल्डन फाईबर्स एलएलपी के समर्थक पत्र के अनुसार उसकी संबंधित कंपनी ने जांच अवधि सहित क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं के आयात किए थे। उन्हें यह स्पष्ट करना चाहिए कि क्या इस संबंधित पक्षकार के आयातों को "समर्थकों" अथवा "अन्य" द्वारा किए गए आयातों में शामिल किया गया है क्योंकि क्षति के विश्लेषण में समर्थकों के आयातों की मात्रा पर इसका प्रभाव पड़ता है।
- (xiv) याचिकादाता ने वर्ष 2016-17 और जांच अवधि के दौरान अपनी क्षमता को बढ़ाया है। इसके फलस्वरूप निबल अचल परिसम्पत्तियों में तेजी से वृद्धि हुई है। संयोगवश यह घाटों में हुई वृद्धि के समान है। केवल इन्हीं कारणों से याचिकादाता को क्षति हुई है।
- (xv) वार्षिक क्षमता और उत्पादन में वृद्धि होने के बावजूद याचिकादाता अपने स्टॉक को अच्छी तरह से बनाए रखने में सक्षम हुआ है। क्षति अवधि के दौरान स्टॉक में गिरावट आई थी। जांच अवधि के दौरान स्टॉक मात्र 97 सूचीबद्ध बिन्दु था, हालांकि आधार वर्ष की तुलना में इसी अवधि के दौरान क्षमता में 29% तक और उत्पादन में 26% तक की वृद्धि हुई थी। घरेलू उद्योग जितना भी उत्पादन कर रहा है, वह उसे बेच रहा है। इस प्रकार संबद्ध वस्तुओं के आयातों के कारण याचिकादाता के औसत स्टॉक में वृद्धि नहीं हुई थी।
- (xvi) क्षति अवधि के दौरान याचिकादाता की नियोजित पूंजी में तिगुना वृद्धि हुई है, लेकिन क्षति अवधि के दौरान उसकी स्थापित क्षमता में केवल 29% तक की वृद्धि हुई है। इसलिए ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि जांच अवधि के दौरान नियोजित पूंजी, उसी अवधि के दौरान स्थापित क्षमता में वृद्धि के समनुरूप है। तदनुसार, नियोजित पूंजी को कम और पूंजी पर प्रतिलाभ को अधिक होना चाहिए। लेकिन जैसा कि आंकड़े दर्शाते हैं, उसके विपरीत, याचिकादाता ने जांच अवधि के दौरान पूंजी पर कम प्रतिलाभ होने का दावा किया है। ऐसी अनियमितता की बारीकी से जांच की जानी चाहिए।
- (xvii) क्षमता में वृद्धि होने के कारण याचिकादाता की लागत में वृद्धि हुई है, लेकिन विक्री कीमत में तदुनुरूप तरीके से वृद्धि नहीं हुई है। क्षति अवधि के दौरान मांग में गिरावट आने के कारण विक्री कीमत में भी कोई वृद्धि नहीं हो सकी है। आयातों के कारण कोई कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण नहीं हुआ है।
- (xviii) घरेलू उद्योग आधार वर्ष 2014-15 और 2015-16 के दौरान लाभ अर्जित कर रहा था। लेकिन वर्ष 2016-17 के दौरान क्षमता और उत्पादों की लागत में वृद्धि होने के कारण उसे घाटों का सामना करना पड़ा था। ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ अन्य कारक हैं, जिनके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है।
- (xix) जांच अवधि के दौरान याचिकादाता ने 0-20% की सीमा में कीमत कटौती का दावा किया है। याचिकादाता को चीन जनवादी गणराज्य से आयात से अपने प्रचालनों का विस्तार करने का लाभ प्राप्त हुआ है। याचिकादाता के कीमत कटौती के दावे को खारिज कर दिया जाना चाहिए क्योंकि याचिकादाता ने समग्र क्षति अवधि के दौरान चीन जनवादी गणराज्य से आयात किए हैं और उसने संबद्ध वस्तुओं के पहुंच मूल्य को कम करने में योगदान दिया है जिसके कारण कीमत कटौती हुई है।
- (xx) पाटन-रोधी जांच में कारणात्मक संबंध को प्रमाणित करने के लिए कीमत कटौती अत्यंत महत्वपूर्ण प्राचलों में से एक प्राचल है और उसे वियोजन से नहीं देखा जाए। बल्कि उसे घरेलू उद्योग के समग्र कार्य-निष्पादन के आलोक में देखा जाए कि क्या इसके



परिणाम स्वरूप घाटे हुए हैं। वियोजन में कीमत कटौती कोई सार्थक कीमत प्रभाव नहीं दर्शाती है। यह विश्लेषण किया जाना चाहिए कि क्या ऐसी कीमत कटौती के फलस्वरूप घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति हो रही है। वर्तमान मामले में सकारात्मक कीमत कटौती होने के बावजूद घरेलू उद्योग ने अपने कार्य-निष्पादन में सुधार किया है।

- (xxi) उत्पादन और बिक्रियों के संबंध में घरेलू उद्योग उन्नति कर रहा है। तथापि, कीमत प्राचलों के संबंध में कुछ अन्य कारक हैं, जिनके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है, जिनके बारे में याचिकादाता को स्पष्टीकरण देने की आवश्यकता है। घरेलू उद्योग के समग्र कार्य-निष्पादन में सुधार हो रहा है। संबद्ध देश से आयात, घरेलू उद्योग को बिल्कुल भी क्षति नहीं पहुंचा रहे हैं।
- (xxii) चीन जनवादी गणराज्य से आयातों का याचिकादाता के घाटों पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा है। संयोगवश वर्ष 2016-17 और जांच अवधि के दौरान लाभप्रदता में गिरावट स्थापित क्षमता, निबल अचल परिसम्पतियों, मूल्यहास और व्याज की लागत में अचानक वृद्धि होने से आई है।
- (xxiii) मेसर्ज ग्रासिम इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने अनेक आपवादिक व्यय के बारे में सूचित किया है, जैसे कि मेसर्ज आदित्य बिरला नूवो लिमिटेड को अधिग्रहीत करने के लिए स्टाम्प शुल्क का भुगतान और अनेक अन्य किस्मों के व्यय, जिनका उल्लेख 31 मार्च, 2018 को समाप्त हुई तिमाही के लिए मेसर्ज ग्रासिम इंडस्ट्रीज लिमिटेड के वित्तीय परिणामों में किया गया है। यह अनुरोध है कि ऐसे आपवादिक व्ययों की जांच इस तरीके से की जाए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि याचिकादाता लागत को असमान्य रूप से नहीं बढ़ाए। याचिकादाता ऐसी बड़ी-चढ़ी लागत के कारण हुई क्षति को दर्शा सकता है।
- (xxiv) अधिग्रहण के समय परिसम्पतियों और देयताओं का पुनर्मूल्यांकन किया जाता है। ऐसा हो सकता है कि मेसर्ज ग्रासिम इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने मेसर्ज आदित्य बिरला नूवो लिमिटेड को अधिग्रहीत करने के लिए प्रीमियम का भुगतान किया हो। निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह आश्वस्त होना चाहिए कि पूंजी पर स्वीकृत किया गया प्रतिलाभ, मेसर्ज आदित्य बिरला नूवो लिमिटेड की लेखा बहियों में विगत दर्ज निबल अचल परिसम्पतियों का वास्तविक मूल्य हो और यह मेसर्ज आदित्य बिरला नूवो लिमिटेड द्वारा अदा किए गए प्रतिफल पर अथवा परिसम्पतियों के पुनर्मूल्यांकन आधारित नहीं हो, जैसा कि विस्कोसफिलेमेंट यार्न के मामले में किया गया है।
- (xxv) जीएफए स्तर पर नियोजित पूंजी पर 22% प्रतिलाभ (व्याज पूर्व लाभ) का घरेलू उद्योग का दावा गैर-कानूनी है क्योंकि मानदंड यह है कि इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी 2004 (170) ई.एल.टी. 144 (ट्राई-डेल.) के मामले में माननीय सेस्टेट के निर्णय के आलोक में प्रतिलाभ की ऐतिहासिक दर पर विचार किया जाए। निर्दिष्ट प्राधिकारी को विश्वभर में और भारत में मेसर्ज लिनन यार्न इंडस्ट्री द्वारा नियोजित प्रतिलाभ के स्तर की जांच करनी चाहिए और उसके बाद ही इस मामले में नियोजित पूंजी पर उचित प्रतिलाभ को अपनाना चाहिए।
- (xxvi) निर्दिष्ट प्राधिकारी, घरेलू उद्योग के उत्पादन की लागत के आधार पर क्षति रहित कीमत का निर्धारण करते हैं। निर्धारण बहुत बढ़ा-चढ़ा कर किया गया है और यह नियमावली के अनुबंध-3 के पैरा-4 के अनुसार वास्तविक स्थिति पर आधारित नहीं है। निर्दिष्ट प्राधिकारी को उचित लाभ मार्जिन के रूप में उद्योग द्वारा अर्जित नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ को तब अपनाना चाहिए था, जब पाटन का कोई आरोप नहीं था और न कि नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ 22% नहीं है। क्षति रहित कीमत का आकलन करने के लिए नियोजित पूंजी पर 22% प्रतिलाभ को अपनाना उचित नहीं है। उत्तरदायित्व को निभाने के लिए पद्धति को अपनाना आधार नहीं है। ड्रग्स (कीमत नियंत्रण) आदेश, 1987 (डीपीसीओ 1987) में भारत सरकार द्वारा निर्धारित नियोजित पूंजी पर 22% प्रतिलाभ के आधार को 30 वर्षों के बाद उचित नहीं माना जा सकता है, जबकि व्याज दर और कार्पोरेट कर जैसे प्राचल भिन्न थे। वास्तविक आधार पर व्याज दर और कार्पोरेट कर की वर्तमान दर को अपना कर ईक्विटी अनुपात के विभिन्न सेटों के लिए नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ का आकलन निम्नानुसार होगा, जो यह दर्शाता है कि 22% प्रतिलाभ घरेलू उद्योगको अनुचित संरक्षण प्रदान करता है।
- (xxvii) ब्रिज स्टोन टायर बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले के निर्णय के अनुसार नियोजित पूंजी पर 22% प्रतिलाभ ने क्षति निर्धारण को रंजित कर दिया है और इसने कम कीमत पर बिक्री करने और क्षति मार्जिन को बढ़ा-चढ़ा दिया है। निर्दिष्ट प्राधिकारी को ऐसी अवधि के दौरान जब पाटन का कोई आरोप नहीं था, उचित प्रतिलाभ का परिकलन करने के लिए एक आधार के रूप में घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित वास्तविक लाभ को अपनाना चाहिए। यूरोपीय यूनियन भी इसी पद्धति का अनुसरण करती है।

#### **प्राधिकारी द्वारा जांच**

55. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के निवेदनों को नोट कर लिया है। प्राधिकारी ने पाटन-रोधी नियमावली के अनुसार और सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों पर विचार करके घरेलू उद्योग की क्षति की जांच की है।

56. कच्चे माल की कीमतों बनाम संबद्ध वस्तुओं की बिक्री कीमत की प्रवृत्तियों के बारे में पक्षकारों के दावों और प्रतिकारी दावों की जांच की गई थी और यह पाया गया था कि दोनों पक्षों की शृंखला को बढ़ाया गया है। इस मुद्दे की जांच की गई है और उसका उचित समाधान किया गया है।
57. पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-II में (क) पाटित आयातों की मात्रा और घरेलू बाजार में समान वस्तुओं की कीमत पर पाटित आयातों के प्रभाव और (ख) ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच का प्रावधान है। जहां तक पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी के लिए यह जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए यह जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में कीमत में पर्याप्त कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे उत्पादों के प्रभाव से कीमत में काफी अधिक मात्रा में अन्यथा गिरावट आई है अथवा होने वाली इस वृद्धि में रुकावट आई है जो अन्यथा काफी अधिक स्तर तक बढ़ गई होती।
58. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध- II के पैरा (4) में उल्लिखित प्रावधान निम्नानुसार है:
- "(4) संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों, घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का मूल्यांकन शामिल होगा।"*
59. प्राधिकारी क्षति के सभी प्राचलों पर विचार करते हैं और उसके बाद सभी प्राचलों के समावेशी और संचयी जांच के आधार पर यह निर्णय लेते हैं कि क्या घरेलू उद्योग को पाटन के कारण क्षति हुई है। प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अपने निवेदनों/प्रत्युत्तरों/उत्तरों में प्रस्तुत किए गए तथ्यों, आंकड़ों और तर्कों को ध्यान में रखते हुए क्षति के प्राचलों की निष्पक्ष रूप से जांच की है।

#### I. पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

##### (क) कुल मांग

60. भारत में संबद्ध वस्तुओं की मांग और खपत (याचिकादाता की केप्टिव खपत सहित) का परिकलन, सभी भारतीय उत्पादकों और सभी स्रोतों से आयातों का मूल्यांकन करके किया गया है।

क्रमांक	विवरण	मापन का यूनिट	2014-15	2015-16	2016-17	जांच अवधि
1	याचिकादाता की केप्टिव सहित बिक्रियां	मी.टन	***	***	***	***
1क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	92	101	120
2	समर्थक की बिक्रियां	मी.टन	-	***	***	***
2क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध		100	233	217
3	अन्य भारतीय उत्पादक की बिक्रियां	मी.टन	***	***	***	***
3क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	100	60
4	संबद्ध देश - चीन	मी.टन	11,866	13,349	7,640	9,371
5	याचिकादाता द्वारा किए गए आयात	मी.टन	***	***	***	***
5क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	97	21	3
6	समर्थक द्वारा किए गए आयात	मी.टन	421	814	204	255

6क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	193	48	61
7	अन्यों द्वारा चीन से किए गए आयात	मी.टन	***	***	***	***
7 क	वृत्ति	सूचीबद्ध	100	120	101	141
8	अन्य देशों से आयात	मी.टन	209	111	39	52
9	मांग	मी.टन	15,698	17,547	13,023	15,080

61. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की केप्टिव खपत सहित बिक्री और समर्थकों की बिक्रियों में वृद्धि हुई है। तथापि, अन्य उत्पादकों की बिक्रियां कम हुई हैं। जांच अवधि के दौरान याचिकादाता और समर्थकों द्वारा किए गए आयातों में कमी हुई है, लेकिन अन्य उत्पादकों द्वारा किए गए आयातों में वृद्धि हुई है। अन्य देशों से आयातों में अत्यधिक कमी हुई है। वर्ष 2015-16 में विचाराधीन उत्पाद की मांग में गिरावट आई है और जांच अवधि में उसमें और वृद्धि हुई है तथा यह आधार वर्ष के स्तर पर पहुंच गई है।

(ख) समग्र रूप से आयातों की मात्रा

62. प्राधिकारी को इस पर विचार करने की आवश्यकता होती है कि क्या भारत में उत्पादन अथवा खपत के संबंध में अथवा समग्र रूप से पाटित आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई है। याचिकादाता ने भारत में उत्पादन अथवा खपत के संबंध में अथवा समग्र रूप से आयातों के व्यौर प्रस्तुत किए हैं, जिनमें (1) विचाराधीन उत्पाद के घरेलू उत्पादकों द्वारा किए गए आयात शामिल नहीं हैं और (2) केप्टिव खपत शामिल है और शामिल नहीं है। संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा निम्नानुसार है:—

क्रमांक	विवरण	यूनिट	2014-15	2015-16	2016-17	जांच अवधि
	<b>आयातों की मात्रा</b>					
1	संबद्ध देश - चीन	मी.टन	11,866	13,349	7,640	9,371
1क	घटाएं - याचिकादाता द्वारा किए गए आयात	मी.टन	***	***	***	***
1क (1)	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	97	21	3
1 ख	घटाएं - समर्थक द्वारा किए गए आयात	मी.टन	***	***	***	***
1 ख(1)	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	193	48	61
1 ग	अन्य द्वारा चीन से किए गए आयात	मी.टन	***	***	***	***
1 ग (1)	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	120	101	141
2	अन्य देशों से आयात	मी.टन	209	111	39	52
3	कुल	मी.टन	12,074	13,460	7,679	9,423
	<b>निम्नोक्त से आयातों का हिस्सा</b>					
4	संबद्ध देश - चीन	%	98.27	99.18	99.49	99.45
5	अन्य देशों से आयात	%	1.73	0.82	0.51	0.55
6	कुल	%	100	100	100	100
	<b>निम्नोक्त के संबंध में संबद्ध देश से आयात</b>					

7	याचिकादाता का उत्पादन	%	***	***	***	***
7क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	111	62	62
8	भारतीय खपत	%	***	***	***	***
8क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	107	121	147

63. यह देखा गया है कि वर्ष 2016-17 में संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद के आयात में गिरावट आई है और उसके बाद जांच अवधि में आयातों में वृद्धि हुई है। तथापि, ये आयात आधार वर्ष की तुलना में निम्न बने हुए हैं। वर्ष 2015-16 के दौरान उत्पादन के संबंध में आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है और भारत में बड़ी हुई क्षमताओं और उत्पादन के कारण आधार वर्ष की तुलना में वर्ष 2016-17 और जांच अवधि में आयातों में और अधिक गिरावट आई है।
64. इसके अलावा, आयात की मात्रा का विश्लेषण त्रैमासिक आधार पर किया गया था जिसमें याचिकाकर्ता और समर्थकों द्वारा किए गए आयात को शामिल किया गया था। याचिकाकर्ता और समर्थकों द्वारा प्रस्तुत ब्योरे के अनुसार, आयात की मात्रा में रुझान नीचे दिए गए हैं।

क्रमांक	अवधि	आयात की मात्रा (मी.टन)			
		याचिकादाता और समर्थक द्वारा किए गए आयातों सहित	प्रवृत्ति	याचिकादाता और समर्थक द्वारा किए गए आयातों सहित	प्रवृत्ति
1	अप्रैल, 16 - जून, 16 (तिमाही 1)	***	100	1,620	100
2	जुलाई, 16-सितंबर, 16 (तिमाही 2)	***	84	1,706	105
3	अक्टूबर, 16 - दिसंबर, 16 (तिमाही 3)	***	83	1,773	109
4	जनवरी, 17 - मार्च, 17 (तिमाही 4)	***	53	1,222	75
5	अप्रैल, 17 - जून, 17 (तिमाही 1)	***	131	3,017	186
	जुलाई, 17 - सितंबर, 17 (तिमाही 2)	***	126	2,935	181

65. यह देखा गया है कि वर्ष 2016-17 की प्रथम तिमाही से चौथी तिमाही तक आयातों में तेजी से गिरावट आई थी। तथापि, उसके बाद वर्ष 2017-18 की प्रथम तिमाही से दूसरी तिमाही के दौरान आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई है, जो अधिक महत्वपूर्ण है जब याचिकाकर्ता द्वारा किए गए आयात 2017-18 के दौरान लगभग नगण्य हैं।

## II. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के कीमत प्रभाव

66. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी को यह विश्लेषण करने की आवश्यकता होती है कि क्या भारत में समान उत्पादों की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा अत्यधिक कीमत कटौती की जा रही है अथवा क्या ऐसे पाटित आयातों का प्रभाव, कीमतों में ह्रास करना अथवा कीमतों में वृद्धि करना है, जो कि सामान्य स्थिति में अन्यथा होती। संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई है, के संदर्भ में की गई है। उत्पादन की लागत के इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की निबल बिक्री वसूली (एनएसआर) और क्षति रहित कीमत (एनआईपी) की तुलना, संबद्ध देश से आयातों की पहुंच लागत के साथ की गई है।

**(क) कीमतों का चलन**

67. याचिकादाता ने क्षति अवधि और जांच अवधि के लिए अलग-अलग मास के आधार पर डीजीसीआईएंडएस के आधार पर आयात कीमतों के ब्यौरे प्रस्तुत किए हैं।

क्रमांक	मास	यूनिट	2014-15	2015-16	2016-17	जांच अवधि
1	अप्रैल	रुपए/कि.ग्रा.	579	625	588	459
2	मई	रुपए/कि.ग्रा.	561	618	561	471
3	जून	रुपए/कि.ग्रा.	588	633	603	485
4	जुलाई	रुपए/कि.ग्रा.	573	641	602	524
5	अगस्त	रुपए/कि.ग्रा.	592	632	630	526
6	सितंबर	रुपए/कि.ग्रा.	589	645	529	510
7	अक्टूबर	रुपए/कि.ग्रा.	609	646	555	
8	नवंबर	रुपए/कि.ग्रा.	570	664	562	
9	दिसंबर	रुपए/कि.ग्रा.	621	680	554	
10	जनवरी	रुपए/कि.ग्रा.	600	589	492	
11	फरवरी	रुपए/कि.ग्रा.	606	604	463	
12	मार्च	रुपए/कि.ग्रा.	610	615	485	

68. उपरोक्त आंकड़ों से कीमतों में गिरावट आने की प्रवृत्ति का स्पष्ट पता चलता है। जांच अवधि के दौरान कीमतें स्वतः 555 रुपए/किलोग्राम से गिर कर 510 रुपए/किलोग्राम हो गईं, जबकि कच्चे माल की कीमतों में समनुरूप गिरावट नहीं हुई है।

**(ख) कीमत कटौती**

69. याचिकादाता द्वारा कीमत कटौती का परिकलन, संबद्ध देश से आयातों (डीजीसीआईएंडएस) की पहुंच कीमत की तुलना उनकी निबल बिक्री कीमत के साथ करके किया गया है। विभिन्न पीसीएन के लिए लागतों और कीमतों में व्याप्त अत्यधिक अंतर को देखते हुए कीमत कटौती का परिकलन पीसीएन-वार किया गया है।

आयात की मात्रा	घरेलू बिक्री कीमत	पहुंच कीमत	कीमत कटौती		
मी.टन	रुपए/कि.ग्रा.	रुपए/कि.ग्रा.	रुपए/कि.ग्रा.	%	सीमा
9,371	***	546.28	***	***	नकारात्मक

70. यह देखा जाता है कि सीमा में कीमत कटौती नकारात्मक है। याचिकाकर्ता ने कहा है कि उन्हें आयात मूल्य से मेल खाने के लिए घरेलू बिक्री मूल्य कम करना पड़ा जो कि नकारात्मक अंडरकटिंग का कारण है। यह बाद के पैरा में कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण के प्रभाव द्वारा आगे समर्थित है।

**(ग) पाटित आयातों के कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण के प्रभाव**

71. याचिकादाता ने बिक्रियों की लागत और बिक्री कीमत के ब्यौरे प्रस्तुत किए हैं और उनकी तुलना, आयातों के पहुंच मूल्य से की गई है, ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि क्या पाटित आयात, घरेलू कीमतों में कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण कर रहे थे। इनके ब्यौरे नीचे दिए गए हैं:

क्रमांक	विवरण	यूनिट	2014-15	2015-16	2016-17	जांच अवधि
1	बिक्रियों की लागत	रुपए/कि.ग्रा.	***	***	***	***
1क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	103	97
2	बिक्री कीमत	रुपए/कि.ग्रा.	***	***	***	***
2क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	88	81
3	पहुंच मूल्य	रुपए/कि.ग्रा.	657	705	625	564
आधार वर्ष में परिवर्तन						
4	बिक्रियों की लागत	रुपए/कि.ग्रा.	-	***	***	(***)
5	बिक्री कीमत	रुपए/कि.ग्रा.	-	(***)	(***)	(***)
6	पहुंच मूल्य	रुपए/कि.ग्रा.	-	48	(32)	(93)

72. यह नोट किया जाता है यह ध्यान दिया जाता है कि उस अवधि के दौरान कच्चे माल की कीमतों में वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग की बिक्री सामान्य रूप से 2015-16 में बढ़ोतरी के साथ समान स्तर पर होती है और इसके बाद इसमें गिरावट आई है। जबकि बिक्री मूल्य एक ही प्रवृत्ति का पालन नहीं किया है। इससे बिक्री की लागत की तुलना में काफी गिरावट आई है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग में नुकसान हुआ है। कम बिक्री मूल्य पीओआई के दौरान विषय देश से आयात के निचले पहुंच मूल्य के जवाब में था, यह दर्शाता है कि आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर निराशाजनक प्रभाव डाल रहा है। इस प्रकार भी पता चलता है कि आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर कीमत ह्रास का प्रभाव पड़ रहा है। बिक्री कीमत में कटौती लागत से अधिक थी, जिससे कीमत ह्रास का पता चलता है।

**(घ) कम कीमत पर बिक्री**

73. प्राधिकारी ने संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को कम कीमत पर बिक्री करने से हुई क्षति की जांच भी पीसीएन-वार की है, जिसके लिए आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत के साथ की गई है।

आयात की मात्रा	एनआईपी	पहुंच कीमत	कम कीमत पर बिक्री		
मी.टन	रुपए/कि.ग्रा.	रुपए/कि.ग्रा.	रुपए/कि.ग्रा.	%	सीमा
9,371	***	564.28	***	***	25-35

74. यह देखा गया है कि कम कीमत पर बिक्री सकारात्मक और अत्यधिक है जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है।

**III. घरेलू उद्योग से संबंधित आर्थिक प्राचलों की जांच**

75. पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-II में यह अपेक्षित है कि क्षति के विश्लेषण में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। जहां तक ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव का संबंध है, नियमों में आगे यह उपबंध है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में समस्त संगत आर्थिक कारकों और बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों; घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारकों,

पाटन मार्जिन की मात्रा; नकद प्रवाह, माल सूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित ऋणात्मक प्रभावों का तथ्यपरक एवं निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होगा। तदनुसार, घरेलू उद्योग के विभिन्न आर्थिक प्राचलों का विश्लेषण किया गया है, जिसका उल्लेख नीचे किया गया है।

**(क) क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्रियों की मात्रा**

76. उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग और बिक्रियों के संबंध में घरेलू उद्योग का कार्य-निष्पादन निम्नानुसार है:—

क्रमांक	विवरण	यूनिट	2014-15	2015-16	2016-17	जांच अवधि
1	क्षमता – संयंत्र	मी. टन	***	***	***	***
1क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	106	126
2	उत्पादन – संयंत्र	मी. टन	***	***	***	***
2क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	102	104	126
3	क्षमता उपयोग - संयंत्र	%	***	***	***	***
3क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	102	98	99
4	उत्पादन – विचाराधीन उत्पाद	मी. टन	***	***	***	***
4a	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	101	104	128
5	बिक्रियां					
5क	घरेलू	मी. टन	***	***	***	***
5 क(1)	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	72	87	104
5ख	निर्यात	मी. टन	***	***	***	***
5ख(1)	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	57	135	234
5ग	केप्टिव खपत	मी. टन	***	***	***	***
5ग (1)	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	129	128	150

77. यह देखा गया है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता में वृद्धि की है और उसका क्षमता उपयोग, अभी भी समान स्तर पर बना हुआ है। समग्र क्षति अवधि के दौरान उत्पादन में वृद्धि हुई है। वर्ष 2015-16 में याचिकादाता की घरेलू बिक्रियों (जिनमें केप्टिव बिक्रियां शामिल नहीं हैं) में गिरावट आई है और उसके बाद उसमें वृद्धि हुई है। समग्र क्षति अवधि के दौरान निर्यात बिक्रियों, जिनका हिस्सा मामूली है, में वृद्धि हुई है। समग्र क्षति अवधि और जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की केप्टिव खपत ने भी मामूली सुधार दर्शाया है।

**(ख) मांग में बाजार का हिस्सा**

78. भारतीय मांग में घरेलू उद्योग के बाजार के हिस्से (जिसमें याचिकादाता की केप्टिव खपत शामिल है) को नीचे तालिका में दर्शाया गया है:—

क्रमांक	विवरण	मापन यूनिट	2014-15	2015-16	2016-17	जांच अवधि*
1	याचिकादाता का हिस्सा	%	***	***	***	***
1क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	82	122	125
2	समर्थक का हिस्सा	%	-	***	***	***
2क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध		100	315	252
3	अन्य भारतीय उत्पादकों का हिस्सा	%	2.55	2.28	3.07	1.59
4	संबद्ध देश - चीन का हिस्सा	%	75.59	76.08	58.66	62.14
4 क	याचिकादाता द्वारा किए गए आयात	%	***	***	***	***

4क(i)	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	68	25	3
4 ख	समर्थक द्वारा किए गए आयात	%	***	***	***	***
4 ख(i)	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	173	58	63
4ग	अन्य द्वारा चीन से किए गए आयातों का हिस्सा	%	40.32	43.28	48.93	59.33
4ग(i)	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	107	121	147
5	अन्य देशों का हिस्सा	%	1.33	0.63	0.30	0.34
6	केप्टिव सहित कुल मांग	%	100	100	100	100

79. यह देखा गया है कि वर्ष 2015-16 के दौरान याचिकादाता की केप्टिव खपत सहित घरेलू उद्योग के बाजार का हिस्सा कम हुआ है और उसके बाद क्षति अवधि और जांच अवधि में उसमें वृद्धि हुई है। क्षति अवधि के दौरान कुल मांग में समर्थकों के बाजार के हिस्से में वृद्धि हुई है लेकिन जांच अवधि में उसमें गिरावट आई है। क्षति अवधि और जांच अवधि के दौरान अन्य उत्पादकों का हिस्सा मामूली है तथा उसने मामूली परिवर्तन दर्शाया है। समग्र क्षति अवधि और जांच अवधि के दौरान संवद्ध देश से आयातों का हिस्सा अत्यधिक है। अन्य देशों से आयातों के हिस्सा मामूली था और समग्र क्षति अवधि के दौरान उसमें निरंतर कमी हुई है और यह जांच अवधि में नगण्य हो गया है।

**(ग) माल सूचियां**

80. घरेलू उद्योग द्वारा दर्शाया गया माल सूची का स्तर निम्नानुसार है:—

विवरण	यूनिट	2014-15	2015-16	2016-17	जांच अवधि*
औसत स्टॉक	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	87	91	96

81. पीओआई के दौरान वास्तविक माल सूची का स्तर चोट का संकेत नहीं है।

**(घ) लाभ/हानि, ब्याज पूर्व लाभ, नकदी लाभ और निवेश पर प्रतिलाभ**

82. लाभप्रदता, पीबीआईटी, निवेश पर प्रतिलाभ और नकदी लाभ के संबंध में घरेलू उद्योग का कार्य-निष्पादन निम्नानुसार है:—

क्रमांक	विवरण	यूनिट	2014-15	2015-16	2016-17	जांच अवधि
1	कच्चे माल की लागत	रुपए/कि.ग्रा.	***	***	***	***
1क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	81	84	105
2	विक्रियों की लागत	रुपए/कि.ग्रा.	***	***	***	***
2क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	103	96
3	विक्री कीमत	रुपए/कि.ग्रा.	***	***	***	***
3क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	87	81
4	विक्री कीमत के % के रूप में कच्चे माल की लागत	%	***	***	***	***
4क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	81	96	130
5	लाभ/(हानि)	रुपए/कि.ग्रा.	***	***	(***)	(***)
5क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	58	(11)	(20)
6	लाभ/हानि	लाख रुपए	***	***	(***)	(***)
6क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	42	(10)	(20)
7	पीबीआईटी	लाख रुपए	***	***	***	***



7क	प्रवृत्ति		100	59	23	11
8	नकदी लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
8क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	50	11	10
9	नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ	%	***	***	***	***
9क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	37	13	5

83. यह देखा गया है कि —

- (क) कच्चे माल की कीमतों में वृद्धि के कारण 2015-16 में वृद्धि के साथ बिक्री की लागत पूरी अवधि के दौरान लगभग उसी स्तर पर है।
- (ख) पीओआई में भारी गिरावट के साथ आधार वर्ष की तुलना में बिक्री की कीमत पूरी अवधि में निरंतर गिरावट आई है। याचिकाकर्ता ने कहा है कि आयात के कम पहुंच मूल्य के परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग को जांच अवधि के दौरान अपनी बिक्री मूल्य कम करना पड़ा।
- (ग) वर्ष 2014-15 में घरेलू उद्योग लाभ अर्जित कर रहा था, जिसमें गिरावट आनी शुरू हो गई थी और वर्ष 2016-17 में उसे वित्तीय घाटे होने शुरू हो गए थे, जो कि जांच अवधि के दौरान और अधिक बढ़त हो गए थे। समग्र क्षति अवधि के दौरान व्याज पूर्व लाभ और करों में अत्यधिक गिरावट आई है। समग्र क्षति अवधि के दौरान नकदी लाभ में भी अत्यधिक गिरावट आई है। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान समग्र आधार पर नकदी लाभ में 87.51% तक की गिरावट आई है।
- (घ) समग्र क्षति अवधि और जांच अवधि के दौरान नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ में अत्यधिक सीमा तक गिरावट आई है।

#### (ङ) उत्पादकता, रोजगार और वेतन

84. रोजगार, वेतन, उत्पादकता और संवृद्धि के संबंध में घरेलू उद्योग का कार्य-निष्पादन निम्नानुसार है:—

क्रमांक	विवरण	यूनिट	2014-15	2015-16	2016-17	जांच अवधि
1	उत्पादकता प्रति दिवस	मी.टन/दिवस	***	***	***	***
1क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	101	104	126
2	उत्पादकता प्रति कर्मचारी	मी.टन/संख्या	***	***	***	***
2क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	98	107	125
3	रोजगार	संख्या	***	***	***	***
3क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	103	98	102
4	वेतन और मजदूरियां	लाख रुपए	***	***	***	***
4क	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	112	129	158

85. यह देखा गया है कि समग्र क्षति अवधि के दौरान उत्पादकता प्रति दिवस, उत्पादकता प्रति कर्मचारी और अदा किए गए वेतन में वृद्धि हुई है। क्षति अवधि के दौरान रोजगार के स्तर में मामूली वृद्धि हुई है, लेकिन जांच अवधि के दौरान यह लगभग उसी स्तर पर आ गया था, जो कि आधार वर्ष में था।

#### (च) संवृद्धि

86. मात्रा और कीमत के विभिन्न प्राचलों के रूप में यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग की संवृद्धि ने मात्रा के विभिन्न प्राचलों के संबंध में सकारात्मक संवृद्धि दर्ज की है। तथापि, समग्र क्षति अवधि और जांच अवधि के दौरान कीमत के प्राचल नकारात्मक बने रहे हैं।

#### (छ) पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता

87. याचिकादाता ने बताया है कि उसने क्षमताओं का संवर्धन कर दिया है और वह अपनी क्षमताओं का उपयोग करने में सक्षम है तथा पूंजीगत निवेश जुटाने की उसकी क्षमता प्रभावित नहीं हुई है क्योंकि वह एक बड़ा औद्योगिक समूह है।

**(ज) घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक**

88. जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से आयातित सामग्री का पहुंच मूल्य, घरेलू उद्योग की विक्री कीमत और उत्पादन की लागत से अत्यधिक कम था। घरेलू उद्योग ने यह बताया है कि इस उत्पाद का कोई अर्थक्षम स्थानापन्न नहीं है। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग ने यह भी बताया है कि ऐसी अत्यधिक पारस्परिक प्रतिस्पर्धा होने का कोई साक्ष्य नहीं है, जिसके फलस्वरूप बाजार में वर्तमान कीमत में गिरावट आए। इस प्रकार घरेलू उद्योग की कीमतों के लिए उत्तरदायी एक मात्र कारक उत्पाद की आयात कीमतें हैं।

**(झ) क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन**

89. एडी नियमों के अनुलग्नक III के संदर्भ में प्राधिकरण द्वारा निर्धारित घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विषय वस्तु के लिए पीसीएन वार क्षति रहित कीमत की तुलना सहकारी निर्यातक के लिए आयात के भूमिगत मूल्य से की गई है। विषय देश से और चोट मार्जिन भारित औसत आधार पर निर्धारित किया गया है। अवशिष्ट श्रेणी के लिए पहुंच मूल्य (सहकारी निर्यातक का सबसे कम) के साथ गणना के लिए एनआईपी घरेलू उद्योग का भारित औसत एनआईपी है।

क्रमांक	उत्पादक/निर्यातक	मात्रा	एनआईपी	एलवी	क्षति मार्जिन		
		मी.टन	अमरीकी\$/ मी.टन	अमरीकी\$/ मी.टन	अमरीकी\$/ मी.टन	%	% सीमा
1	मेसर्ज झेझियांग किंगडम लिनेन कंपनी लिमिटेड/ मेसर्ज जिआंगसू जिनवुयान फ्लेक्स कंपनी लिमिटेड/मेसर्ज झेझियांग जिनवुयान फ्लेक्स कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	***	25-35
2	मेसर्ज जिक्सियांग सनसाईन लिनेन टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	***	25-30
3	मेसर्ज झेझियांग एक्सियांग फ्लेक्स टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड/मेसर्ज हुझोऊ एक्सियांग इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	***	30-40
4	मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल कंपनी लिमिटेड, मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल जिली लिनेन टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड और मेसर्ज झेझियांग गोल्डन ईगल स्पन सिल्क कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	***	25-35
5	मेसर्ज हैंगझाऊ सांगलू सिल्क कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	***	30-40
6	मेसर्ज ग्रेट इंस्टर्न टेक्सटाईल्स (टोंगलिंग) कंपनी लिमिटेड/ मेसर्ज निंगबो विन बे ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	***	15-25
7	मेसर्ज चांगझाऊ मेईयुआन फ्लेक्स टेक्सटाईल कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	***	15-25
8	मेसर्ज टुंग गा लिनेन एंड कॉटन (चांगझाऊ) कंपनी लिमिटेड	***	***	***	***	***	1-10
9	क्रमांक 1-8 में निर्दिष्ट उत्पादकों से भिन्न कोई अन्य	***	***	***	***	***	75-85

**IV. अन्य ज्ञात कारक और कारणात्मक संबंध**

90. घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों की मात्रा और कीमत के प्रभाव की उसकी कीमत कटौती और कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण के प्रभाव के रूप में जांच करने पर पाटन-रोधी नियमावली के अंतर्गत सूचीबद्ध अन्य सूचक प्राचलों की प्राधिकारी द्वारा यह देखने के लिए जांच की गई है कि क्या पाटित आयातों से भिन्न कोई अन्य कारक भी घरेलू उद्योग की क्षति के लिए उत्तरदायी हो सकता है, जो कि निम्नानुसार है:-

(क) **तृतीय देशों से आयातों की मात्रा और कीमतें:** संबद्ध देश से भिन्न अन्य देशों से आयातों की मात्रा नगण्य है और उसमें क्षति अवधि में और भी गिरावट आई है। इसके अतिरिक्त तृतीय देश से आयात, चीन से संबद्ध वस्तुओं की आयात कीमत से अधिक कीमत पर किए गए थे और इसलिए ये घरेलू उद्योग की मूल्यांकित क्षति का कारण नहीं हैं, जैसा कि नीचे तालिका में देखा जा सकता है:-

क्रमांक	अन्य देशों के विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	जांच अवधि
1	भारतीय मांग में अन्य देशों के बाजार का हिस्सा (जब मांग में याचिकादाता द्वारा केप्टिव मांग शामिल होती है)	%	1.33	0.63	0.30	0.34
2	अन्य देशों से आयात की मात्रा	मी.टन	209	111	39	52
3	कुल आयातों में अन्य देशों के बाजार का हिस्सा	%	1.73	0.82	0.51	0.55
4	आयात कीमत - अन्य देश	रूपए/कि.ग्रा.	511.41	600.26	621.55	536.68

(ख) **मांग में परिवर्तन:** जैसा कि ऊपर नोट किया गया है, वर्ष 2015-16 में भारत में संबद्ध उत्पाद की मांग में गिरावट आई है और उसके बाद वैश्विक प्रवृत्ति के समनुरूप जांच अवधि में उसमें वृद्धि हुई है। हालांकि वर्ष 2015-16 में मांग में गिरावट आई थी, फिर भी वह समग्र रूप से घरेलू उद्योग की क्षमताओं से बहुत अधिक थी। जैसा कि दावा किया गया है, मांग में गिरावट आने के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है।

(ग) **प्रोद्योगिकी में विकास:** संबद्ध उत्पाद की प्रोद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। वास्तव में याचिकादाता और निर्यातक समान प्रोद्योगिकी प्रयुक्त करते हैं। इस प्रकार प्रोद्योगिकी में विकास को घरेलू उद्योग की क्षति का एक कारक नहीं माना जा सकता है।

(घ) **प्रतिस्पर्धा और व्यापारिक प्रतिबंधित पद्धति की दशाएं:** ऐसी कोई व्यापारिक प्रतिबंधित पद्धति नहीं है, जो कि घरेलू उद्योग की क्षति के लिए उत्तरदायी हो सकती है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुएं भारत में किसी व्यापारिक प्रतिबंधित पद्धति के अध्यधीन नहीं हैं। सामान्य प्रतिस्पर्धा, जिसका किसी भी बाजार अर्थव्यवस्था में होना स्वभाविक है, के अतिरिक्त कोई भी पारस्परिक प्रतिस्पर्धा अथवा विभिन्न घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय स्रोतों से आपूर्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा, ऐसा कोई प्रभाव नहीं दर्शाती है, जिसे उद्योग की क्षति माना जा सकता हो।

(ङ) **घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन:** प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन को घरेलू और निर्यात बाजार के लिए पृथक किया गया है। घरेलू बाजार से संबंधित सूचना केवल वर्तमान प्रयोजनार्थ ही प्रासंगिक है।

(च) **घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और बेचे गए अन्य उत्पादों का निष्पादन:** प्राधिकारी द्वारा विचारित सूचना, केवल विचाराधीन उत्पाद से संबंधित है।

(छ) **घरेलू उद्योग की उत्पादकता:** समग्र क्षति अवधि के दौरान उत्पादकता प्रति दिवस के साथ-साथ प्रति कर्मचारी में वृद्धि हुई है। इस प्रकार उत्पादकता में संभावित गिरावट, घरेलू उद्योग की क्षति का कारण नहीं है।

91. इस प्रकार यह देखा गया है कि क्षति के अन्य सूचीबद्ध कारकों में से कोई भी कारक घरेलू उद्योग की क्षति के लिए जिम्मेदार नहीं है।

92. प्राधिकारी ने इसकी जांच की है कि क्या पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। निर्धारण करने के लिए कारणात्मक संबंध प्रमाणित करने के लिए निम्नलिखित कारक संबद्ध हैं:-
- (i) वर्ष 2016-17 में आयातों में गिरावट आने के बाद जांच अवधि में आयातों की मात्रा में एक बार पुनः वृद्धि हुई है।
  - (ii) आयातों की कीमतों में तेजी से गिरावट आई है। आयात की कीमतों में गिरावट आने के फलस्वरूप बाजार में अत्यधिक कीमत हास हुआ है।
  - (iii) आयातों की पहुंच कीमत, घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत/उचित कीमत से बहुत कम है और भारत में कम कीमत के पाटित आयातों के आने के कारण अत्यधिक कम कीमतों पर बिक्री हो रही है।
  - (iv) लाभ में गिरावट आई है, जिसके फलस्वरूप वर्ष 2016-17 और जांच अवधि में वित्तीय घाटे हुए हैं, नकदी लाभ में गिरावट आई है तथा ब्याज पूर्व लाभ और नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ नकारात्मक रहा है।
  - (v) घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्रियों में वृद्धि होने के बावजूद वर्ष 2016-17 से घरेलू उद्योग की लाभप्रदता नकारात्मक रही है। बल्कि वर्ष 2015-16 के बाद लाभ में गिरावट आई थी और घरेलू उद्योग को वर्ष 2016-17 से वित्तीय घाटे होने शुरू हो गए थे। समग्र क्षति अवधि के दौरान नकदी लाभ में अत्यधिक गिरावट आई थी, जो कि इतना कम हो गया था कि वह जांच अवधि में 1% भी नहीं रहा था, जो कि आधार वर्ष में था। समग्र क्षति अवधि के दौरान ब्याज पूर्व लाभ और नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ में भी अत्यधिक गिरावट आई थी, जो कि इतना घट गया था कि जांच अवधि में यह नकारात्मक रहा था। इसका कारण यह है कि पाटित कीमतों पर संबद्ध आयात किए जा रहे थे।
  - (vi) संबद्ध देश में उत्पादकों ने अपनी कीमतों को कम कर दिया था ताकि वे देश में अपनी मात्रा और बाजार को बनाए रख सकें। इसके परिणाम स्वरूप घरेलू उद्योग को अपने उत्पादन को बेचने के लिए अपनी कीमतों का कम करने के लिए बाध्य होना पड़ा था।

#### **ज. प्रकटन के बाद की टिप्पणियां**

93. हितबद्ध पक्षों से प्रकटन के बाद के अनुरोध प्राप्त हुए हैं। उनमें उठाए गए मुद्दों को पहले ही जांच के दौरान उठाया गया है और उचित रूप से उन पर ध्यान दिया गया है। तथापि, स्पष्टता के लिए हितबद्ध पक्षों द्वारा अनुरोध की जांच निम्नानुसार की जा रही है:

#### **घरेलू उद्योग के विचार**

94. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए:

- i. संबद्ध देश से निर्यातकों/उत्पादकों की सत्यापन रिपोर्ट का अगोपनीय अंश सार्वजनिक फ़ाइल के माध्यम से अन्य हितबद्ध पक्षों को उपलब्ध नहीं कराया गया है।
- ii. प्राधिकारी कृपया प्रतिवादी निर्यातक के लिए वास्तविक पाटन मार्जिन और अपनाई गई निर्यात कीमत के आधार का प्रकटन कर सकते हैं और निर्यातक द्वारा दावा की गई निर्यात कीमत किस प्रकार से भारत में आयात आकड़ों की पुष्टि करता है।
- iii. लिनन यार्न चाहें 100% लिनन फाइबर या 95% लिनन फाइबर से बने हों, अभी भी विचाराधीन उत्पाद हैं। तथापि यह आम तौर पर सच है कि लिनन यार्न लिनन फाइबर से बनता है, तथापि, ऐसी स्थिति में जहां फाइबर का 5% लिनन नहीं है, यार्न अभी भी लिनन यार्न है, भले ही यह 100% लिनन यार्न न हो। 100% लिनन यार्न और 95% लिनन यार्न में व्यावहारिक रूप से कोई अंतर नहीं होगा। इसके अलावा प्राधिकारी शुल्क तालिका में निर्दिष्ट कर सकते हैं कि पीयूसी को सीमा शुल्क वर्गीकरणों जिनके तहत आयातकों द्वारा माल की निकासी की जा रही है, के बावजूद शुल्क आकर्षित करना चाहिए।
- iv. चीन के निर्यातकों और उत्पादकों के उत्तरों को स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि वे सही और प्रमाणित जानकारी प्रदान करके अपनी दायित्व को निर्वहन करने में असफल रहे हैं। उन्होंने आसानी से अपनी संबंधित सरकारों द्वारा प्राप्त प्रोत्साहन के रूप में दिए जाने वाले प्रोत्साहन की कोई जानकारी नहीं दी है, जो कम कीमत वाले आयात के प्रमुख कारणों में से एक हैं। वे महत्वपूर्ण जानकारी जैसे कि उनके संबंधित पक्षों का नाम, का प्रकटन करने में भी असफल रहे हैं।
- v. मै. तुंग गा ने उल्लेख किया है कि संबंधित उत्पाद से संबंधित कोई संबंधित कंपनियां नहीं हैं। तथापि, सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध जानकारी के अनुसार, इसमें एक संबंधित कंपनी अर्थात् मैसर्स टोंगलिंग वर्ल्डसम लिनन और कमी टेक्सटाइल कं. लिमिटेड है (लिनन यार्न एल -36 एनएम) जो लिनन यार्न से संबंधित है। यह कताई, बुनाई, रंगाई और लिनन उत्पादों की

किस्मों की परिष्करण में विशेषज्ञ हैं। मैसर्स टोंगलिंग वर्ल्डसम ने वर्तमान जांच में भाग नहीं लिया है। यह समझना असंभव है कि क्या इस कंपनी ने भारत को संबद्ध वस्तुएं निर्यात की हैं या नहीं।

- vi. मै. तुंग गा के पास पीयूसी के लिए अत्यंत सीमित क्षमता है और इसलिए वे अलग एडीडी के लिए हकदार नहीं हैं। ऐसी स्थिति में जहां एक कंपनी द्वारा किए गए निर्यात की मात्रा काफी अधिक नहीं है, नियम स्पष्ट रूप से प्रतिदर्श की अनुमति देते हैं, जिसके परिणामस्वरूप ऐसी गैर नमूना कंपनियों को नमूना कंपनियों के भारित औसत के आधार पर पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन से प्रभावित किया जाता है। वर्तमान मामले में, कुछ उत्पादक भारत को पूरा का पूरा निर्यात कर रहे हैं। चूंकि ऐसा मामला है, इसलिए पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन भारत में पीयूसी की भारी मात्रा के निर्यात के भारित औसत पर आधारित हो सकता है। जब तक किसी पक्ष ने प्रतिनिधि मात्रा निर्यात नहीं किया है, तब तक कोई भी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन प्रतिनिधि नहीं होगा।
- vii. पाटन मार्जिन न केवल सकारात्मक बल्कि काफी अधिक है। अब जब आयात मूल्य घट गया है, जहां नवंबर, 2016 के बाद चीन से याचिकाकर्ता द्वारा पीयूसी का कोई आयात नहीं हुआ है। ऐसा कोई मामला नहीं है जिसमें याचिकाकर्ता ने कम कीमत पर सामग्री खरीदी और कीमतों में वृद्धि होने पर पाटन के विरुद्ध शिकायत कर रहा है। यहाँ यह विपरीत स्थिति है।
- viii. आयात भारत में घरेलू उद्योग की कीमत को कम कर रहे हैं और इस तरह के पाटित आयात का प्रभाव घरेलू कीमतों को कम करना था। घरेलू उद्योग में कीमतों में क्षति हुई है। क्षमताओं में वृद्धि के परिणामस्वरूप उत्पादन में वृद्धि हुई जिसके परिणामस्वरूप बिक्री में वृद्धि हुई और परिणामस्वरूप, लाभ में वृद्धि हुई। तथापि, घरेलू उद्योग का लाभ कम हो गया।
- ix. घरेलू उद्योग को पाटन के परिणामस्वरूप भारी वित्तीय घाटे का सामना करना पड़ा है, जो घरेलू उद्योग द्वारा वित्तीय नुकसान की मात्रा पर विचार करते हुए सिद्ध हो जाता है और याचिकाकर्ता द्वारा किए गए नए निवेश की तुलना करने पर स्थापित हो जाता है। घरेलू उद्योग द्वारा नुकसान इतना अधिक था कि यदि घरेलू उद्योग को इसी दर पर वित्तीय नुकसान का सामना करना पड़े तो इसका ताजा निवेश केवल 6.32 वर्षों में बट्टे खाते में चला जाएगा।
- x. घरेलू उद्योग वास्तविक क्षति का सामना कर रहा है, जो लाभप्रदता, नकदी लाभ और निवेश पर नकारात्मक आय के मामले में खराब प्रदर्शन से प्रमाणित है। घरेलू उद्योग द्वारा सामना की जाने वाली वास्तविक क्षति पाटन के कारण हुई है और पाटनरोधी नियमावली में उल्लिखित अन्य ज्ञात कारकों सहित किसी भी अन्य कारकों के कारण नहीं।
- xi. संबद्ध वस्तु के पाटित आयात में वृद्धि और घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति के बीच एक मजबूत संबंध मौजूद है।
- xii. यह अनुरोध किया जाता है कि इस तथ्य को देखते हुए कि प्राधिकारी ने वर्तमान जांच में पीसीएन प्रणाली पर विचार किया है, प्राधिकारी निश्चयात्मक उपाय मूल्यानुसार लागू करें जिसे संबद्ध आयातों के सीआईएफ मूल्य के प्रतिशत के रूप में ज्ञात किया जाए। विभिन्न पीसीएन की लागत और कीमतों में काफी अंतर है। संदर्भ कीमत के अनुसार निश्चयात्मक शुल्क या नियत शुल्क इस मामले में उपयुक्त नहीं होगा।
- xiii. याचिकाकर्ता को सीमित अवधि के लिए अप्रत्याशित श्रमिक समस्या और परिणामस्वरूप उत्पादन निलंबन का सामना करना पड़ा था। यद्यपि याचिकाकर्ता को पिछले 2 दशकों से किसी श्रमिक समस्या का सामना नहीं करना पड़ा, वर्तमान मुद्दा श्रम मजदूरी निपटारे से जुड़े मुद्दों के कारण सामने आया। तथापि मुद्दों को पूरी तरह से हल किया गया है और अगले पांच वर्षों के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए हैं। कंपनी ने अगस्त के पहले सप्ताह में उत्पादन पुनः आरंभ किया।
- xiv. अन्य भारतीय उत्पादक क्षमता स्थापित करने या बढ़ाने की अपनी योजनाओं को कार्यान्वित कर रहे हैं।
- xv. डाउनस्ट्रीम उत्पाद, फ्लेक्स फैब्रिक (50% से अधिक फ्लेक्स सामग्री वाले बुने हुए कपड़े) पहले से ही एंटी-डंपिंग ड्यूटी के तहत अच्छी तरह से कवर किए गए हैं, जिस पर 17.2.2009 के बाद से शुल्क लागू किया गया है और 2015 के दौरान एसएसआर में समीक्षा की गई है (@ 0.63 और 0.75 \$ / मीटर)।
- xvi. याचिकाकर्ता अपनी कैप्टिव आवश्यकताओं से कहीं अधिक क्षमता रखता है। इसके अलावा, रुपये के धुन के लिए बड़े निवेश। \*\*\* करोड़, विभिन्न अन्य उत्पादकों द्वारा भारतीय बाजार में भी बनाया गया है जहां उत्पादन जल्द ही शुरू हो रहा है और अधिक मात्रा में आने के साथ शुरू हो गया है इसलिए विषय वस्तु की उपलब्धता की कोई कमी नहीं होगी। यह फ्लेक्स यार्न के विभिन्न उत्पादकों के बीच अंतर से प्रतिस्पर्धा करके घरेलू बाजार में माल की कीमतों का खयाल रखेगा।

#### **प्रतिवादी हितवद्ध पक्षों के विचार**

95. विभिन्न हितवद्ध पक्षों के अनुरोध संक्षेप में निम्नानुसार हैं:

- i. 70 ली गणना 42 एनएम के बराबर है और 43 एनएम नहीं है।
- ii. हितवद्ध पक्षों ने यह नहीं दर्शाया है कि उन्होंने यार्न के अपने बिक्री रिकॉर्ड में इन यार्न को अलग और भिन्न कैसे किया है और यह जानकारी कैसे सत्यापित की जा सकती है। फर्स्ट ग्रेड-लंबे फाइबर से बने फ्लेक्स यार्न और सेकेंड ग्रेड-शॉर्ट फाइबर फ्लेक्स यार्न के बीच 6% -23% का कीमत अंतर मौजूद है। आयात आकड़ों में बिल्कुल सटीक उल्लेख नहीं किया गया है कि सभी आयातों में यार्न छोटे फाइबर या लंबे फाइबर से बना था या नहीं।
- iii. यद्यपि रंगीन यार्न बहुत सीमित है, तथापि यह पीसीएन के मापदंड के रूप में प्राकृतिक/अर्द्ध ब्लैच (रंगाई) पर विचार नहीं करने का कारण बन जाएगा, क्योंकि यह पैरामीटर उत्पादन की लागत को बहुत प्रभावित करता है।
- iv. याचिकाकर्ता एडी नियमों के नियम 2 (ख) के तहत घरेलू उद्योग के रूप में माना जाने योग्य नहीं है, क्योंकि याचिकाकर्ता क्षति की अवधि में संबद्ध वस्तु का नियमित आयातक रहा है। याचिकाकर्ता और समर्थकों ने क्षति अवधि में आयात किया है। उन्होंने इस तरह के आयात के माध्यम से कथित क्षति में योगदान दिया है। उन्हें क्षति की स्थिति में उनके योगदान का लाभ लेने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। पाटनरोधी शुल्क लगाने के बाद भी याचिकाकर्ता चीन जन. गण. से अपने सामान के लिए संबद्ध वस्तु आयात करना जारी रखेगा।
- v. विभिन्न प्रकार की सुविधाओं की खपत का प्रयोग करके सामान्य मूल्य परिकलित करना या क्षतिरहित कीमत की गणना करना उचित नहीं है क्योंकि विभिन्न सुविधाओं की लागत अलग-अलग है। सुविधाओं की लागत की गणना करते समय सुविधा की उचित खपत पर विचार किया जाएगा। परिकलित सामान्य मूल्य और क्षतिरहित कीमत की गणना के लिए प्राधिकारी द्वारा उपयोग किए जाने वाले आकड़ों के स्रोत का पता लगाने का कोई संकेत नहीं है।
- vi. इस जांच में पाटनरोधी उपायों को लागू करने से भारतीय घरेलू उद्योग और इसके डाउनस्ट्रीम उद्योगों के दीर्घकालिक और समग्र हित प्रभावित होंगे।
- vii. घरेलू उद्योग आने वाले समय जब भारत में फ्लेक्स यार्न की बहुत अधिक मांग होने की उम्मीद है, की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम नहीं है। घरेलू उद्योग की क्षमता भारत में मांग के आधे से भी कम है। मैसर्स रेमंड लकज़री कॉटन, मैसर्स कामरहती जूट मिल्स, मैसर्स भारत विजय मिल्स या तो वाणिज्यिक उत्पादन शुरू करने की प्रक्रिया में हैं या उन्होंने हाल ही में विनिर्माण शुरू कर दिया है और इसे स्थिर करने की कोशिश कर रहे हैं। इन नए निर्माताओं में से किसी ने भी इस वर्ष के लिए फ्लेक्स यार्न की स्थिर आपूर्ति का कोई आश्वासन नहीं दिया है। वास्तव में, कोई भी भारतीय निर्माता 55 ली काउंट (33 एनएम) की फ्लेक्स यार्न का उत्पादन नहीं करता है जो आवश्यक है।
- viii. चीन की मिलों के साथ खरीद अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए हैं। यदि पाटनरोधी शुल्क तत्काल प्रभाव से लगाया जाता है, तो यह वाणिज्यिक नियोजन को पूरी तरह से खतरे में डाल देगा। 30-40% के बीच के पाटनरोधी शुल्क के परिणामस्वरूप फ्लेक्स कपड़ों की कीमत में 15-20% की वृद्धि होगी, इसलिए ग्राहक इस तरह की उच्च कीमतों पर फ्लेक्स कपड़े खरीदने से इनकार कर देंगे और इसके परिणामस्वरूप भारी नुकसान होगा।
- ix. याचिकाकर्ता और समर्थकों ने यह दावा नहीं किया है कि उनके द्वारा संबद्ध वस्तु के आयात का पाटन नहीं किया गया है। संबद्ध वस्तुओं की आयात जानकारी को अलग करने के लिए कोई कानूनी आधार नहीं है। इस प्रकार, जब याचिकाकर्ता और समर्थकों द्वारा संबद्ध वस्तुओं के आयात को भी हटा दिया जाता है, तो उन्हें दूसरों द्वारा आयात के साथ जोड़ा जाना चाहिए और केवल तब ही संबद्ध वस्तुओं के आयात की जांच की जानी चाहिए।
- x. केरल में हाल में आई बाढ़ के कारण भारी नुकसान का सामना करना पड़ा है। यदि पाटनरोधी शुल्क इस समयावधि के बीच लगाया जाता है, तो यह भारत में उपयोगकर्ता उद्योग के लिए विनाशकारी होगा। यह अनुरोध किया जाता है कि प्राधिकारी नवंबर 2018 तक अंतिम जाँच परिणाम को रोके रखें ताकि उपयोगकर्ता जिन्होंने इस सीजन के लिए फ्लेक्स कपड़े के उत्पादन की योजना बनाई है, आसानी से काम कर सकें।
- xi. निरमा लिमिटेड बनाम भारत संघ, विशेष सिविल आवेदन संख्या 16426/2016 में गुजरात उच्च न्यायालय के निर्णय के अनुसार क्षति सिद्ध करने के लिए कम कीमत पर बिक्री कोई मानदंड नहीं है। निर्दिष्ट प्राधिकारी का दायित्व है कि वे एडी नियमावली के अनुबंध 11 के साथ पठित नियम 11 (2) के अनुसार मात्रा और कीमत दोनों संबंधी क्षति को सिद्ध करें। आयात की मात्रा में वृद्धि और कीमत कटौती की मौजूदगी मात्र यह निर्धारित करने के लिए पर्याप्त नहीं है कि घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है। याचिकाकर्ता की क्षति की जानकारी के पूरे विश्लेषण से याचिकाकर्ता को किसी क्षति का संकेत नहीं मिलता है।

- xii. चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तुओं के आयात में समग्र रूप से क्षति अवधि के दौरान 21% की कमी आई है। आयात की मात्रा में गिरावट घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई कथित क्षति में योगदान नहीं दे सकती है।
- xiii. संबद्ध वस्तु के आयात का याचिकाकर्ता के कार्यनिष्पादन पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा। क्षति अवधि के दौरान नियोजित पूंजी पर आय में केवल याचिकाकर्ता द्वारा क्षमता विस्तार के कारण गिरावट आई है। तथ्य मात्र यह है कि कथित कीमत कटौती के बावजूद याचिकाकर्ता भारत में अपनी बिक्री का विस्तार करने में कामयाब रहा, क्षति की अनुपस्थिति को दर्शाता है।
- xiv. मांग में गिरावट के समय, याचिकाकर्ता ने बाजार हिस्सेदारी हासिल की, जबकि चीन जन. गण. से आयात की मात्रा में कमी आई और बाजार हिस्सेदारी में कमी आई। यह भारतीय बाजार में याचिकाकर्ता की मजबूत स्थिति का प्रदर्शन करता है। इस समय के दौरान याचिकाकर्ता के निर्यात प्रदर्शन में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ।
- xv. चीन जन.गण. से सभी उत्पादकों/निर्यातकों पर आयात कीमतों को कम करने के इरादे का आरोप बिना किसी ठोस सबूत के नहीं लगाया जा सकता है।
- xvi. बिक्री कीमत में गिरावट फ्लेक्स फाइबर के कच्ची सामग्री की कीमतों में गिरावट के अनुरूप है। पहुंच मूल्य में गिरावट कच्चे माल की कीमतों में गिरावट के अनुरूप है। याचिकाकर्ता और निर्यातकों दोनों को फ्लेक्स फाइबर की कच्ची सामग्री की कीमतों में गिरावट से लाभ हुआ है। याचिकाकर्ता की बिक्री की लागत पर प्रभाव 2016-17 से क्षमता विस्तार के कारण पड़ा है।
- xvii. याचिकाकर्ता ने 2016-17 से अपनी क्षमता का विस्तार करने में भारी निवेश किया था, इसलिए संतुलन में समय लगता है। कोई उद्योग क्षमता में तत्काल विस्तार से लाभ कमाने की उम्मीद नहीं कर सकता है। 2016-17 और पीओआई के दौरान लाभप्रदता में गिरावट इस अवधि के दौरान स्थापित क्षमता, निवल स्थाई संपत्ति, मूल्यहास और व्याज लागत में अचानक वृद्धि के साथ सीधे मेल खाती है। 2014-15 और 2015-16 के दौरान जब संबद्ध वस्तु का आयात बहुत अधिक था याचिकाकर्ता लाभ में थे। नुकसान तब हुआ जब संबद्ध वस्तु का आयात 2016-17 के दौरान सबसे कम था। इससे कारणात्मक संबंध का अभाव स्पष्ट रूप से दिखता है।
- xviii. भारतीय घरेलू उद्योग ने भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु की कुल मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त मात्रा में उत्पादन नहीं किया है। इस प्रकार, डाउनस्ट्रीम उपयोगकर्ता अन्य देशों से आयात करने के लिए बाध्य हैं। यदि भारी पाटनरोधी शुल्क के कारण संबंधित आयातित उत्पाद को अचानक भारतीय बाजार से अवरुद्ध कर दिया गया था, तो भारतीय डाउनस्ट्रीम उद्योग अनिवार्य रूप से अपर्याप्त आपूर्ति, बहुत अधिक खरीद मूल्य और कम लाभ जैसे नकारात्मक प्रभाव से पीड़ित होगा और घाटा उठाएगा।

#### **प्राधिकारी द्वारा जांच**

- 96. यह नोट किया गया है कि प्रकटन के बाद में उठाए गए मुद्दों पर पहले से ही प्रासंगिक अनुच्छेदों में प्राधिकारी द्वारा जांच की जा चुकी है, तथापि स्पष्टता के लिए, नीचे उन्हें दोहराया गया है:
  - i. नियम 2 (ख) के तहत याचिकाकर्ता को घरेलू उद्योग के रूप में माने जाने की योग्यता के संबंध में, यह नोट किया गया है कि प्राधिकारी ने उपरोक्त प्रासंगिक अनुच्छेद में इस मुद्दे पर विस्तार से विचार किया था।
  - ii. पीसीएन के संबंध में, यह नोट किया गया है कि प्राधिकारी ने पहले से अधिसूचित रूप से और वर्तमान मामले के तथ्यों और परिस्थितियों के संबंध में विचार करने के बाद सभी संगत मानकों पर विचार करते हुए पीयूसी को वर्गीकृत किया है।
  - iii. एक निर्यातक के कामकाज में गणना त्रुटि की ओर इशारा किया गया था और उचित जांच के बाद प्राधिकारी ने इसे सुधार दिया है।
  - iv. एक निर्यातक के विरुद्ध आपत्ति के संबंध में, अनुरोध की फिर से जांच की गई और पाया कि प्राधिकारी ने उन्हें अलग शुल्क मार्जिन सही ढंग से दिया है।
  - v. आगामी समयावधि में फ्लेक्स यार्न की उच्च मांग के बारे में उसे पूरा करने की आवश्यकता के संबंध में, यह ध्यान दिया जाता है कि एडीडी का उद्देश्य आयात को प्रतिबंधित करना नहीं है, बल्कि घरेलू उद्योग और निर्यातकों को समान स्तर की प्रतिस्पर्धा प्रदान करना है।
  - vi. चीन की मिलों के साथ हस्ताक्षरित खरीद अनुबंध के संबंध में, यह ध्यान दिया जाता है कि पाटनरोधी शुल्क अनुचित व्यापार प्रक्रिया के विरुद्ध लगाया जाता है और न कि वाणिज्यिक योजना को खतरे में डालने के लिए।

**झ. निष्कर्ष**

97. इस जांच परिणाम में यथा अभिलिखित प्राधिकारी के समक्ष हितबद्ध पक्षों द्वारा उठाए गए मुद्दों और किए गए अनुरोधों और उपलब्ध कराए गए तथ्यों की जांच करने के बाद, प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि :
- विचाराधीन उत्पाद को संबद्ध देश से उसके सामान्य मूल्य से कम पर भारत को निर्यात किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप पाटन हुआ है।
  - संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद के पाटन के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति का सामना करना पड़ा है।
  - वास्तविक क्षति संबद्ध देश से पाटन आयात के कारण हुई है।

**ब. भारतीय उद्योग का हित और अन्य मुद्दे**

98. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सामान्यतः द्वारा घरेलू उद्योग को पार व्य पाटन के अनुचित व्या का उद्देश्यपाटनरोधी शुल्क : र्धा कायम हो सके जो देश के एवं पक्षपात रहित प्रतिस्पर्ध करना है ताकि भारतीय बाजार में मुहोने वाली क्षति को समाप्त हित मेंसामान्य है। यह स्वीकार किया जाता है कि पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से डाउनस्ट्रीम उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है। तथापि पाटनरोधी , उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी विशेष रूप से तब जबकि पाटनरोधी शुल्क की राशि घरेलू उद्योग को हुई क्षति के उपचार के लिए आवश्यक राशि तक सीमित हो। इसके विपरीत पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से पाटन की प्रक्रियाओं द्वारा अर्जित अनुचित लाभ कम होगाघरेलू उद्योग का , पतन होने से रुकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं को इस उत्पाद की व्यापक उपलब्धता बनाए रखने में सहयोग मिलेगा। पाटनरोधी उपायों का अधिरोपण करने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होगा और इसलिए उपभोक्ताओं इस संबद्ध वस्तु की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

**ट. सिफारिशें**

99. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरुआत की गई और उसकी सूचना सभी हितबद्ध पक्षकारों को प्रदान की गई थी और पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सकारात्मक सूचना प्रदान करने के लिए निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था । पाटनरोधी नियमों के अनुसार पाटन, क्षति एवं उनके कारणात्मक संबंध के बारे में जांच शुरू और संपन्न करने के बाद और सकारात्मक पाटन मार्जिन तथा ऐसे पाटन आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति की पुष्टि करने के उपरांत प्राधिकारी का यह मत है कि पाटन एवं क्षति को समाप्त करने के लिए पाटनरोधी शुल्क लगाना अपेक्षित है । अतः केश से संबद्ध वस्तु तरीके से संबद्ध दे 5 वर्षों की अवधि के लिए निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करना आवश्यक समझते हैं।
- 100 . प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन इनमें से निश्चयात्मक पाटन रोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके । तदनुसार, संबद्ध देश के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर 5 वर्ष के लिए निम्नलिखित शुल्क तालिका के कालम 7 में उल्लिखित राशि के बराबर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है।

**शुल्क तालिका**

क्र.सं.	उपशीर्ष या टैरिफ मद*	वस्तुओं का वर्णन	उद्गम या निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि USD/Kg
1	2	3	4	5	6	7
1.	530610 और 530620	70 ली गणना (या 42 एनएम से नीचे) से कम के फ्लैक्स यार्न	चीन जन. गण.	झेजियांग किंगडम लिनेन कं. लि./ जिआंगसू जिनयुआन फ्लैक्स कं. लि. / झेजियांग जिनयुआन फ्लैक्स कं. लि.	जिआंगसू जिनयुआन फ्लैक्स कं. लि. / झेजियांग जिनयुआन फ्लैक्स कं. लि.	2.42
2.			चीन जन. गण.	यिक्सिंग सनसाइन लिनेन टैक्सटाइल कं. लि.	यिक्सिंग सनसाइन लिनेन टैक्सटाइल कं. लि.	2.29
3.			चीन जन. गण.	झेजियांग एक्सियांग फ्लैक्स टैक्सटाइल कं. लि. .	हूझू एक्सियांग इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट ट्रेडिंग कं. लि.	2.77
4.			चीन जन. गण.	झेजियांग गोल्डेन ईगल कं. लि./ झेजियांग गोल्डेन ईगर यिलि लिनेन टैक्सटाइल कं.	झेजियांग गोल्डेन ईगल कं. लि./ झेजियांग गोल्डेन ईगर स्पन लिनेन टैक्सटाइल कं.	2.02



			लि.	लि.	
5.		चीन जन. गण.	हांगझू सांगलू सिल्क कं. लि.	हांगझू सांगलू सिल्क कं. लि. .	2.71
6.		चीन जन. गण.	ग्रेट ईस्टर्न टैक्सटाइल (टांगलिंग) कं. लि. .	निंगबो विन वे कं. लि.	1.30
7.		चीन जन. गण.	चांगझू मीयुआन फ्लैक्स टैक्सटाइल कं. लि..	चांगझू मीयुआन फ्लैक्स टैक्सटाइल कं. लि..	2.06
8.		चीन जन. गण.	तुंग गा लिनेन एंड काटन (चांगझू) कं. लि.	तुंग गा लिनेन एंड काटन (चांगझू) कं. लि.	0.50
9.		चीन जन. गण.	क्र. सं. 1-8 में उत्पादकों से इतर कोई	क्र. सं. 1-8 में निर्यातक से इतर कोई	4.83

\* सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और शुल्क का निर्धारण पीयूसी के वर्णन के अनुसार किया जाएगा। ऊपर उल्लिखित पीयूसी उक्त पाटनरोधी शुल्क के अधीन होगी चाहे उसका आयात किसी अन्य एचएस कोड के अधीन किया जाए।

101. ऊपर यथा अनुशंसित शुल्क की दर उसमें विनिर्दिष्ट उत्पादक और निर्यातक द्वारा निर्यात पर लागू होगी। सीमाशुल्क विभाग को संबद्ध वस्तु की निकासी के समय उत्पादक का नाम सुनिश्चित करना चाहिए।
102. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमा शुल्क अधिनियम द्वारा यथानिर्धारित आकलन योग्य के अंतर्गत सीमाशुल्क 1962य मूल्य होगा और इसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, क3, ख8, को तथा 9क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों 9 शामिल होंगे। छोड़कर सभी शुल्क
103. आवेदक घरेलू उद्योग के लिए उस संबद्ध वस्तु जिसके विरुद्ध पाटनरोधी उपायों की सिफारिश की जा रही है, की विनिर्माण सुविधा के गठन/स्वामित्व में किसी परिवर्तन के संबंध में उक्त परिवर्तन को साक्ष्यांकित करने वाले संगत दस्तावेजों के साथ प्राधिकारी को सूचित करना अपेक्षित है। यह सूचना प्राधिकारी के पास उक्त परिवर्तन, यदि कोई हो, के 60 दिनों के भीतर पहुंच जानी चाहिए।
104. केन्द्र सरकार द्वारा इस अंतिम जांच परिणाम पर आधारित आदेश के विरुद्ध कोई अपील सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जा सकेगी।

सुनील कुमार, अपर सचिव एवं महानिदेशक

**MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY****(Department of Commerce )****(DIRECTORATE GENERAL OF TRADE REMEDIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 18th September, 2018

**(Final Findings)****Subject: Anti-dumping duty investigation on the imports of Flax Yarn of below 70 Lea Count originating in or exported from China PR.**

**F. No. 6/3/2018/DGAD.**—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time (hereinafter also referred to as “the Act”) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995, as amended from time to time (hereinafter also referred to as “the Rules”) thereof.

2. And whereas, Jaya Shree Textiles- Unit of M/s Grasim Industries Limited (previously Jaya Shree Textiles- Unit of Aditya Birla Nuvo Ltd.) (hereinafter also referred to as the “Applicant” or “domestic industry” or “Jaya Shree”) filed an application in the present case before the Designated Authority (hereinafter also referred to as “the Authority”), Directorate General of Trade Remedies (erstwhile Directorate General of Anti-Dumping and Allied Duties) in accordance with the Act and the Rules for initiation of anti-dumping investigation and imposition of appropriate duty thereof on dumped imports of “Flax Yarn of below 70 Lea Count” (hereinafter referred to as “the subject goods” or “the product under consideration”) originating in or exported from People’s Republic of China (hereinafter also referred to as “the subject country”).
3. And whereas, the Authority on the basis of prima facie evidence submitted by the Applicant justifying initiation of anti-dumping investigation, issued a public notice vide Notification No. 6/3/2018-DGAD dated 7<sup>th</sup> February, 2018 in accordance with the Rule 5 of the Rules to examine and determine existence, degree and effect of the alleged dumping of the subject goods, originating in or exported from the subject country, and to recommend the amount of anti-dumping duty, which, if levied, would be adequate to remove the alleged injury to the domestic industry.

**A. PROCEDURE**

4. Procedure described herein below has been followed with regard to this investigation, after issuance of the public notice notifying the initiation of the above investigation by the Authority:
  - i. The Authority notified the Embassy of the subject country in India about the receipt of the anti-dumping application before proceeding to initiate the investigations in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra.
  - ii. The Authority sent a copy of the initiation notification to the embassy of the subject country in India, known producers/exporters from the subject country, known importers/users in India, other Indian producers and the domestic industry as per the addresses made available by the applicant and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.
  - iii. The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known producers/exporters and to the Embassy of the subject country and Importers/users in India in accordance with Rule 6(3) of the Rules supra.
  - iv. The Embassy of the subject country in India was also requested to advise the exporters/producers from the subject country to respond to the questionnaire within the prescribed time limit. A copy of the letter and questionnaire sent to the producers/exporters was also sent to the Embassy along with the names and addresses of the known producers/exporters from the subject country.
  - v. The Authority sent Exporter’s Questionnaire to the following known producers/exporters to elicit relevant information in accordance with Rule 6(4) of the Rules:
    - a. Zhejiang Golden Eagle Company Limited, China PR,
    - b. Heilongjiang Yanshou Jijia Flax Textile Company Limited, China PR,
    - c. Huzhou A Xiang Import & Export Trading Company Limited, China PR,
    - d. Tongling Worldbest Ramie Company Limited, China PR,

- e. Hangzhou Shanglu Silk Company Limited, China PR
- vi. In response to the above notification, the following exporters/ producers responded and submitted questionnaire responses:
  - a. Great Eastern Textiles (Tongling) Company Limited, China PR,
  - b. Ningbo Win Way Trading Company Limited, China PR,
  - c. Yixing Sunshine Linen Textile Company Limited, China PR,
  - d. Changzhou Meiyuan Flax Textile Company Limited, China PR,
  - e. Tung Ga Linen & Cotton (Changzhou) Company Limited, China PR,
  - f. Huzhou Axiang Import and Export Trading Company Limited, China PR,
  - g. Zhejiang Axiang Flax Textile Company Limited, China PR,
  - h. Zhejiang Golden Eagle Company Limited, China PR,
  - i. Zhejiang Golden Eagle Spun Silk Company Limited, China PR,
  - j. Zhejiang Golden Eagle Yili Linen Textile Company Limited, China PR,
  - k. Zhejiang Jinyuan Flax Company Limited, China PR,
  - l. Zhejiang Kingdom Linen Company Limited, China PR,
  - m. Hangzhou Shanglu Silk Company Limited, China PR,
  - n. Jiangsu Jinyuan Flax Company Limited, China PR.
- vii. Market Economy Treatment (MET) questionnaire was also forwarded to the known producers/exporters in China PR and the Embassy of China PR in India with the request to provide relevant information to the Authority within the prescribed time limit. However, none of the responding producers/exporters from China have claimed MET.
- viii. The Authority sent Importer's Questionnaires to the following known importers/users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the Rules:
  - a. Bombay Rayon Fashions Limited, Maharashtra,
  - b. Siyaram Silk Mills Limited, Maharashtra,
  - c. Raymond Luxury Cottons Limited, Maharashtra,
  - d. Shri Damodar Yarn Manufacturing Private Limited, Daman
  - e. Bharat Vijay Mills, Gujarat
- ix. In response to the initiation notification, the following importers/users/consumers responded and submitted questionnaire responses and detailed objections to the petitioner and initiation thereof:
  - a. Texventures LLP,
  - b. Kottex Industries Private Limited,
  - c. Silver Line Fashion Fabrics Limited,
  - d. Ujjawal Textiles,
  - e. M/s Vrijesh Corporation,
  - f. Vrijesh Natural Fibre & Fabrics (India) Private Limited,
  - g. M/s Viraat Fashion,
  - h. WFB Baird & Company (India) Private Limited.
- x. In addition to above named importers, following importers along with China Chamber of Commerce of Import and Export of Textile and Apparel filed detailed objections to the petition and initiation thereof within the prescribed time line:
  - a. K.K.P. Fine Linen Pvt. Ltd.
  - b. Jagdamba Textiles Pvt. Ltd.
  - c. Anantnath Silk Mills Pvt. Ltd.

- xi. In addition to above, following interested parties filed letters in response to the initiation notification within the time line prescribed by the Authority:
  - a. Linyarn Textiles
  - b. Al Champdany Industries Limited
  - c. JainvatiImplex
  - d. WFB Baird & Company (India) Pvt Ltd.
- xii. The Authority made available non-confidential version of the documents presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- xiii. The Designated Authority had notified PCN vide notification dated 22.5.2018 calling for PCN wise information from interested parties including domestic industry in order to have fair comparison.
- xiv. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCIS) to provide the transaction-wise details of imports of subject goods for the past three years, and the period of investigation, which was received by the Authority. The Authority has relied upon the DGCIS data for computation of the volume of imports and required analysis after due examination of the transactions.
- xv. The Non-Injurious Price (NIP) based on the optimum cost of production and cost to make & sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and Annexure III to the Anti-dumping Rules has been worked out so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the Domestic Industry.
- xvi. The Authority held an oral hearing on 5<sup>th</sup> June, 2018 to provide an opportunity to the interested parties to present relevant information orally in accordance with Rule 6 (6), which was attended by the representatives of domestic industry and other interested parties. All the parties who presented their views in the oral hearing were requested to file written submissions of their views expressed orally. The parties were also advised to collect written submissions made by the opposing parties and submit their rejoinders thereafter.
- xvii. The verification of the information provided by the domestic industry was carried out to the extent considered necessary and such verified information has been relied upon.
- xviii. The verification of producers and exporters was also carried out in the subject country and some exporters' verification was conducted in table study by calling documents in the Directorate.
- xix. The Period of Investigation (POI) for the purpose of the present review investigation is October, 2016 to September, 2017 (12 months). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period 2014-15, 2015-16, 2016-17 and the POI.
- xx. The submissions made by the interested parties, during the course of this investigation, and found relevant have been addressed by the Authority, in this Notification.
- xxi. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- xxii. A Disclosure Statement was issued on 13.8.2018 containing essential facts under consideration of the Designated Authority, giving time up to 21.8.2018 to furnish comments, if any, on Disclosure Statement. The Authority has considered post disclosure comments received from interested parties appropriately
- xxiii. '\*\*\*' in this document represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules. ( ) bracket in this Notification indicate negative number/range.
- xxiv. Exchange rate for POI has been taken by the Authority as Rs.66.70 = 1 US\$.

## **B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE**

### **Views of the Domestic industry**

5. The views of the domestic industry are as follows:
  - i. The product under consideration in the present petition is "Flax Yarn of below 70 Lea Count (42 Nm)". Flax yarn of 70 and above lea is specifically excluded from the scope of the product under consideration.

- ii. Flax Yarn is a linen yarn. It is a natural cellulosic fiber, highly moisture absorbent, has higher conductivity and possesses naturally antimicrobial, antifungal properties. The Yarn made out of the Flax Fiber is called Flax Yarn/Linen Yarn. All other natural cellulosic fibers such as cotton, hemp, jute and ramie are beyond the scope of product under consideration for the purpose of present petition. If the product under consideration is described as linen/flax yarn, this is well understood in customs and market parlance.
- iii. The use of flax yarn is in making flax fabric. Flax fabric is used for apparel such as dresses, suits, separates, skirts, jackets, pants, blouses, shirts, children's wear etc., and home textiles such as curtains, draperies, upholstery, bedspreads, table linens, sheets, dish towels etc.
- iv. There is no known difference in the PUC exported from China PR and that produced by the Indian industry. In the present case, both the imported and the domestic product have comparable characteristics in terms of parameters such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification, etc. Consumers can use and are using the two interchangeably. The two are technically and commercially substitutable and thus, are like article.
- v. The product under consideration is generally imported under HS code 5306 1090 and 5306 2090. However, import can also take place under other HS codes, therefore, it is clarified that the HS codes are only indicative and the product description shall prevail in all circumstances.
- vi. Model-match criteria or PCN system- The Designated Authority decided a PCN system after proposing a PCN and seeking comments from all interested parties thereon. The petitioner has put on record all relevant information including PCN wise cost of production of the domestic industry.
- vii. Long/short fiber, original color/semi bleached, etc. criteria are largely subsumed in the present product control number. Not every parameter can become the basis of product control number. Reasonability, appropriateness and requirement needs to be seen. The Authority may decide appropriately.
- viii. The cost of production of flax yarn varies with three parameters – (a) lea count, (b) whether the yarn is made out of short fiber or long fiber, and (c) whether the yarn is grey or dyed. However, (a) analysis of import data will show that more than 95% of the imports are in grey form as the market for dyed form of yarn is very limited; (b) the yarns are made either from short fiber or from long fiber. There are counts where both may be used and the proportion of short and long fiber will depend upon the manufacturer. However, the import data does not very precisely mention whether the yarn was made out of short fiber or long fiber in all imports. The interested parties have not shown how they have distinguished and differentiated these yarns in their sales records and how the information can be verified

#### **Views of the opposing interested parties**

6. The following interested parties have made submissions as follows:
  - i. The PCN proposed by the Designated Authority may not be appropriate for fair comparison in the present investigation. The proposed PCN overly simplifies the analysis because Lea count is not the only factor affecting the price of the product concerned. The price of the subject goods could also be influenced by Long/short fiber, original color/semi bleached, etc. Such differences are important and affect the cost and selling price.
  - ii. With the same NM number, the price of the subject product made of long fiber is generally higher than the price of the one made of short fiber; and the price of the subject product with original colour is often higher than the price of the one that is semi bleached. The respondents proposed that PCNs should also be distinguished as per Long/short fiber and original color/semi bleach.

#### **Examination by the Authority**

7. The product under consideration for the purpose of present investigation is "Flax Yarn of below 70 Lea Count (equivalent to 42 Nm)".
8. Flax Yarn is a natural cellulosic fiber having naturally antimicrobial, antifungal properties. The Yarn is generally made out of the 100% flax fiber and is called Linen Yarn or Flax Yarn. The flax fiber can also be blended with other fibers for making flax yarn or linen yarn. The primary use of flax yarn is in making flax fabric. Flax fabric is used for apparel and in home textiles.
9. All other natural cellulosic fibers such as cotton, hemp, jute and ramie are beyond the scope of product under consideration for the purpose of present investigations. Flax yarn of 70 and above lea is specifically excluded from the scope of the product under consideration.
10. The Authority proposed to notify PCNs for the purpose of determining dumping margin and injury margin for undertaking fair comparison and sought views from various interested parties with regard to the proposed PCN.

All the interested parties submitted information. Some parties contended that the proposed PCN may not be appropriate for fair comparison in the present investigation. The Authority considered all submissions and after taking into consideration all the relevant parameters notified the following PCNs, having regard to the facts and circumstances of the present case.

SN	Lea Category	Nm Category	PCN
1	Upto 5 lea	Upto 3 Nm	01
2	Above 5 and upto 10	Above 3 and upto 6	02
3	Above 10 and upto 15	Above 6 and upto 9	03
4	Above 15 and upto 20	Above 9 and upto 12	04
5	Above 20 and upto 25	Above 12 and upto 15	05
6	Above 25 and upto 30	Above 15 and upto 18	06
7	Above 30 and upto 35	Above 18 and upto 21	07
8	Above 35 and upto 40	Above 21 and upto 24	08
9	Above 40 and upto 45	Above 24 and upto 27	09
10	Above 45 and upto 50	Above 27 and upto 30	10
11	Above 50 and upto 55	Above 30 and upto 33	11
12	Above 55 and upto 60	Above 33 and upto 36	12
13	Above 60 and upto 65	Above 36 and upto 39	13
14	Above 65 and Less than 70	Above 39 and Less than 42	14

11. The Authority considered information on record and observed that product under consideration produced by the domestic industry and imported from the subject country are comparable in terms of physical & chemical characteristics, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The goods produced by the domestic industry and imported from the subject country are like articles in terms of the Rules. The two are technically and commercially substitutable. The Authority holds that the subject goods produced by the domestic industry are like article to the product under consideration imported from subject country within the scope and meaning of Rule 2(d) of antidumping Rules.
12. The product under consideration is generally classified under Chapter 53 of the Customs Tariff Act under head 5306 and sub heading 53061090 and 53062090. The HS codes are considered only indicative and the product description is decisive for the purpose of the present investigations.

### **C. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY AND STANDING**

#### **Views of the Domestic industry**

13. Following submissions have been made by the domestic industry:
  - i. The petition has been filed by M/s Grasim Industries Limited – Jaya Shree Textiles (previously–Aditya Birla Nuvo Ltd. Unit – Jaya Shree Textiles). Jaya Shree accounts for substantial share (68.84%) in production of the product concerned in India.
  - ii. At the time of filing the petition, three others companies were producing subject goods in the country i.e M/s Linen Art Pvt. Ltd., M/s Golden Fibers and M/s A.I. Champdany Industries Ltd which continue to be in commercial production. Amongst these, M/s Golden Fibers and M/s Linen Art are supporting the present petition. Letter from these supporting companies have already been placed on record.
  - iii. Further, M/s Raymond Luxury Cottons, M/s Kamarhati Jute Mills, M/s Bharat Vijay Mills and M/s WFB Baird & Co.India Pvt. Ltd. were setting up new plants for production of the product under consideration and shall be in commercial production by 2018-19. While Raymond has started its commercial production in April, 2018, Bharat Vijay Mills' (Sintex industries) is scheduled to commence production in June, 2018 followed by further capacity expansion in August, 2018.

- iv. The petitioner has imported small quantities of subject goods from China during October - December, 2016 under duty free advance authorisation scheme. The imports were to the extent of \*\*\*\*% of total Indian demand. There are no imports by petitioner after this period. The yarn so imported during this period was consumed in production of the goods exported from India and did not compete with the yarn produced and supplied by Indian producers in the Indian market.
- v. As regards the contention of the interested parties that there is no law which allows ignoring “duty free” imports for the purpose of standing in an anti-dumping investigation, the petitioner submitted that it had imported the subject goods during the first quarter of the period of investigation under duty exemption scheme of the Govt. of India. The yarn so imported was consumed in production of the downstream products exported from India and did not compete with the yarn produced and supplied by Indian producers in the Indian market. A manufacturer exporter is eligible to operate under the Advance Authorization Scheme. The Foreign Trade Policy 2009 – 2014 and 2015 – 2020 provides Duty Exemption / Remission Schemes under Chapter 4. A company has to be an exporter in order to receive the Advance License. Eligibility criteria are contingent upon exports by the company. It is not contingent upon use of domestic rather than imported inputs and the industry to which company belongs or the region in which Company is located. Thus, the imports made by the petitioner during the period of investigation were not meant for consumption in India and did not compete in the market.
- vi. Rule 2(b) does not automatically exclude the domestic producer from the purview of domestic industry if it has imported the subject goods itself. The core business of the petitioner needs to be seen. The imports have declined throughout the injury period and there were no imports made after the first quarter of POI. Prior to POI, there were duty free imports also among others.
- vii. The petitioner is committed to production as may be seen from the various expansions undertaken by Jaya Shree. The petitioner has undertaken full production, is committed to production of the subject goods and has a significant volume of flax yarn to sell in the market.
- viii. The imports made by the petitioner from China during the POI constitutes a minor fraction compared to the total imports entering India, total imports from China, total Indian production, production of Jaya Shree, domestic sales of Jaya Shree and Indian demand.
- ix. The petitioner’s business has never shifted from production to imports. Such imports only supplemented the production effort and not substituted its production efforts. It is established practice that the imports made to supplement the production efforts should not be considered as sufficient reason to treat such company as ineligible.
- x. It is the submission of DI that Earlier the Designated Authority has accepted an importer as the DI, for example, the case of Phenol originating in or exported from Japan and Thailand. Further, vide paragraph no. 37 (b) of the petition, the petitioner submitted that prior to POI, the subject goods were imported by the petitioner for creating market for its products to produce from the new facility. The two parts needs to be read as referring to two different periods.
- xi. The petitioner is not related to any producer-exporter of the subject goods in China or importer in India
- xii. The petitioner has sufficient standing and constitutes domestic industry within the meaning of the Rules.

#### **Views of the opposing interested parties**

14. Following are the issues raised by other interested parties with respect to standing:
  - i. The petitioner has imported the subject goods during the injury period including in the POI and has benefitted from the alleged low-priced imports of the subject goods to capture the Indian market, it does not deserve to be treated as domestic industry. The fact that the Petitioner has imported the subject goods under Advance License does not entitle it to any exemption from Rule 2(b) of the AD Rules.
  - ii. Even the supporters have imported during the injury period including the POI. These companies also do not qualify to support the Petitioner.
  - iii. The petitioner has imported the subject goods regularly even during the investigation period. Importing the subject goods under advance license scheme does not affect the fact that the petitioner has imported the subject goods from the subject country during POI, therefore, they shall not be treated as Domestic Industry as per the definition given under Rule 2(b).

#### **Examination by the Authority**

15. The present petition was filed by M/s Grasim Industries Limited – Jaya Shree Textiles (previously–Aditya Birla Nuvo Ltd. Unit – Jaya Shree Textiles). The Petitioner accounts for a major share in production of the product

concerned in India.

16. The petitioner itself has imported some types of the products from China. Imports made by the petitioner were examined in detail. Following facts have been considered to determine whether the petitioner should be treated as eligible domestic industry under Rule 2(b)
17. The Authority notes that not all kinds of imports are condemned under Rule 2(b). Rule 2(b) has been amended with the sole objective of providing discretion to the Designated Authority to decide whether to include or exclude a company who has itself imported the alleged dumped product. Such discretion has been exercised in an even manner by the Designated Authority in the present case. The AD Agreement or the Rules does not list any specific test or criteria to be applied for determining whether such domestic producer should be included or excluded from the definition of the domestic industry.
18. The Authority examined the imports made by the petitioner over the injury period. It is seen that the imports were made only during one quarter of the POI and that too in small quantity under duty free scheme for export production. The volume of imports made by the petitioner are as below:

SN	Period	Total imports	Duty free imports
1	2014-15	***	-
2	2015-16	***	-
3	2016-17	***	***
4	Oct'16-Sep'17 (POI)	***	***
4a.	Oct,16 to Dec, 16	***	***
4b.	Jan'17 to Mar'17	-	-
4c.	April'17 to Jun'17	-	-
4d.	July'17 to Sep'17	-	-

19. The imports made by petitioner were examined with respect to total imports into India, imports from China, Indian production, production of Jaya Shree, domestic sales of Jaya Shree and Indian demand, as detailed below:

SN	Description	Share%
	<b>Imports by Jaya Shree in relation to</b>	
1	Total Import of PUC into India	***
2	Total Import of PUC from China	***
3	Indian production	***
4	Production of Jaya Shree	***
5	Domestic sales of Jaya Shree	***
6	Indian demand	***

20. It is seen that imports have steeply declined over the period. There were no imports by the petitioner after Dec'16. The share of imports by petitioner with respect to total imports and Indian demand are insignificant. The share of imports of PUC by petitioner with regard to their production is also not significant, indicating that imports were only incidental and not main line of activity.
21. As regards the imports made by the supporters, the Authority notes that since these companies have merely supported the petition and since production of these companies in any case is quite low as compared to the petitioner, it is not necessary to decide their inclusion or exclusion from the scope of the domestic industry. The Authority notes that if these companies are treated as eligible domestic industry, the production of the petitioner still constitutes more than 50% of Indian production and if these supporter companies are treated as ineligible



domestic industry, then share of production of the petitioner would further increase. In any case, the production of the Petitioner alone constitutes 'a major proportion' of Indian production of the like product in POI. The application is therefore deemed to have been filed by and on behalf of the domestic industry, the application satisfies the requirements of 'standing' under Rule 5 of the AD Rules.

22. Raymond Luxury Cottons have also supported the petition and requested imposition of duty. However, since the company has not produced the subject goods during the POI, the Authority has not examined its status for the purpose of present investigation.
23. On examination of the material on record as above, and considering the legal provisions, the Authority holds that the petitioner constitutes domestic industry in terms of Rule 2(b) read with Rule 5(3) of the Rules.

#### **D. ISSUES RELATED TO CONFIDENTIALITY**

##### **Views of the Domestic Industry**

24. Following submissions have been made by the domestic industry in regard to confidentiality claimed by it and respondents:
  - i. The petitioner has claimed only such information as confidential which is neither in public domain nor mandated by law to disclose. Further, the petitioner has provided reasons, at appropriate places, for claiming confidentiality.
  - ii. The information related to production (own, supporters, other producers, total in India), export sales volume, domestic sales volume (own, supporters, other producers), imports of subject goods by petitioner and supporters, market share, captive consumption, capacity utilization, inventory and employment of the petitioner are business sensitive information, disclosure of which would seriously jeopardize the commercial interests of petitioner.
  - iii. The law does not mandate the disclosure of actual information with regard to volumetric parameters. The same is decided on case to case basis and industry to industry basis. Flax Yarn industry is booming in India and many new players are coming up. Disclosure of the volumetric information about the sole petitioner would give advantage to others and would adversely affect the interests of the Petitioner. The same is in line with the past practice of the Directorate General of Trade Remedies (erstwhile Director General of Anti-Dumping).
  - iv. Costing information by nature is highly business sensitive and therefore claimed as confidential. Petitioner has not prepared its injury information on the basis of published information of the legal entity. The petitioner maintains separate financial records for Jayashree Textiles, which operates as a division or unit of the company. All information has been taken from the financial accounts of Jayashree Textiles, which are separately audited. The financial information related to Jayashree textiles is not separately available in public domain. The relevant information has been provided to the Authority on confidential basis as the disclosure of same would jeopardize the interest of the petitioner.
  - v. The petitioner has estimated the allowances/deductions used for calculation of net export price and sales of other Indian producers. The exporters have not shown (in fact, not even claimed) that the amounts adopted by the petitioner are excessive. In any case, the Authority will consider the data submitted by the exporters after due verification.
  - vi. The details of imports made by the Petitioner and the supporters are business sensitive information and therefore cannot be disclosed. The information has been provided in the indexed form which is justifiable as per the law.
  - vii. The information related to raw material, utilities, other conversion cost and interest cost reported in Format C1 is confidential in nature and disclosure of which would seriously jeopardize the interests of the petitioner
  - viii. The respondents have claimed excessive confidentiality in the exporter questionnaire response and the same curtails our right to comment as the responses does not provide meaningful summary without assigning any good cause for the same. The submissions of all the exporters and producers from the subject countries should be disregarded and deny them the individual treatment.

##### **Views of the opposing interested parties**

25. Following submissions have been made by the respondents in regard to confidentiality claimed by them and the domestic industry:
  - i. The petitioner has claimed excessive confidentiality on several information and data in the petition without providing good cause which impairs the ability of respondents to defend their interest (Referred to Rule 7 of the AD Rules and Article 6.5 of the ADA).

- ii. The petitioner has claimed confidentiality and indexed information contained in table “injury information of domestic industry” on pages 32, 33 and 34 of the petition which violates Rule 7 of the AD Rules and Article 6.5 of the ADA.
- iii. Production (own, supporters, other producers, total in India), export sales volume, domestic sales volume (own, supporters, other producers), imports of subject goods by petitioner and supporters, market share, captive consumption, capacity utilization, inventory and employment of the petitioner should be reported as actual and should not be indexed. The petitioner has not provided any good cause for claiming this information confidential and such information cannot be regarded as confidential by nature.
- iv. The information and data on volume parameters cannot be deemed as being confidential.
- v. The petitioner has claimed confidentiality on costing information and not even non-confidential information is being provided. The same does not permit reasonable understanding. (Referred to Rule 7 of the AD Rules and Article 6.5 of the ADA, Trade Notice 1/2013 dated 9 December 2013, Argentina – Ceramic Tiles and Sterlite Industries (India) Ltd v. Designated Authority [2003(158) ELT 673]).
- vi. Before the amalgamation as well as after the amalgamation, Jayashree Textiles remained a part of a public limited company listed on Indian stock exchanges. Such publicly listed companies face strict requirements of disclosure under the Indian Company Law and are mandatorily required to make their annual reports and financial information public. We fail to understand the basis on which the Petitioner has claimed confidentiality on the annual reports and other financial information when the same is supposed to be public and available freely.
- vii. The allowances used for the calculation of the net export price do not contain any source and the data cannot be verified. All these allowances have been claimed confidential. Even a range is not provided for these allowances. Without prejudice, the ex-factory export price should be calculated based on the data filed by producers/exporters and the allowances claimed on actual basis.
- viii. The imports by the Petitioner and supporters should also be disclosed so that other interested parties can objectively comment on the Petitioner’s eligibility to be treated as domestic industry under Rule 2(b) of the AD Rules.
- ix. Information pertaining to raw material, utilities, other conversion cost and interest cost reported in Format C1 are treated in confidence without being accompanied by a non-confidential summary.
- x. The petitioner has claimed excessive confidentiality and thus, the right of defense cannot be fully exercised. The petition fails to meet the standards laid down in Rule-7 of the Rules and Trade Notice No. 01/2013 dated December 09, 2013. Our right to defense is curtailed as significant data is not properly indexed in NCV petition.
- xi. In response to Section VI of the application, the petitioner has not furnished any information at all. Various question of Part 6 is answered as - “as per annual report/balance sheet” and Grasim Industries Limited-Jayashree Textiles being a multi-product company, this answer is misleading. Accordingly, petitioner has not provided complete information as required under the Application.

#### **Examination by the Authority**

26. As regards submissions concerning confidentiality of information, the interested parties have provided non-confidential version of information filed by them and have given reasons for claiming confidentiality. The various submissions made by the interested parties during the course of the present investigation with regard to confidentiality and considered relevant by the Authority were examined. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims of interested parties and accordingly not disclosed the same to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis was directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis. The Authority made available the non-confidential version of the evidences submitted by various interested parties in the form of public file.

#### **E. MISCELLANEOUS ISSUES**

##### **Views of the Domestic Industry**

27. Following miscellaneous submissions have been made by Domestic industry:
  - i. The information provided in the petition clearly show that the domestic industry has suffered material injury. The Authority had initiated the present investigations on the basis of sufficient prima facie evidence of dumping of the subject goods from the subject countries, injury to the domestic industry and causal link between dumping and injury suffered by the domestic industry.

- ii. The respondents have failed to specify about specific short of legal or factual basis or any discrepancy in the data submitted by the petitioner. The Authority had initiated the investigation on the basis of prima facie evidence and thus, the same cannot be terminated on the basis of such unsubstantiated claims.
- iii. The petitioner fails to understand as to what information was not provided in the petition and that why such the present investigation should be terminated.
- iv. The petitioner has received the Info drive data at the time of filing the application on confidential basis. The same is third party information whose confidentiality is protected and therefore the information as sought by the respondents cannot be disclosed. Nonetheless the petitioner has submitted the DGCI&S data in compliance with the recent trade notice and the same can be procured from the Authority after following due procedure.
- v. The objective of anti-dumping duties is not to block the imports but to address the issue of dumping of subject goods and consequent injury faced by the domestic industry. The arguments related to demand and supply gap have been raised in the past before the Hon'ble Authority but have been rejected consistently.
- vi. The subject goods used for captive consumption have been transferred at cost. The Authority may take the verified data.
- vii. The annual report of the Holding company of the largest producer/exporter group of China i.e. Kingdom Holdings Limited, involved in the product concerned makes it clear that the Chinese producers/exporters have strategically reduced its export prices. A perusal of the report would make it clear that the company has reduced its selling prices of linen yarn since April, 2016; that the sales to India has increased by approximately \*\*\*% and that the decrease in selling costs as a percentage of revenue during the period of investigation was mainly due to the increased sales in China and to India with lower commission incurred. In other words, the company was able to increase its sales in India and China thereby increasing its profits.
- viii. The Indian producers are making significant fresh investments for production of subject goods in India. The petitioner, supporters and other companies have invested \*\*\*crores (\*\*\* MT Capacity and \*\*\* no. of spindles), \*\*\* crores (\*\*\* MT Capacity and \*\*\*no. of spindles) and\*\*\* crores (\*\*\* MT Capacity \*\*\* no. of spindles) respectively.
- ix. Allegation made during the public hearing regarding late deliveries and non-supply of 60 and 70 Lea products by the petitioner are baseless and without any evidence.
- x. Levy of anti-dumping duty will not block the imports and the consumers would continue to have choices. While there is already more than one producer of the PUC in the Country, there shall be more producers of the PUC in due course, as new capacities are coming up in the Country.
- xi. The end-users do not have to solely depend on the petitioner. The present option to import or buy from other Indian producers will continue to be available to them later also. In fact, few more producers are coming up in India. Further, if the petitioner's capacity had been meant only for captive consumption, it would not have expanded its capacity. More than 60% of the capacity of the petitioner was available for domestic sales in India in the period of investigation. As on date, the same amounts to 74% approximately.

#### **Views of opposing interested parties**

28. The following miscellaneous submissions have been made by other interested parties in this regard:
  - i. The petitioner has not brought any substantive evidence to provide the condition for initiation of AD investigation while the investigating authority has not carried out appropriate scrutiny of facts.
  - ii. Initiation of the investigation is short of factual and legal basis is baseless and thus, the same should be terminated. The DGAD should not have initiated the present investigation on the basis of information contained in the petition.
  - iii. The Respondents request the Designated Authority to provide Info Drive data in MS Excel format, both in raw and refined form, along with the methodology applied to refine the data. The Designated Authority also intends on using DGCI&S transaction-wise import data during the course of the investigation. In such case, the Respondents also request access to DGCI&S transaction-wise import data and shall file a separate request in this regard.
  - iv. The domestic industry has not produced enough quantity to serve the total demand of the subject goods. Thus, users are tending to import the same from other countries. The petitioner is unable to fulfil the demand of the Indian Industry which leads to import from other countries.

- v. The subject goods are captively consumed by the petitioner. The Authority is requested to ask the petitioner to provide the details of the price at which such goods were transferred for captive consumption. The same shall be critically examined by the Authority.
- vi. Majority of importers are end users. The end users do not want to solely depend on the Petitioner, as both are competitors in the flax fabrics market. Petitioner might have reduced its imports of the subject goods over the injury period, but the end-users continue to import as well as procure the subject goods domestically. The end-users will have to continue to import the subject goods, because the capacities set-up by the Petitioner is largely for captive consumption and not merchant market.
- vii. The petitioner has agreed that they have imported the subject goods during the POI however initiation notification is silent about the same. The Authority must give speaking order whether they have considered the same or not while issuing initiation notification.

#### **Examination by the Authority**

29. The aforesaid general issues raised by various interested parties have been examined and addressed to the extent considered relevant in the following paragraphs:
- i. As regards the allegation that initiation is on wrong premise, the Authority notes that the investigation was initiated on the basis of prima facie evidences/facts provided by the Domestic Industry in the petition. Subsequently, the Authority has conducted the verification of the information and the same have been considered in this Notification.
  - ii. As regards manipulation in import data, the Authority notes that petitioner has submitted DGCI&S transaction wise import data in compliance with the trade notice no. 07/2018 dated 15th March, 2018 and the same was part of the petition and non confidential version was placed in the public file for inspection by other interested parties. The interested parties could collect the same after following due procedure. Further, the Authority has prescribed a procedure vide trade notice no 07/2018 dated 15th March, 2018 permitting any interested party to obtain DGCI&S transaction wise data from the DGCI&S after following the laid down procedure.
  - iii. As regards demand and supply gap, the Authority notes that though there is a demand supply gap during the injury period, the same in itself does not address dumping of the product in the Country. Any demand-supply gap can be filled by imports from any country at fair prices. Further, a situation of demand-supply gap, does not entitle a foreign producers exporter to indulge in unfair trade practices and export at dumped prices.
  - iv. As regards the contention of interested parties regarding the price at which the subject goods were captively transferred by the petitioner, the Authority notes that the valuation of captive input has not vitiated the present determination. The valuation of captive input can impact either the profitability of downstream product (i.e., flax fabric) or profitability of the captive consumption. The Authority has not considered profitability of downstream industry or captive consumption for the present purposes. Thus, the captive valuation has not had any impact on the present determination. For sake of clarification the petitioner has valued captive consumption at its cost of production.
  - v. As regards the contention of the domestic industry regarding the strategic reduction of prices by Kingdom group as also indicated in its annual report, the Authority has taken into account the relevant facts after detailed deliberations with the producer exporter during the physical verification and further verification of the data of the exporter.
  - vi. As regards allegations of late deliveries and non-supply, the Authority notes that none of the interested parties have placed verifiable evidence on record to support their claim made at the time of public hearing and submissions made thereafter. The petitioner has admitted that their plant was shut down for some time on account of labour strike but strongly refuted claims of late deliveries and non-supply of goods. The domestic industry has stated that they have been in continuous production since then. As the labour strike was an unforeseen event which took place after 22 years of their existence and uninterrupted operations which has since been resolved. Therefore this fact cannot be held against the domestic industry.
  - vii. The Authority notes that the petitioner also captively consumes the subject goods, yet it has made available significant percentage of its capacity (about 60%) for domestic sales in the period of investigation. The petitioner has set up capacities which are far higher than its own captive requirement and demand. The commitment of production and sale of subject goods in the domestic market can be seen by the large investments made by the domestic industry.

#### **F. DETERMINATION OF NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN**

##### **Views of the Domestic Industry**

30. The following are the submissions made by the domestic industry during the course of the present investigation and considered relevant by the Authority:
- i. Market economy status cannot be granted to the respondents unless the responding exporters satisfy that none of their major shareholders is a state owned/controlled entity, that the prices of major inputs substantially reflect market values; unless the responding Chinese exporters pass the test in respect of each and every parameter laid down under the rules and that the responding company has participated in the present investigation along with its related parties involved with PUC.
  - ii. Market economy treatment cannot be given where Chinese exporters are unable to establish that their books are consistent with International Accounting Standards (IAS).
  - iii. It is for the responding Chinese exporters and not for the Authority to establish that they are operating under market economy conditions.
  - iv. In a situation where the current shareholders have not set up their production facilities themselves but have acquired the same from some other party, market economy status cannot be granted unless process of transformation has been completely established through documentary evidence.
  - v. The normal value for China in such a case can be determined only in accordance with the provisions of para 7 of the Annexure I to Anti-dumping Rules in view of the aforementioned facts and circumstances.
  - vi. Normal value in China of the product under consideration could not be determined on the basis of price or constructed value in a market economy third country for the reason that the relevant information is not publicly available
  - vii. Applicant has determined Normal Value in China on the basis of cost of production, considering consumption norms of the domestic industry for raw material and utilities, taking the price of all raw materials as per the domestic industry and duly adjusted with selling, general and administrative expenses and considering the consumption norms of the applicant. 5% profit has been considered.
  - viii. The export price is constructed based on the information available from the import data as per DGCI&S after making due adjustment based on the best available information with the industry to make it comparable with normal value.
  - ix. The dumping margin is positive and substantial.
  - x. The response of the respondents should not be accepted given the fact that they have failed to disclose vital information, such as name of their related parties, details of their related party producing product under consideration, suppression of facts regarding benefits & incentives received by them.
  - xi. GETCL, Yixing Sunshine, Changzhou, Tung Ga Linen, Zhejiang Axiang, Golden Eagle Yili Linen, Z. Jinyuan Flax, Z. Kingdom Linen, J. Jinyuan Flax has mentioned that there is no incentive given by the government on export sales of PUC. Golden Eagle Co., Golden Eagle Spun Silk, provided that they are entitled for VAT refund but the rate has been kept confidential. Ningbo Ltd., Huzhou Axiang has stated that the Government of China PR provides Vat Rebate @17% on exports of the product concerned. Thus, the exporters from the same country, governed by the same laws have contradictory declarations with regard to the incentives received, which ultimately leads to the conclusion that the statements are flawed and deceptive.
  - xii. The very fact that the exporters have resorted to dumping gets established by their tacit admission in not denying existence of dumping.
  - xiii. None of the interested parties have claimed market economy treatment. In fact, below mentioned companies have stated that they do not request market economy treatment and that they accept the normal value determined by DGAD:
    - (a) Yixing Sunshine Linen Textile Co., Ltd (Producer and Exporter)
    - (b) Changzhou Meiyuan Flax Textile Co., Ltd. (Producer and Exporter)
    - (c) Tung Ga Linen & Cotton (Changzhou) Co., Ltd. (Producer and Exporter)
    - (d) Huzhou Axiang Import and Export Trading Co., Ltd. (Trading Company)
    - (e) Zhejiang Axiang Flax Textile Co., Ltd. (Producer and Exporter)
  - xiv. Regarding the contention of other interested parties that the methodology of normal value violates the provision of paragraph 7 of Annexure I, the petitioner submitted that it has not been able to determine the normal value of flax yarn in China on the basis of price or constructed value in a market economy third country for the reason

that the relevant information is not available to the petitioner. The product is produced only in China and India. Thus, therefore, it is not possible in the facts of the present case, to consider normal value on the other basis laid down under Rule 7.

- xv. Regarding the source of the information contained in Annexure 3.2, the petitioner submitted that it has estimated the allowances/deductions used for calculation of net export price and sales of other Indian producers. The exporters have not shown (in fact, not even claimed) that the amounts adopted by the petitioner are excessive.
- xvi. The Petitioner has calculated the normal value at ex-factory level and therefore no further adjustment was considered necessary. The Petitioner has explained the computation of net export price at ex-factory level in sufficient detail including the adjustments made to arrive at the net export price.
- xvii. The domestic industry has provided sufficient evidence in the petition for the purpose of determining the dumping margin. The Authority in any case will determine the net export price based on the information provided by the domestic industry and the exporters after due verification.

#### **Views of opposing interested parties**

- 31. The submissions made by the opposing interested parties are as follows:
  - i. The determination of the normal value violates the provisions of paragraph 7 of Annexure I and is not supported by any evidence and thus is in violation of Rule 5(2) and Rule 5(3) of the AD Rules. The Designated Authority has accepted the Petitioner's way to compute the normal value based on the last option, i.e. on the basis of cost of production in India, duly adjusted, without exhausting the first two options. Referred to *Shenyang Matsushita S. Battery Co. Ltd. v. Exide Industries Ltd. and others* [(2005) 3 SCC 39].
  - ii. The source of the information used to construct the normal value is unknown to the Respondents and we urge the Petitioner to provide the sources of the information contained in Annexure 3.2 and Format C1.
  - iii. The Petition does not mention the adjustments made to compute the normal value. Article 2.4 of the Anti-Dumping Agreement and paragraph 6(i) of Annexure I to the AD Rules provide that the comparison between the normal value and the export price to determine the dumping margin shall be made at the same level of trade. The adjustments made to the constructed normal value, if any, cannot be considered as being confidential by nature and should be disclosed.
  - iv. Dumping margin as claimed in the Petition is very high. This is because the constructed normal value is inflated due to abnormally high cost of the Petitioner. The Designated Authority is requested to calculate constructed normal value in a fair manner to remove any abnormal cost components.
  - v. The petitioner has made adjustments to calculate export price but has not provided any information on these adjustments or how these have been computed. These cannot be confidential by nature. The Authority should not have initiated the present investigation in the absence of sufficient evidence supporting the existence of dumping.
  - vi. DA should grant MET to China based on the development of market economy of China, conduct any normal value calculation in accordance with Article 2 of ADA and at the very least, apply the data and prices provided by the Company in this response for the determination of the normal value rather than applying analogue country data.

#### **Examination by the Authority**

##### **I. NORMAL VALUE**

- 32. At the stage of initiation, the Authority proceeded as per the information given by the petitioner. Upon initiation, the Authority advised the producers/ exporters in China PR to respond to the notice of initiation and provide information relevant to determination of their market economy status. The Authority sent copies of the supplementary questionnaire to all the known producers/ exporters for rebutting presumption of non-market economy in accordance with criteria laid down in Para 8(3) of Annexure-I to the Rules and furnish relevant detailed information. The Authority also requested Government of China PR to advise the producers/ exporters in China PR to provide the relevant information.
- 33. The Authority notes that the known Chinese producers/ exporters and the Government of China PR have been adequately notified about the requirement of submission of information in the form and manner prescribed and adequate opportunity was also granted to them to make their submissions in this regard. However, none of the producers/exporters have claimed market economy treatment. In fact, some of them have mentioned that they do not request market economy treatment.
- 34. In view of the above position and in the absence of rebuttal of non-market economy claim by any Chinese

exporting company, the Authority considers it appropriate to proceed with para-7 of Annexure-I to the Rules for determination of normal value.

35. In view of the foregoing para, the normal value for the subject goods has been constructed based on the raw material rates of imports by China PR and other cost as per domestic industry covering all expenses and profit. The normal value was constructed PCN wise for fair comparison. The weighted average on the basis of quantities of various PCN by the respective producer exporter is shown in the dumping margin table below.

## II. EXPORT PRICE

### a. Kingdom Group: M/s Zhejiang Kingdom Linen Co., Ltd., M/s Zhejiang Jinyuan Flax Co., Ltd., and M/s Jiangsu Jinyuan Flax Co., Ltd.

36. From the responses filed, it is noted that Kingdom Group comprises of the following three related entities involved in the production and exports of the product concerned to India:

- i. M/s Zhejiang Jinyuan Flax Co., Ltd. – Producer and Exporter
- ii. M/s Jiangsu Jinyuan Flax Co., Ltd. – Producer and Exporter
- iii. M/s Zhejiang Kingdom Linen Co., Ltd. – Producer

37. The above-mentioned three companies have filed separate responses to the Exporter's Questionnaire. During the POI, Zhejiang Kingdom Linen Co., Ltd. produces the subject goods and sells it to the related companies Zhejiang Jinyuan Flax Co. Ltd. and Jiangsu Jinyuan Flax Co., Ltd, who in turn export the goods to India. Zhejiang Kingdom Linen Co., Ltd. was not involved in exports of the subject goods during the POI, it exported to India only through Zhejiang Jinyuan Flax Co., Ltd. during the POI.

38. M/s Zhejiang Jinyuan Flax Co. Ltd and M/s Jiangsu Jinyuan Flax Co., Ltd have claimed adjustment towards inland freight including handling fee, ocean freight, ocean freight insurance, credit cost and bank charges and storage fee for FTWZ sales. The same were verified and have been allowed by the Authority. Accordingly, the NEP has been worked out PCN wise for comparison with the respective CNV and then weighted average has been calculated. The weighted average net export price determined for exports to India is as shown in the Dumping Margin as per Table in the following paragraphs.

### b. M/s Yixing Sunshine Linen Textile Co., Ltd. (Producer/Exporter)

39. M/s Yixing Sunshine Linen Textile Co., Ltd has filed exporters questionnaire response, it is noted that M/s Yixing Sunshine Linen Textile Co., Ltd., is a producer as well as exporter of the subject goods. During the POI, M/s Yixing Sunshine Linen Textile Co., Ltd., exported subject goods to India directly only. Adjustment towards inland freight, Handling charges, overseas insurance and overseas freight have been claimed by the producer/exporter and the same have been allowed by the Authority. Accordingly, the NEP has been worked out PCN wise for comparison with the respective CNV and then weighted average has been calculated. The weighted average net export price determined for exports to India is as shown in the Dumping Margin in Table in the following paragraphs.

### c. M/s Zhejiang Axiang Flax Textile Co., Ltd., (Producer) and M/s Huzhou Axiang Import and Export Trading Co., Ltd., (Exporter)

40. M/s Zhejiang Axiang Flax Textile Co., Ltd. has filed exporters questionnaire response, it is noted that M/s Zhejiang Axiang Flax Textile Co., Ltd., is a producer and has exported subject goods to India through M/s Huzhou Axiang Import and Export Trading Co., Ltd., during the POI. M/s Huzhou Axiang Import and Export Trading Co., Ltd., has filed response separately. Adjustment towards inland transportation, handling, overseas transportation, overseas insurance, credit and bank charges have been claimed and the same have been allowed by the Authority. Accordingly, the NEP has been worked out PCN wise for comparison with the respective CNV and then weighted average has been calculated. The weighted average net export price determined for exports to India is as shown in Table in the following paragraphs.

### d. Golden Group: M/s Zhejiang Golden Eagle Co. Ltd, M/s Zhejiang Golden Eagle Yili Linen Textile Co., Ltd and M/s Zhejiang Golden Eagle Spun Silk Co. Ltd

41. From the responses filed, it is noted that Golden Group comprises of the following three related entities involved in the production and exports of the product concerned to India

- i. M/s Zhejiang Golden Eagle Co. Ltd- Producer and Exporter,
- ii. M/s Zhejiang Golden Eagle Yili Linen Textile Co., Ltd –Producer
- iii. M/s Zhejiang Golden Eagle Spun Silk Co. Ltd –Exporter of (i) above

42. M/s Zhejiang Golden Eagle Co. Ltd, M/s Zhejiang Golden Eagle Yili Linen Textile Co. Ltd and M/s Zhejiang

Golden Eagle Spun Silk Co. Ltd, have filed exporters questionnaire response separately. It is noted that while Golden Eagle is a producer and exporter both, whereas M/s Zhejiang Golden Eagle Spun Silk is only an exporter of the subject goods. The Golden Eagle Yili Linen is only a producer who has exported the subject goods through Zhejiang Golden Eagle Co. Ltd.

43. During the POI, Golden Eagle exported the subject goods directly and through Golden Eagle Spun Silk. Adjustment towards inland freight, ocean freight, handling and customs charges, insurance, credit cost, and bank charges have been claimed by the producer and exporters and the same have been allowed by the Authority. Accordingly, the NEP has been worked out PCN wise for comparison with the respective CNV and then weighted average has been calculated. The weighted average net export price determined for exports to India is as shown in Table in the following paragraphs.

**e. M/s Hangzhou Sanglu Silk Co. Ltd. (Producer/Exporter)**

44. M/s Hangzhou Sanglu Silk Co. Ltd has filed exporters questionnaire response, it is noted that it is a producer and an exporter of the subject goods. During the POI, it has exported the subject goods directly. Adjustment towards inland transportation and others, Overseas freight, overseas insurance, Bank Charges and Credit have been claimed by the producer and exporters and the same have been allowed by the Authority. Accordingly, the NEP has been worked out PCN wise for comparison with the respective CNV and then weighted average has been calculated. The weighted average net export price determined for exports to India is as shown in Table in the following paragraphs.

**f. M/s Great Eastern Textiles (Tongling) Co., Ltd., (Producer) and M/s Ningbo Win Way Trading Company Limited, (Exporter)**

45. M/s Great Eastern Textiles (Tongling) Co., Ltd., has filed exporters questionnaire response, it is noted that M/s Great Eastern Textiles (Tongling) Co., Ltd., is a producer and has exported subject goods to India through M/s Ningbo Win Way Trading Company Limited. during the POI. M/s Ningbo Win Way Co., Ltd., has filed response separately. Adjustment towards inland transportation, handling, overseas transportation, overseas insurance, credit and bank charges have been claimed and the same have been allowed by the Authority. Accordingly, the NEP has been worked out PCN wise for comparison with the respective CNV and then weighted average has been calculated. The weighted average net export price determined for exports to India is as shown in Table in the following paragraphs.

**g. M/s Changzhou Meiyuan Flax Textile Co., Ltd. (Producer/Exporter)**

46. M/s Changzhou Meiyuan Flax Textile Co., Ltd. has filed a response, it is noted that M/s Changzhou Meiyuan Flax Textile Co., Ltd., is a producer as well as exporter of the subject goods. During the POI, M/s Changzhou Meiyuan Flax Textile Co., Ltd., exported subject goods to India directly only. Adjustment towards inland freight, handling, ocean freight and overseas freight and ocean freight have been claimed by the producer/exporter and the same have been allowed by the Authority. Accordingly, the NEP has been worked out PCN wise for comparison with the respective CNV and then weighted average has been calculated. The weighted average net export price determined for exports to India is as shown in Table in the following paragraphs.

**h. M/s Tung Ga Linen & Cotton (Changzhou) Co., Ltd. (Producer/Exporter)**

47. M/s Tung Ga Linen & Cotton (Changzhou) Co., Ltd. has filed exporters questionnaire response, it is noted that M/s Tung Ga Linen & Cotton (Changzhou) Co., Ltd., is a producer as well as exporter of the subject goods. As per the response filed by them, which was verified in a table study, they have a production capacity 2400 MT only. During the POI they have exported a small quantity of subject goods to India directly. Adjustment towards inland freight, ocean insurance, overseas freight, bank charges and credit cost have been claimed by the producer/exporter and the same have been allowed by the Authority. Accordingly, the NEP has been worked out PCN wise for comparison with the respective CNV and then weighted average has been calculated. The weighted average net export price determined for exports to India is as shown in Table in the following paragraphs.

**III. DETERMINATION OF DUMPING MARGIN**

48. Based on PCN wise constructed normal value and net export price, the dumping margin on weighted average basis for each co-operating producers is determined as follows:

SN	Producer/Exporter	Quantity	CNV	NEP	Dumping Margin		
		MT	US\$/MT	US\$/MT	US\$/MT	%	% Range
1	Zhejiang Kingdom Linen Co., Ltd/ Jiangsu Jinyuan Flax	***	***	***	***	***	30-40



	Co., Ltd/ M/s Zhejiang Jinyuan Flax Co., Ltd						
2	Yixing Sunshine Linen Textile Co., Ltd	***	***	***	***	***	25-35
3	Zhejiang Axiang Flax Textile Co., Ltd./ Huzhou Axiang Import and Export Trading Co., Ltd.	***	***	***	***	***	55-65
4	Zhejiang Golden Eagle Co.Ltd/ Zhejiang Golden Eagle Spun Silk Co.Ltd /Zhejiang Golden Eagle Yili Linen Textile Co.,	***	***	***	***	***	35-45
5	Hangzhou Sanglu Silk Co. Ltd.	***	***	***	***	***	30-40
6	Great Eastern Textiles (Tongling) Co. Ltd./ Ningbo Win Way Trading Co. Ltd.	***	***	***	***	***	20-30
7	Changzhou Meiyuan Flax Textile Co., Ltd.	***	***	***	***	***	15-25
8	Tung Ga Linen & Cotton (Changzhou) Co., Ltd.	***	***	***	***	***	5-15
9	Any other than the producers at Sl. No. 1-8	***	***	***	***	***	120-130

49. It is noted that the dumping margin for all the co-operating producer exporter is positive and quite significant and above de-minimus.

#### **G. DETERMINATION OF INJURY AND CAUSAL LINK**

##### **Views of the Domestic industry**

50. The petitioner had filed the petition by taking into consideration data procured from a secondary source on the basis of which the Authority initiated the investigation. During the course of investigation, the petitioner procured data from the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S).
51. Following is the summary of submissions relating to material injury by the domestic industry during the course of the present investigation and considered relevant by the Authority:
- The petitioner requests the Authority to exclude imports made by it while conducting injury analysis as the imports were earlier made to create the market for the subject goods and in POI they were under duty exemption scheme.
  - Demand (including captive) has declined only by about 4% over the injury period. However, demand increased by about 16% in POI as compared to the previous year, when the prices declined by 20-25% (Lea wise) during this period. If the decline in the demand was the reason for injury, the prices should have significantly increased with \*\*\*% increase in demand, instead of so sharp decline in the prices.
  - Flax yarn being used in fabric would continue to remain in demand and thus, cannot be considered as a reason for the injury caused to the domestic industry.
  - The imports of the product under consideration are mainly from China, imports reflected in Info drive are lower than the imports reported in DGCI&S and imports have shown a decline till Jan.-March, 2017, as imports made by Jaya Shree declined steeply. However, imports have shown significant increase thereafter. The imports show increase in POI as compared to preceding year even if Jayashree imports are excluded.

- v. The imports, including and excluding those made by the Indian producers, have significantly increased in the present POI after showing a decline. The imports have increased with steep decline in the prices. Imports in relation to petitioner's production have remained significant throughout the injury period.
- vi. The share of the subject imports in Indian demand (demand both including and excluding captive consumption by the petitioner) has increased in POI after showing a decline in 2016-17. However, if imports made by the petitioner are excluded, it would be seen that imports increased throughout the injury period.
- vii. There is a steep decline in the import prices which is not proportionate to decline in raw material prices as is shown by the data put on record regarding raw material prices, weighted average annual prices, quarter by quarter evolution of prices and prices for 40 Lea and major product types of yarn, imports of which constitute majority of imports in India.
- viii. The price undercutting is positive. The price undercutting should be linked with the profits and not with the import volumes as present case is of price effect. The selling price moved in tandem with the import price and consequently the profit/loss shows significant decline. The price underselling is also positive.
- ix. The investigating authorities globally determine price undercutting only for the POI. In the instant case, the Designated Authority has now prescribed a PCN and the price undercutting is required to be determined considering the PCN. Additionally for this reason, the price undercutting can be determined only for the POI. The Authority can consider determining price undercutting including or excluding the imports made by Indian producers. There shall be no material difference.
- x. While the cost has increased over the injury period marginally, the selling price has declined. Further, change in selling price is far higher and selling prices declined in response to severe decline in the import prices.
- xi. The petitioner has enhanced its capacities over the injury period in line with the Indian demand. The capacity utilization of the plant has been more or less same throughout the injury period.
- xii. The overall production of the plant, including that of the subject goods, has increased throughout the injury period.
- xiii. The sales volume of the product under consideration remained at the same level despite increase in capacity as well as production. This is the situation despite sufficient demand, production and capacity, due to dumping of the product in the Country. The market share of the domestic industry (excluding captive consumption) has marginally increased by about 2% over the injury period. The petitioner has commenced its full production on the enhanced capacities and is committed to production of the subject goods and has a significant volume of flax yarn to sell in the market.
- xiv. Exports made by the petitioner are low in volume and irrelevant for the present purpose.
- xv. The petitioner is having captive consumption of the product under consideration. The losses being suffered by the domestic industry in production and sale of the product under consideration in the domestic market in fact is higher than the losses reported in enclosed injury statement. Should captive consumption be considered at market price, it would be seen that the petitioner would have suffered significant financial losses.
- xvi. The performance of the domestic industry in terms of profitability has significantly deteriorated over the injury period. The profits declined considerably in 2015-16 and from thereon, the petitioner has been facing financial losses including in the period of investigation .
- xvii. The cash profits have declined significantly throughout the injury period to the extent that the same is not even 1% in the POI of what it was in the base year. Profit before interest has also declined significantly throughout the injury period to the extent that the same are in negative in the period of investigation.

- xviii. Return on capital employed has also declined significantly throughout the injury period to the extent that the same are in negative in the period of investigation. This shows the injurious effect of dumping.
- xix. Landed price of the imported material from subject country is significantly below the selling price and cost of production of the domestic industry in the proposed period of investigation. The benchmark for the Indian producers' prices is the import prices. There is no viable substitute to this product. The demand is more than the capacity of the domestic industry despite which the sales of the domestic industry remained at the same level and increase in capacity as well as production. Thus, the only factor responsible for the domestic industry's prices is the import prices of the product.
- xx. In the light of the observation by CESTAT in of Acrylic Fiber Manufacturers v. Designated Authority and information on record showing significant deterioration in performance in terms of profitability, cash profits and return on investments, it is clear that the Domestic Industry is suffering material injury.
- xxi. As regards the contention of the interested parties that the petitioner is in losses due to amalgamation, the petitioner submitted that there is no substance in these arguments. The revaluation due to amalgamation has been excluded for the purpose of filing antidumping duty investigation data. Petitioner would provide any further information that may be required by the Authority.
- xxii. The petitioner does not dispute positive trends in the volumetric parameters as it has claimed price injury in the present case.
- xxiii. As regards the exaggeration of imports by the petitioner, the petitioner submitted that the imports made by it should be excluded while conducting analysis.
- xxiv. Regarding the contention of the other interested parties that the petitioner will continue to suffer due to upcoming producers in India, the petitioner submitted that they are not bothered by that as inter se competition is good for the market to maintain it fair and healthy. The consumers would have more choices in future.
- xxv. The analysis of respondent regarding raw material prices is misleading. The raw material cost constitutes \*\*\*% of the total cost. Thus, even if the argument of the interested parties is accepted, a decline of \*\*\*% in raw material cost would mean a decline in costs only by Rs.\*\*\* per kg. However, the landed value by their own claim has declined by \*\*\*%. This clearly shows that the landed value has fallen very steeply as compared to the fall in costs on account of raw materials.
- xxvi. The market share of the domestic industry (excluding captive consumption) has marginally increased over the injury period, whereas the profits turned to losses in POI. No producer would increase its market by such small amount for such a huge loss of profits over the injury period.
- xxvii. The decline in profits is not proportion to the increase in depreciation. Data related to profit per unit and depreciation and interest per unit shows that the decline in profits is far more than increase in depreciation and interest cost.
- xxviii. The net fixed assets of the additional capacity cannot be at the same level of the existing capacity as the old plant is depreciated one. Various investments made by the petitioner shows that per unit investment have significantly changed over the period. While the current investments are at full book value, the old investments are at depreciated book value. It is common sense that the investment in any new plant is always higher than the investments made in the depreciated plant. The correctness of the figures submitted by the Petitioner in this regard has already been verified by the Authority.
- xxix. Petitioner claimed 22% return, as this is the ROI allowed by the Designated Authority in almost in every case for the last so many years without considering the actual rate of return earned by the domestic industry

- during the period when there was no dumping. The Authority may consider historical return, considering the arguments of the interested parties.
- xxx. The costs, profits and ROI claimed do not include any revaluation. The petitioner has already excluded all these factors. The non-injurious price of the domestic industry has been determined by the petitioner in terms of AD Rules, which has taken care of impact of revaluation of assets if any. Petitioner has claimed NIP and injury margin not after including revaluation.
- xxxi. The domestic industry has not faced any technical constraints in achieving optimum production from the additional capacity and has already achieved good production volumes in the expanded capacities. The domestic industry had to sell the subject goods at suboptimal prices in the domestic market. The injury suffered by the domestic industry is not due to enhancement of its production capacity but due to dumped imports suppressing its selling price.
- xxxii. As soon as new capacities come up in the Country, the exporters become aggressive in the Indian market in a bid to retain their market and on fear of loss of business, given that the exporters are sitting on significant capacities.
52. The supporters to the petition namely, M/s Linen Art, Golden Fibers and other existing producers in India, and M/s Raymond Luxury, new producer who has commenced production in April 2018, appeared for oral hearing and made submissions. They stated that they are suffering injury on account of dumped imports. The supporters are in the process of expanding the capacities so as to cater to the demand and supply gap in India. In fact, it is the creation of capacities in India, which has made producer/exporters in China to intensify dumping, as the exporters wish to discourage creation of any capacities in India. They requested that duty be recommended at the earliest so as to afford adequate protection and remedy to the producers of the subject goods in India
53. In the course of the hearing, reliance was placed by the exporters, on the Tribunal's decision in the case of Bridge Stone Tyre Manufacturing (Thailand) Vs. Designated Authority. The supporters submitted that the facts in the present case are totally at variance with those in the case of Bridge Stone. The profit as well as the cash profit for the supporting industry has fallen in the POI as compared to base year. In fact there would be no projected profits for Raymond were the imports to continue at the prices prevailing during the POI. The sales of the domestic industry and its supporters have remained stagnant and, therefore, the two cases are distinguishable on facts. Thus, the rationale of the decision in Bridge Stone has no applicability to the present investigation.

#### **Views of opposing interested parties**

54. Submissions made by the opposing interested parties are as under:
- i. The petition does not contain adequate evidence of dumping and injury to justify initiation. There is neither dumping from the subject country nor any injury suffered by the domestic industry.
  - ii. Imports of the subject goods from China declined by 46% during the injury period in absolute terms. Imports in relation to Petitioner's production also declined from 320-350% during 2014-15 to 130-150% during the POI. Thus, decline in volume of imports could not have contributed to the alleged injury suffered by the domestic industry.
  - iii. The petitioner is trying to show that its imports volume and that of supporters have declined. However, that of others has increased. There is no legal basis for separating import information of the subject goods. The petitioner and supporters have not claimed that imports of the subject goods by them are not dumped. Thus, they have to be clubbed with imports by others and only then imports of the subject goods should be examined.
  - iv. The petitioner's and supporters' imports throughout the injury period should be removed from the import data for the purpose of injury analysis so that the petitioner is not allowed to take benefit of the exaggerated import volume by its own imports of the subject goods. The Petitioner have contributed to the alleged injury through such imports.

- v. The demand, including and excluding captive, has declined by 20% and 40% respectively during the injury period which explains why the petitioner could have suffered alleged injury.
- vi. A number of new producers in India will start commercial production this year, which will increase price pressure on the Petitioner. The petitioner is suffering injury due to decline in demand of the subject goods and will continue to suffer injury due to other upcoming producers in India.
- vii. The Domestic Industry was operating at 100% but with the increase in capacity, the capacity utilization declined marginally. Overall, the Domestic Industry is improving. Despite decline in demand, the petitioner increased its capacity from 2015-16 onwards. While the petitioner's capacity increased by 26% during the injury period, production and domestic sales increased by 29% and 5% respectively during the same period.
- viii. 80% of the petitions filed before the Designated Authority indicates that Domestic Industry has expanded their capacities either during the POI or during the injury period. This shows that injury is mainly caused to them because of undue/unjustified capacities. Domestic Industry is not able to stabilize its capacities which results into higher capital employed, negative return on capital employed and huge losses. This needs to be critically examined by the Authority and shall ignore petitions having this structure.
- ix. The domestic sales of the petitioner have increased during the injury period from 100 to 105 during the POI as compared to the base year 2014-15. The applicant is focusing on the exports rather than selling them in Indian market as its export sales have increased from 100 to 208, more than double, during the same period. The petitioner's domestic sales and exports were the highest during the POI, where as imports of the subject goods had reduced by 46%.
- x. Petitioner's exports have increased by two-times over the injury period. Petitioner's losses in the export market have also increased in a similar trend. Such decline in performance should be segregated from the injury analysis, as losses in export market cannot be attributed to imports of the subject goods.
- xi. The raw material price declined by 12% (per unit price) (Source-UN Comtrade Data of world imports into India) and in commensurate with it, the landed value declined by 17%. However, the cost of sales of petitioner increased by 1% during the injury period for domestic sales and for export market, it increased by 63% during the same period rather than declining. The Authority is requested to critically examine the factors affecting the increase in cost and the petitioner may clarify the reason for such huge difference between cost of sales for export and domestic market.
- xii. Petitioner has continuously gained market share during the injury period, even though demand has declined. Market share of supporters have also increased. On the contrary, that of subject country has decreased. The share of the Domestic Industry has increased substantially and is nowhere less than the share held by the subject imports. Petitioner is facing stiff competition from supporters and will face more once other producers commence production.
- xiii. As per the support letter of Golden Fibers LLP, their related company had imported the subject goods during the injury period including the POI. They must clarify whether imports of this related party is captured in the imports by 'Supporters' or imports by 'Others', as this impacts the volume of imports by Supporters in the injury analysis.
- xiv. The Petitioner increased its installed capacity during 2016-17 and the POI. This led to sharp increase in the net fixed assets which led to increase in depreciation. This coincides with the increase in losses. Injury to the Petitioner is due to these reasons only.
- xv. Despite increase in annual capacity and production, the Petitioner has been able to manage its stock well. Stocks declined over the injury period. Stocks were mere 97 indexed points during the POI, though capacity had increased by 29% and production by 26% during the same period in comparison to the base year. The

Domestic Industry is selling whatever they are producing. Thus, imports of the subject goods did not cause increase in average stock of the Petitioner.

- xvi. Petitioner's capital employed increased by over three-times over the injury period, but its installed capacity increased only by 29% during the injury period. Therefore, the capital employed during the POI does not seem in line with the increased installed capacity in the same period. The capital employed should accordingly be lower and return on capital should be higher. But the Petitioner has claimed lower return on capital during the POI contrary to what the data demonstrates. This anomaly should be closely examined.
- xvii. Petitioner's cost increased due to increase in capacity but selling price could not increase in a commensurate manner. Selling price also could not increase due to decline in demand during the injury period. Imports have not caused any price suppression and price depression.
- xviii. The Domestic Industry was earning profits during the base year 2014-15 and 2015-16. But, during the year 2016-17, the petitioner faced losses because of increase in capacity and cost of production. It seems that there are some other factors which are causing injury to the Domestic Industry.
- xix. Petitioner claims price undercutting in the range of 0-20% during the POI. The Petitioner has benefitted in expanding its operations by importing from China PR. Petitioner's price undercutting claim should be rejected because the Petitioner has imported the subject goods from China PR throughout the injury period and contributed to decrease in the landed value of the subject goods, which caused price undercutting.
- xx. Price undercutting, one of the most important parameters to establish causal relationship in an anti-dumping investigation, shall not be seen in isolation. Rather in the light of overall performance of the Domestic Industry, whether it is resulting in losses. Price undercutting in isolation does not give any meaningful price effect. It must be analysed that whether such price undercutting is resulting into material injury to the Domestic Industry. In present case, despite having positive price undercutting, Domestic Industry has improved its performance.
- xxi. Domestic Industry is growing in respect of production and sales. However, in respect of price parameters, there are some other factors which are causing injury to the Domestic Industry which needs to be clarified by the petitioners. Overall performance of the Domestic Industry is improving. The imports from subject country are not at all causing injury to the Domestic Industry.
- xxii. The imports from China PR did not have any negative impact on the losses of the Petitioner. Decline in profitability during 2016-17 and the POI directly coincides with sudden increase in installed capacity, net fixed assets, depreciation and interest cost during this period.
- xxiii. Grasim Industries Limited has reported several exceptional expenditures such as payment of stamp duty for acquisition of Aditya Birla Nuvo Limited and many other types of expenses as mentioned in the financial results of Grasim Industries Limited for the quarter ending 31 March 2018. It is requested that such exceptional expenditures be examined in a manner to ensure that they do not abnormally inflate Petitioner's cost. The Petitioner might be able to show injury because of such inflated cost.
- xxiv. During acquisition, assets and liabilities are revalued. Grasim Industries Limited might have paid a premium to acquire Aditya Birla Nuvo Limited. The Designated Authority should make sure that return on capital is granted to actual value of the net fixed assets last captured in the books of Aditya Birla Nuvo Limited and not based on the consideration paid by Grasim Industries Limited or revaluation of the assts as done in the Viscose Filament Yarn case.
- xxv. The domestic industry's claim of 22% return (profit before interest) on capital employed at GFA level is illegal as the norm is to consider historical rate of return in light of the Hon'ble CESTAT's ruling in Indian Spinners Association v. Designated Authority 2004 (170) E.L.T. 144 (Tri. - Del.). The Designated Authority

should examine the level of return enjoyed by the linen yarn industry globally and in India, and only then adopt an appropriate return on capital employed in this case.

- xxvi. The DA determines NIP on the basis of cost of production of domestic industry; such determination is highly inflated and is not based on real situation as per para-4 of the Annexure III of the Rules. DA should adopt ROCE earned by the industry when there was no allegation of dumping as reasonable profit margin and not 22% ROCE. Adoption of 22% ROCE to arrive at NIP is not reasonable. Adoption of a practice cannot be a ground for reasonability. Basis of 22% ROCE designed by GOI in Drugs (Prices Control) Order, 1987 (DPCO, 1987) cannot be termed reasonable after 30 years when parameters like interest rate and corporate tax were different. By applying the current rates of corporate tax and interest rate on actual basis, ROCE @ 22% gives undue protection to domestic industry.
- xxvii. As per the decision in Bridge Stone Tyre vs DA, 22% ROCE has colored the injury determination and has inflated the price underselling and injury margin. DA should adopt the actual profit earned by the domestic industry during the period when there was no allegation of dumping as a basis for calculating reasonable return. European Union also follows the same practice.

#### **Examination by the Authority**

55. The Authority has taken note of the submissions made by various interested parties. The Authority has examined the injury to the domestic industry in accordance with the Anti-dumping Rules and considering the submissions made by all the interested parties.
56. The Claims and counter claims of parties, regarding trends in prices of raw material versus the selling price of subject goods, was examined and found that claims of both sides are inflated. The issue has been examined and addressed appropriately.
57. The AD Rules require the Authority to examine injury by examining both volume and price effect. A determination of injury involves an objective examination of both (a) the volume of the dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic industry. With regard to the volume of dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the effect of the dumped imports on prices the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree.
58. As regards the consequent impact of dumped imports on the domestic industry, Para (iv) of Annexure II of Antidumping rules states as under:
- (iv) *The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices; the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments*
59. The Authority considers all injury parameters and thereafter concludes on the basis of collective and cumulative examination of all the parameters whether the domestic industry has suffered injury due to dumping. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts, figures and arguments submitted by the interested parties in their responses/submissions/rejoinders.

**I. VOLUME EFFECT OF DUMPED IMPORTS AND IMPACT ON DOMESTIC INDUSTRY****a) Total Demand**

60. The demand or consumption (including captive consumption by petitioner) of the subject goods in India is computed by summing of domestic sales of all the Indian producers and imports from all sources.

SN	Particulars	UOM	2014-15	2015-16	2016-17	POI
1	Sales including captive of petitioner	MT	***	***	***	***
1a	Trend	Indexed	100	92	101	120
2	Sales of supporter	MT	-	***	***	***
2a	Trend	Indexed		100	233	217
3	Sales of Other Indian producer	MT	***	***	***	***
3a	Trend	Indexed	100	100	100	60
4	Subject Country - China	MT	11,866	13,349	7,640	9,371
5	Imports made by petitioner	MT	***	***	***	***
5a	Trend	Indexed	100	97	21	3
6	Imports made by supporter	MT	***	***	***	***
6a	Trend	Indexed	100	193	48	61
7	Imports from China made by Others	MT	***	***	***	***
7a	Trend	Indexed	100	120	101	141
8	Import from Other Countries	MT	209	111	39	52
9	Demand	MT	15,698	17,547	13,023	15,080

61. It is noted that the sale of the domestic industry including the captive consumption and the sale of supporters has increased, however, the sale of the other producers has decreased. The imports made by the petitioner and the supporters has decreased during the POI, however, the imports made by the other producers have increased. The imports from other countries have decreased significantly. The demand for the product under consideration declined in 2015-16 and further increased in the POI and came to the same level as that of base year.

**b) Import volumes in absolute terms**

62. The Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute terms or relative to production or consumption in India. The Petitioner has submitted details of imports in absolute and in relation to production and consumption in India by (i) excluding imports made by the domestic producers of PUC, (ii) including and excluding captive consumption. The volume of imports of the subject goods from the subject country have been analyzed as under:

SN	Particulars	Units	2014-15	2015-16	2016-17	POI
	Imports Volume					
1	Subject Country- China	MT	11,866	13,349	7,640	9,371
1a	Less- Imports made by petitioner	MT	***	***	***	***
1a(i)	Trend	Indexed	100	97	21	3
1b	Less- Imports made by supporter	MT	***	***	***	***
1b(i)	Trend	Indexed	100	193	48	68
1c	Imports from China made by Others	MT	***	***	***	***
1d	Trend	Indexed	100	120	101	141
2	Import from Other Countries	MT	209	111	39	52
3	Total	MT	12,074	13,460	7,679	9,423



SN	Particulars	Units	2014-15	2015-16	2016-17	POI
	Imports Volume					
	Market Share of Imports from					
4	Subject Country- China	%	98.27	99.18	99.49	99.45
5	Import from Other Countries	%	1.73	0.82	0.51	0.55
6	Total	%	100	100	100	100
	Imports from the subject country in relation to					
7	Petitioner Production	%	***	***	***	***
7a	Trend	Indexed	100	111	62	62
8	Indian Consumption	%	***	***	***	***
8a	Trend	Indexed	100	107	121	147

63. It is seen that the import of PUC from the subject country declined in 2016-17 and thereafter increased in the POI, however, it remained low when compared to the base year. The volumes of imports in relation to production has increased during 2015-16, and further declined significantly in 2016-17 and in POI as compared to the base year on account of increased capacities and production in India. The volumes of import in relation to consumption increased during the entire injury period and the POI.

64. Further, the analysis of volume of import was done on quarterly basis including and excluding the imports made by the petitioner and supporters. As per the details furnished by petitioner and supporters, the trends in volume of imports is as below.

SN	Period	Import volumes (MT)			
		Including imports by Petitioner & Supporter	Trend	Excluding imports by Petitioner & Supporter	Trend
1	April- June 2016 (Q1)	***	100	1,620	100
2	July-Sep 2016 (Q2)	***	84	1,706	105
3	Oct-Dec 2016 (Q3)	***	83	1,773	109
4	Jan-March 2017 (Q4)	***	53	1,222	75
5	April-June 2017 (Q1)	***	131	3,017	186
6	July-Sep 2017 (Q2)	***	126	2,935	181

65. It is seen that there was a steep decline in volume of imports from during first quarter of 2016-17 to fourth quarter of 2016-17. However, the imports increased very significantly during first and second quarter of 2017-18 which is more prominent when the imports made by the petitioner are almost negligible during 2017-18.

## II. PRICE EFFECT OF DUMPED IMPORTS ON DOMESTIC INDUSTRY

66. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Authority is required to analyze whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like products in India, or whether the effect of such imports is to depress prices or prevent price increases, which otherwise would have occurred in normal course. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject country has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the cost of production, Net Sales Realization (NSR) and the Non-injurious Price (NIP) of the Domestic industry have been compared with the landed cost of imports from the subject country.

### a) Evolution of prices

67. The petitioner submitted details of the import prices on the basis of DGCI&S data for the injury period and POI on month to month basis.

SN	Month	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
1	April	Rs/Kg	579	625	588	459
2	May	Rs/Kg	561	618	561	471
3	June	Rs/Kg	588	633	603	485
4	July	Rs/Kg	573	641	602	524
5	August	Rs/Kg	592	632	630	526
6	September	Rs/Kg	589	645	529	510
7	October	Rs/Kg	609	646	555	
8	November	Rs/Kg	570	664	562	
9	December	Rs/Kg	621	680	554	
10	January	Rs/Kg	600	589	492	
11	February	Rs/Kg	606	604	463	
12	March	Rs/Kg	610	615	485	

68. The above data clearly shows the declining trend in prices. During the POI itself the prices have dropped from Rs 555 /Kg to Rs 510/ Kg whereas there has not been a commensurate decline in raw material prices.

**b) Price Undercutting**

69. Price undercutting has been calculated by the petitioner by comparing the landed price of imports (DGCI&S data) from the subject country with their net selling price. In view of significant difference in costs and prices for various PCNs, the price undercutting has been calculated PCN wise and weighted average is as below:

Import Volume	Domestic Selling Price	Landed Price	Price Undercutting		
MT	Rs/Kg	Rs/Kg	Rs/Kg	%	Range
9,371	***	564.28	(***)	(***)	Negative

70. It is seen that the price undercutting is negative. The petitioner has stated that they had to lower their domestic selling price to match the import price which is the reason for negative undercutting. This is further supported by the analysis of suppression and depression in the subsequent para.

**c) Price suppression and depression effects of the dumped imports**

71. The petitioner has given details of cost of sales and selling price and compared it with the landed value of imports to determine whether the dumped imports were suppressing or depressing the domestic prices as detailed below:

SN	Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
1	Cost of Sales	Rs/Kg	***	***	***	***
1a	Trend	Indexed	100	106	103	97
2	Selling price	Rs/Kg	***	***	***	***
2a	Trend	Indexed	100	100	88	81
3	Landed Value	Rs/Kg	657	705	625	564
<b>Changes over base year</b>						
4	Cost of Sales	Rs/Kg	-	***	***	(***)
5	Selling price	Rs/Kg	-	(***)	(***)	(***)
6	Landed Value	Rs/Kg	-	48	(32)	(93)

72. It is noted that cost of sales of the domestic industry is generally at the same level with a increase in 2015-16 on account of increase in raw material prices during that period and thereafter it declined. Whereas the selling price has not followed the same trend. It has declined much more compare to the cost of sales resulting in losses to the

domestic industry. The low selling price were in response to the lower landed value of imports from the subject country during the POI indicating that the imports are causing depressing effect to the prices of the domestic industry in the market.

**d) Price Underselling**

73. The Authority has also examined the price underselling suffered by the domestic industry on account of dumped imports from the subject country by comparing the landed value of imports with NIP of the domestic industry.

Import Volume	NIP	Landed Price	Price Underselling		
MT	Rs/Kg	Rs/Kg	Rs/Kg	%	Range
9,371	***	564.28	***	***	25-35

74. It is seen that the price underselling is positive and significant causing injury to the domestic industry.

**III. EXAMINATION OF ECONOMIC PARAMETERS RELATING TO DOMESTIC INDUSTRY**

75. Annexure II to the AD Rules requires that the determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to consequent impact of these imports on domestic producers of such products, the AD Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments. Accordingly, various economic parameters of the domestic industry are analyzed herein below.

**a) Capacity, Production, Capacity Utilization, Sales volume**

76. The performance of the domestic industry with regard to production, capacity, capacity utilization, sales is as follows:

SN	Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
1	Capacity – Plant	MT	***	***	***	***
1a	Trend	Indexed	100	100	106	126
2	Production – Plant	MT	***	***	***	***
2a	Trend	Indexed	100	102	104	126
3	Capacity Utilization - Plant	%	***	***	***	***
3a	Trend	Indexed	100	102	98	99
4	Production – PUC	MT	***	***	***	***
4a	Trend	Indexed	100	101	104	128
5	Sales					
5a	Domestic	MT	***	***	***	***
5a(i)	Trend	Indexed	100	72	87	104
5b	Export	MT	***	***	***	***
5b(i)	Trend	Indexed	100	57	135	234
5c	Captive consumption	MT	***	***	***	***
5c(i)	Trend	Indexed	100	129	128	150

77. It is seen that the Domestic industry has increased its installed capacities over the injury period but capacity utilisation has remained at the same level. The production has increased throughout the injury period. The domestic sales of the petitioner (excluding the captive sales) declined in 2015-16 and increased thereafter. The export sales have increased throughout the injury period and the captive consumption of the domestic industry has also shown improvements throughout the injury period and the POI.

**b) Market Share in demand**

78. The market share of the domestic industry (**including captive consumption by petitioner**) in Indian demand is as shown in the table below:

SN	Particulars	UOM	2014-15	2015-16	2016-17	POI
1	Share of petitioner	%	***	***	***	***
1a	trend	Indexed	100	82	122	125
2	Share of supporter	%	-	***	***	***
2a	trend	Indexed		100	315	252
3	Share of other Indian producers	%	2.55	2.28	3.07	1.59
4	Share of Subject Country- China	%	75.59	76.08	58.66	62.14
4a	Imports made by petitioner	%	***	***	***	***
4a(i)	Trend	Indexed	100	68	25	3
4b	Imports made by supporter	%	***	***	***	***
4b(i)	trend	Indexed	100	173	58	63
4c	Share of Imports from China made by Others	%	***	***	***	***
4c(i)	Trend	Indexed	100	107	121	147
5	Share of Other Countries	%	1.33	0.63	0.30	0.34
6	Total Demand including captive	%	100.00	100.00	100.00	100.00

79. It is seen that the market share of the domestic industry in total demand, including captive consumption by petitioner, has decreased during 2015-16 and thereafter increased over the injury period and POI. The market share of the supporters in total demand has increased over the injury period but declined during the POI. The share of other producers is very small during the injury period and POI. The share of imports from the subject country is significant during the entire injury period and the POI. The share of imports from other countries was insignificant during the entire injury period and POI.

**c) Inventories**

80. The level of inventory to be maintained as claimed by DI in regular course is of at least a month's productions. The average inventory level shown by DI are as below:

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
Average Stock	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	87	91	96

81. The level of actual inventory during the POI is not indicative of injury.

**d) Profit/loss, profit before interest, cash profit and return on investment**

82. Performance of the domestic industry with regard to profitability, PBIT, return on investment and cash profit is as follows:

SN	Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
1	Raw materials rate	Rs/Kg	***	***	***	***
1a	Trend	Indexed	100	108	99	93
2	Cost of Sales	Rs/Kg	***	***	***	***
2a	Trend	Indexed	100	106	103	96
3	Selling price	Rs/Kg	***	***	***	***
3a	Trend	Indexed	100	100	87	81
4	Raw material costs as % of selling price	%	***	***	***	***
4a	Trend	Indexed	100	81	96	130

5	Profit/(Loss)	Rs/Kg	***	***	(***)	(***)
5a	Trend	Indexed	100	58	(11)	(20)
6	Profit/Loss	Rs. Lacs	***	***	(***)	(***)
6a	Trend	Indexed	100	42	(10)	(20)
7	PBIT	Rs. Lacs	***	***	***	***
7a	Trend	Indexed	100	59	23	11
8	Cash Profit	Rs. Lacs	***	***	***	***
8a	Trend	Indexed	100	50	11	10
9	Return on Capital Employed	%	***	***	***	***
9a	Trend	Indexed	100	37	13	5

83. It is seen that:

- i. The cost of sales is almost at the same level during the entire period with a increase in 2015-16 on account of increase in raw material prices.
- ii. The selling price declined continuously over the entire period as compared to the base year with a steep fall in POI. The petitioner has stated that as a result of low landed value of imports, the domestic industry had to lower their selling price during the injury period.
- iii. The domestic industry was earning profits in 2014-15 which declined significantly in 2015-16 and thereafter the domestic industry started suffering financial losses. The profit before interest and taxes also declined significantly throughout the injury period. The cash profits also declined throughout the injury period. On overall basis, cash profits declined by \*\*\*% in POI as compared to the base year.
- iv. The return on capital employed has also shown significant decline throughout the injury period and POI.

**e) Productivity, employment and wages**

84. Performance of the domestic industry with regard to employment, wages, productivity and growth is as follows:

SN	Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
1	Productivity per day	MT/day	***	***	***	***
1a	Trend	Indexed	100	101	104	126
2	Productivity per employee	MT/Nos	***	***	***	***
2a	Trend	Indexed	100	98	107	125
3	Employment	Nos.	***	***	***	***
3a	Trend	Indexed	100	103	98	102
4	Salary & Wages	Rs. Lacs	***	***	***	***
4a	Trend	Indexed	100	112	129	158

85. It is seen that Productivity per day, Productivity per employee and wages paid has increased throughout the injury period. The employment level has marginally increased over the injury period but became almost same during the POI as that of the base year.

**f) Growth**

86. Growth of the domestic industry in terms of volume and price parameters, it is seen that the domestic industry has registered positive growth in respect of various volume parameters. However, price parameters have remained negative throughout the injury period and the POI.

**g) Ability to raise capital investments**

87. The Petitioner has stated that they have enhanced capacities and is able to utilize enhanced capacities. Their ability to raise capital investments is not impacted as Jay Shree Textiles is part of professionally managed industrial conglomerate.

**h) Factors affecting domestic prices**

88. Landed value of the imported material from subject country was significantly below the selling price and cost of production of the domestic industry in the period of investigation. It is stated by the DI that there is no viable substitute to this product. The petitioner has stated that there is no evidence of significant inter-se competition leading to the present price decline in the market. Thus, the only factor responsible for the domestic industry's prices is the import prices of the product.

**i) Magnitude of Injury and Injury Margin**

89. The PCN wise non-injurious price for the subject goods produced by the domestic industry as determined by the Authority in terms of Annexure III to the AD Rules has been compared with the landed value of the imports for each of the co-operative exporter from the subject country and the injury margin has been determined on weighted average basis. As for the residual category the NIP for calculation with the landed value (lowest of the co-operative exporter) is the weighted average NIP of the domestic industry.

SN	Producer/Exporter	Quantity	NIP	LV	Injury Margin		
		MT	US\$/MT	US\$/MT	US\$/MT	%	% Range
1	Zhejiang Kingdom Linen Co., Ltd/ Jiangsu Jinyuan Flax Co., Ltd/ M/s Zhejiang Jinyuan Flax Co., Ltd	***	***	***	***	***	25-35
2	Yixing Sunshine Linen Textile Co., Ltd	***	***	***	***	***	25-30
3	Zhejiang Axiang Flax Textile Co., Ltd./ Huzhou Axiang Import and Export Trading Co., Ltd.	***	***	***	***	***	30-40
4	Zhejiang Golden Eagle Co.Ltd/ Zhejiang Golden Eagle Spun Silk Co.Ltd /Zhejiang Golden Eagle Yili Linen Textile Co.,	***	***	***	***	***	25-35
5	Hangzhou Sanglu Silk Co. Ltd.	***	***	***	***	***	30-40
6	Great Eastern Textiles (Tongling) Co. Ltd./ Ningbo Win Way Trading Co. Ltd.	***	***	***	***	***	15-25
7	Changzhou Meiyuan Flax Textile Co., Ltd.	***	***	***	***	***	15-25
8	Tung Ga Linen & Cotton (Changzhou) Co., Ltd.	***	***	***	***	***	1-10
9	Any other than the producers at Sl. No. 1-8	***	***	***	***	***	75-85

**IV. OTHER KNOWN FACTORS & CAUSAL LINK**

90. Having examined the volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry, in terms of its price undercutting and price suppression and depression effects, other indicative parameters listed under AD Rules have been examined by the Authority to see whether any other factor, other than the dumped imports could have contributed to injury to the domestic industry, as follows

- a) **Volume and prices of imports from third countries:** The imports from countries other than the subject country are negligible in volumes and have further decreased over the injury period. Moreover, the third country imports were at a price higher than import price of the subject goods from China and hence are not a cause of the assessed injury to the domestic industry as may be seen in the table below:

SN	Particulars of Other Countries	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
1	Market Share of other countries in Indian demand	%	1.33	0.63	0.30	0.34
2	Import Volume from other countries	MT	209	111	39	52
3	Market Share of other countries in total Imports	%	1.73	0.82	0.51	0.55
4	Import Price- Other Countries	Rs/K	511.41	600.26	621.55	536.68

- b) **Changes in demand:** As noted above, the demand of the product concerned in India had declined in 2016-17 and increased thereafter in the POI following the trend globally. Even though there was a decline in demand in 2016-17, the same in absolute terms was still far higher than the capacities with the domestic industry. Decline in demand was not a cause of the claimed injury to the domestic industry.
- c) **Developments in technology:** Technology for production of the product concerned has not undergone any change. In fact, the petitioner and exporters use the same production technology. Thus, developments in technology cannot be regarded as a factor causing injury to the domestic injury.
- d) **Conditions of competition and trade restrictive practices:** There is no trade restrictive practice, which could have contributed to the injury to the Domestic Industry. The Authority notes that the subject goods are not subjected to any trade restrictive practices in India. Apart from the normal competition that is obvious in any market economy, no inter se competition or competition between supplies from various domestic and international sources exhibit any such impact that could be construed as injurious to the domestic industry.
- e) **Export performance of the domestic industry:** The Authority notes performance of the domestic industry has been segregated for domestic and export market. The information related to domestic market is only relevant for present purpose.
- f) **Performance of other products produced and sold by the domestic industry:** The information considered by the Authority is with respect to the product under consideration only.
- g) **Productivity of the domestic industry:** The productivity per day as well as per employee has increased throughout the injury period. Thus, possible decline in productivity is not a reason for the injury to the domestic industry.
91. It is thus seen that none of the other listed factors of injury are responsible for the injury to the domestic industry.
92. The Authority examined whether injury to the domestic industry is due to dumped imports. The following factors establishing causal link are relevant for the determination:
- Volume of imports has increased once again in the POI after declining till 2016-17;
  - There was a steep decline in the import prices. The decline in import prices led to significant price depression in the market..
  - The landed price of imports is significantly below the non-injurious price/fair price of the domestic industry and there is significant price underselling due to low priced dumped imports coming in India;

- iv. There has been deterioration in profits which resulted in financial losses in 2016-17 and POI, decline in cash profits and negative profit before interest and return on capital employed
- v. The domestic industry's profitability has been in negative since 2016-17, in spite of increase in its production and sales. Rather, profits declined after 2015-16 and the domestic industry started suffering financial losses from 2016-17. The cash profits have also declined significantly throughout the injury period to the extent that the same is not even \*\*\*% in the POI of what it was in the base year. Profit before interest and return on capital employed have also declined significantly throughout the injury period to the extent that the same are in negatives in the period of investigation. This is because of the subject imports being made at dumped prices.
- vi. The producers in subject country reduced their prices in order to retain their volume and market in the country. Resultantly, the domestic industry was forced to reduce the prices in order to sell its production.

#### **H. POST DISCLOSURE COMMENTS**

93. The post disclosure submissions have been received from the interested parties. The issues raised therein have already been raised earlier during the investigation and also addressed appropriately. However, for the sake of clarity the submissions by the interested parties are being examined as below:

#### **Views of the Domestic industry**

94. The Domestic Industry made the following submissions:
- i. Non-confidential version of the verification report of the exporters/producers from the subject country has not been made available to other interested parties through public file.
  - ii. The Authority may kindly disclose the actual dumping margin and the basis of export price adopted for the responding exporter and how the export price claimed by the exporter corroborates with the import data in India.
  - iii. The linen yarn whether made of 100% linen fiber or 95% linen fiber is still the product under consideration. While it is generally true that linen yarn is made out of linen fiber, however, in a situation where 5% of the fiber is not linen, the yarn is still linen yarn, even though it is not 100% linen yarn. There would practically be no difference in 100% linen yarn and 95% linen yarn. Also the Authority may kindly specify in duty table that the PUC should attract duty regardless of the customs classifications under which goods are being cleared by the importers.
  - iv. The responses of Chinese exporters and producers should not be accepted as they have failed to discharge their obligation by providing correct and certified information. They have conveniently omitted to provide any information as to the incentives in the form of incentive received by them by their respective governments which are amongst one of the major reason for low priced imports. They have also failed to disclose vital information, such as name of their related parties.
  - v. M/s Tung Ga has mentioned that it has no related companies dealing with the product concerned. However, as per the information available in public domain, it has one related company i.e. M/s Tongling Worldsum Linen & Kamie Textile Co., Ltd. (Linen Yarn L-36NM) which deals with Linen Yarn. It specializes in spinning, weaving, dyeing and finishing of varieties of linen products. M/s Tongling Worldsum has not participated in the present investigation. It is impossible to understand whether this company has exported the subject goods to India or not.
  - vi. M/s Tung Ga has extremely limited capacity for the PUC and therefore is not entitled for individual ADD. In a situation where the volume of exports made by a company is not significantly high, the rules clearly permit sampling, result of which is that such non sampled companies are awarded dumping margin and injury margin on the basis of weighted average of the sampled companies. In the instant case, few producers are commanding practically entirety of the exports to India. Such being the case, the dumping margin and injury margin can be



based on the weighted average of the large volume exports of the PUC to India. Unless a party has exported representative volumes, any dumping margin and injury margin determined would not be representative at all.

- vii. The dumping margin is not only positive but significant. Now when the import price has declined, where there are no imports of PUC by the petitioner from China after November, 2016. It is not a case where the petitioner bought the material at low prices and now complaining against dumping when the prices have increased. It is the reverse situation here.
- viii. The imports are undercutting the price of domestic industry in India and the effect of such dumped imports was to depress the domestic prices. The domestic industry has suffered price injury. Increase in capacities resulted in increase in production which should have resulted in increase in sales and resultantly, increase in profits. However, profit of the domestic industry declined.
- ix. The domestic industry has suffered significant financial losses as a result of dumping which gets further established if the degree of financial losses suffered by the domestic industry is considered and compared with the fresh investments made by the petitioner. So significant was the loss suffered by the domestic industry that its fresh investment would be written off in just 6.32 years, should the domestic industry continue to suffer the financial losses at the rate.
- x. The Domestic Industry is suffering material injury, as evidenced by the deteriorated performance in terms of profitability, cash profits and negative return on investments. The material injury suffered by domestic industry is due to dumping and not due to any other factors including other known factors mentioned in antidumping rules.
- xi. There exists a strong nexus between the increase in dumped imports of the subject goods and the material injury suffered by the domestic industry.
- xii. It is requested that the Authority to impose definitive measure as an ad valorem duty, to be worked out as a percentage of the CIF value of imports of the subject, given the fact that the Authority has considered a PCN system in the present investigation. There is a significant difference in the costs and prices of different PCNs. A definitive duty in terms of reference price or fixed duty would not be appropriate in this case.
- xiii. Petitioner had faced unexpected labor trouble and consequent production suspension for a limited period. While the petitioner faced no labor trouble for past about 2 decades, the present issue arose due to issues concerning labor wage settlement. The issues have however been resolved fully and an agreement has been signed for next five years. The company had recommenced production in the first week of Aug.
- xiv. Other Indian producers have been going on with their plans to set up or enhance capacities.
- xv. The downstream product, flax fabric (woven fabric having more than 50% flax content) is already well covered under anti-dumping duty on which duty has been in force since 17.2.2009 and reviewed in SSR during 2015 (@ 0.63 and 0.75 \$/Meter).
- xvi. Petitioner holds capacities far beyond its own captive requirements. Further, large investments, to the tune of Rs. \*\*\* crores, by various other producers has also been made in the Indian market where the production has already started with more quantities coming up soon hence there will be no shortage of availability of subject goods. This will take care of the prices of the goods in the domestic market by inter se competition amongst the various producers of the flax yarn.

#### **Views of the opposing interested parties**

95. The submissions of various interested parties are summarized as follows:

- i. 70 Lea Count is equivalent to 42 NM and not 43 NM.

- ii. The interested parties have not shown how they have distinguished and differentiated these yarns in their sales records and how the information can be verified. There exists 6%-23% price difference between first grade-long fiber made flax yarn and second grade-short fiber made flax yarn. The import data does not very precisely mention whether the yarn was made out of short fiber or long fiber in all imports.
- iii. Even though the dyed yarn is very limited, it shall not become the reason to not consider the natural /semi bleach (dyed) as a parameter of PCN, since this parameter affects the cost of production a lot.
- iv. The Petitioner does not qualify to be treated as domestic industry under Rule 2(b) of the AD Rules, as the Petitioner has been a regular importer of the subject goods throughout the injury period. The Petitioner and supporters have imported throughout the injury period. They have contributed to the alleged injury through such imports. They should not be allowed to take benefit of their contribution to the injury situation. The Petitioner to continue to import the subject goods from China PR for its own use even after imposition of anti-dumping duty.
- v. It is not appropriate to construct normal value or calculate non-injurious price by using consumption of different kinds of utilities since the cost of different utilities are different. The reasonable consumption of utilities shall be considered when calculating the cost of utilities. There is no indication to trace the source of data the Authority used for calculating the constructed normal value and non-injurious price.
- vi. To apply anti-dumping measures in this investigation will affect the long-term and overall interests of the Indian domestic industry and its downstream industries.
- vii. The DI is not able to service requirements for the coming season where a very high demand for flax yarn in India is expected. DI's capacity is less than half of the demand in India. M/s Raymond Luxury Cottons, M/s Kamarhati Jute Mills, M/s Bharat Vijay Mills are either in the process of beginning commercial production or have only recently begun manufacturing and are trying to stabilise the same. The new manufacturers have not given any assurance of stable supply of flax yarn for this year. In fact, no Indian manufacturer produces flax yarn of 55 lea count (33 NM) which is required.
- viii. Procurement contracts is signed with Chinese mills. If anti-dumping duty is given immediate effect, it will completely jeopardise commercial planning. The anti-dumping duty in the range of 30-40% will result in 15-20% increase in the price of flax fabrics, hence the customers will refuse to buy flax fabrics at such higher prices and result in huge loss.
- ix. The Petitioner and Supporters have not claimed that imports of the subject goods by them are not dumped. There is no legal basis for separating import information of the subject goods. Thus, when imports of the subject goods by the Petitioner and Supporters are also dumped, they have to be clubbed with imports by Others and only then imports of the subject goods should be examined.
- x. Significant losses have already been suffered due to the recent floods in Kerala. If the anti-dumping duty is made applicable in the middle of this season, it will spell doom for the user industry in India. It is requested that the Authority may defer issuance of the final findings till November 2018 so that users who have planned the production of flax fabrics for this season could operate smoothly.
- xi. Price underselling is not a criterion for establishing injury as per the Gujarat High Court judgment in *Nirma Limited v. Union of India*, Special Civil Applications No.16426/2016. The obligation on the Designated Authority is to establish both volume and price injury in terms of Rule 11(2) read with Annexure II to the AD Rules. A mere increase in the volume of imports and existence of price undercutting is therefore not sufficient to determine that the domestic industry is suffering injury. The complete analysis of the Petitioner's injury information indicates no material injury to the Petitioner.
- xii. Imports of the subject goods from China PR declined by 21% during the injury period in absolute terms. The decline in volume of imports could not have contributed to the alleged injury suffered by the domestic industry.

- xiii. Imports of the subject goods had no negative impact on the Petitioner's performance. ROCE declined during the injury period only because of capacity expansion by the Petitioner. The mere fact that the Petitioner managed to expand its sales in India despite the alleged price undercutting demonstrates the absence of injury.
- xiv. In declining demand, Petitioner gained market share while quantum of imports from China PR reduced leading to decline in their market share. This demonstrates strong position of the Petitioner in the Indian market. Petitioner's export performance also improved significantly during this time.
- xv. Intention to decrease import prices cannot be imputed on all the producers/exporters from China PR without any concrete evidence.
- xvi. The decline in selling price is in consonance of the decline in the prices of raw material flax fiber. The decline in landed value is commensurate to the decline in the raw material prices. Both the Petitioner and the exporters have benefitted with the decline in the raw material prices of flax fiber. The impact on the Petitioner's cost of sales is because of capacity expansion from 2016-17 onwards.
- xvii. The Petitioner had invested heavily in expanding its capacity from 2016-17 onwards, it takes time to break-even. No industry can expect to earn profits from an immediate expansion in capacity. Decline in profitability during 2016-17 and the POI directly coincides with sudden increase in installed capacity, net fixed assets, depreciation and interest cost during this period. Petitioner was in profits during 2014-15 and 2015-16 when imports of the subject goods were very high. Losses occurred when imports of the subject goods were lowest during 2016-17. This strongly indicates a break in the causal link.
- xviii. The Indian domestic industry has not produced enough quantity to serve the total demand of the subject goods in Indian market. Thus, downstream users are tending to import the same from other countries. If the imported product concerned were suddenly blocked from the Indian market because of heavy anti-dumping duty, Indian downstream industry will inevitably suffer from negative influence such as insufficient supply, much higher purchase price and lower profits or suffering loss.

#### **Examination by the Authority**

- 96. It is noted that the issues raised at post disclosure stage have already been examined by the Authority in above relevant paragraphs, however for the sake of the clarity, they are reiterated as below:
  - i. As regards the qualification of petitioner to be treated as domestic industry under Rule 2(b), it is noted that the Authority had dealt this issue in detail in the above relevant paragraph.
  - ii. As regards the PCN, it is noted that the Authority has classified the PUC after taking into consideration all the relevant parameters duly notified in advance and having regard to the facts and circumstances of the present case.
  - iii. The calculation error in the working of an exporter was pointed and after due examination the Authority has rectified it.
  - iv. As regards the objection against an exporter, the submissions were re-examined and found that the Authority has rightly given them individual duty margin.
  - v. As regards the service requirement with respect to high demand of flax yarn in the coming season, it is noted that the purpose of ADD is not to restrict the imports, but to give domestic industry and the exporters a level playing field.
  - vi. As regards Procurement contracts signed with Chinese mills, it is noted that the anti dumping duty is levied

against the unfair trade practice and not to jeopardise commercial planning.

## **I. CONCLUSIONS**

97. After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts made available before the Authority as recorded in this finding, the Authority concludes that:

- i. The product under consideration has been exported to India from the subject country below its normal value, resulting in dumping.
- ii. The Domestic Industry has suffered material injury due to dumping of the product under consideration from the subject country.
- iii. The material injury has been caused by the dumped imports from the subject country.

## **J. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES:**

98. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the Country. It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the downstream products and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the antidumping measures, particularly if the levy of the anti- dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the Domestic Industry. On the contrary, imposition of antidumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the Domestic Industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers

## **K. RECOMMENDATIONS**

99. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspect of dumping, injury and causal links. Having initiated and conducted the investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules and having established positive dumping margins as well as material injury to the Domestic Industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of antidumping duty is required to offset dumping and injury. Therefore, the Authority considers it necessary to recommend imposition of definitive anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject country for 5 years in the form and manner described hereunder.

100. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of Definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, definitive antidumping duty equal to the amount indicated in Col 7 of the duty table below is recommended to be imposed for 5 years on all imports of the subject goods originating in or exported from the subject country.

**Duty Table**

SN	Sub Heading or Tariff Item*	Description of Goods	Country of Origin or export	Producer	Exporter	Duty Amount USD/KG
1	2	3	4	5	6	7
1.	530610 and 530620	Flax Yarn of below 70 Lea Count (or below 42 Nm)	China PR	Zhejiang Kingdom Linen Co., Ltd / Jiangsu Jinyuan Flax Co., Ltd / Zhejiang Jinyuan Flax Co., Ltd	Jiangsu Jinyuan Flax Co., Ltd / Zhejiang Jinyuan Flax Co., Ltd	2.42
2.			China PR	Yixing Sunshine Linen	Yixing Sunshine Linen	2.29

				Textile Co., Ltd	Textile Co., Ltd	
3.			China PR	Zhejiang Axiang Flax Textile Co., Ltd.	Huzhou Axiang Import and Export Trading Co., Ltd.	2.77
4.			China PR	Zhejiang Golden Eagle Co.Ltd / Zhejiang Golden Eagle Yili Linen Textile Co., Ltd	Zhejiang Golden Eagle Co.,Ltd / Zhejiang Golden Eagle Spun Silk Co.Ltd	2.02
5.			China PR	Hangzhou Sanglu Silk Co., Ltd.	Hangzhou Sanglu Silk Co., Ltd.	2.71
6.			China PR	Great Eastern Textiles (Tongling) Co., Ltd.	Ningbo Win Way Co., Ltd.	1.30
7.			China PR	Changzhou Meiyuan Flax Textile Co., Ltd.	Changzhou Meiyuan Flax Textile Co., Ltd.	2.06
8.			China PR	Tung Ga Linen & Cotton (Changzhou) Co., Ltd.	Tung Ga Linen & Cotton (Changzhou) Co., Ltd.	0.50
9.			China PR	Any other than the producers at Sl. No. 1-8	Any other than the exporters at Sl. No. 1-8	4.83

\* Custom classification is only indicative and the determination of the duty shall be made as per the description of PUC. The PUC mentioned above should be subject to above ADD even when it is imported under any other HS code.

101. The duty rates as recommended above are applicable for exports by specified producer and exporter mentioned therein. The Customs should verify the name of the producer at the time of clearance of subject goods.
102. The landed value of imports for this purpose shall be the assessable value as determined by the customs under Customs Tariff Act, 1962 and applicable level of custom duties except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9, 9A of the Customs Tariff Act, 1975.
103. The applicant domestic industry is required to inform the Authority regarding any change in constitution/ ownership of the manufacturing facility, along with relevant documents substantiating the said change, for the subject goods against which Anti Dumping Measures are being recommended. The information should reach the Authority within 60 days of the said change, if any.
104. An appeal against the order of the Central Government arising out of this final finding shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

SUNIL KUMAR, Addl. Secy. & Director General